राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

तेलुगु की
अुत्कृष्ट कहानियाँ

अनुवादक

श्री बालशौरि रेड्डी

"भारत सरकार की ओर से भेंट"

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिन्दीनगर, वर्धा

प्रकाशककी ओरसे

हिन्दीके राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन हो जानेके बाद अब यह आवश्यक हो गया है कि देशके हिन्दीतर भाषी साहित्यके अुत्तमोत्तम ग्रन्थोंको अनूदित कराकर हिन्दी भाषी जनताके सामने रखा जाअे। अिसी दृष्टिकोणसे समितिने वर्षों पहले अेक 'साहित्य-निर्माण योजना' बनाअी थी।

यद्यपि अुक्त योजनाका कार्य कागज-प्राप्तिकी कठिनाअी तथा अन्य कअी अनिवार्य कारणोंसे जितनी शीघ्र गतिसे आगे बढ़ना चाहिअे था, अुतनी तेजीसे नहीं बढ़ पाया; फिर भी अिस दिशामें अिस वर्ष कुछ काम हुआ है। यह हर्षकी बात है कि प्रस्तुत पुस्तकका प्रकाशन भी 'साहित्य-निर्माण योजना' के अन्तर्गत ही हो रहा है।

प्रस्तुत संग्रहमें तेलुगुके अुत्कृष्ट लेखकोंकी सत्रह कहानियोंके अनुवाद संग्रहीत हैं। संग्रहमें संग्रहीत कहानियोंका अनुवाद श्री बालशौरिजी रेड्डीने किया है। अनुवादकी भाषा, सरल, सुबोध, प्रवाहमयी तथा रोचक है।

हमारा विश्वास है कि तेलुगुकी चुनी हुअी कहानीयोंका प्रस्तुत अनुवाद राष्ट्रभाषा प्रेमियों द्वारा समादृत होगा।

मंत्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

समितिकी 'साहित्य-निर्माण-योजना'

राष्ट्रभाषा-प्रचारके लिअे अुपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने तथा ज्ञान-वर्धक, अुच्च कोटिके ग्रन्थोंके निर्माण करनेके अुद्देश्यसे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने वर्षों पहले 'साहित्य निर्माण योजना' बनाअी थी।

हम स्वीकार करते हैं कि अिस योजनाके अनुसार जितना कार्य अब तक होना चाहिअे था, अनेक कठिनाअियोंके कारण वह हो नहीं सका है; फिर भी समिति निम्नलिखित पुस्तकें प्रस्तुत कर चुकी है। हमें प्रसन्नता है कि अिन सभी पुस्तकोंका जनताने स्वागत और सत्कार किया है।

प्रकाशित पुस्तकें :—संक्षिप्त राष्ट्रभाषा कोश, फ्रेंच स्वयं-शिक्षक, भारतीय वाङ्मय भाग १, २, ३, मराठीका वर्णनात्मक व्याकरण, सोरठ तेरा बहता पानी (गुजराती अुपन्यास), धरतीकी ओर (कन्नड़ अुपन्यास), लोकमान्य तिलक (जीवनी-ग्रन्थ), मिर्जा गालिब : जीवनी और साहित्य, धूमरेखा अेवं तेलुगुकी अुत्कृष्ट कहानियाँ।

भारतके विभिन्न प्रदेशोंके निवासी देवनागरी लिपिके माध्यमसे भारत-की प्रादेशिक भाषाअें आसानीसे सीख सकें, अिस अुद्देश्यसे समितिने 'भारत-भारती' मालाका प्रकाशन आरम्भ किया है। अिस मालाके अन्तर्गत अबतक नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :—

'भारत भारती'—तमिल, तेलुगु, कन्नड़, गुजराती, मराठी, अुड़िया और असमिया।

शेष भाषाओंकी पुस्तकें भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

रजत जयन्तीके अवसरपर 'रजत जयन्ती ग्रन्थ' के अलावा 'कविश्री माला' के अन्तर्गत २५ विभिन्न भाषा-भाषी कवियोंकी रचनाओंको मूल भाषा तथा हिन्दी अनुवादके साथ प्रकाशित करनेका विचार भी किया गया है।

आशा है, राष्ट्रभाषा-प्रेमी समितिकी अिस व्यापक योजनासे लाभ अुठाअेंगे।

* * * *

अनुवादककी ओरसे

बहुत दिनोंसे मेरी अिच्छा थी कि तेलुगुकी अुत्तम कहानियोंका अेक संग्रह हिन्दीमें प्रकाशित हो और तेलुगु कहानीकी विशेषताओंका परिचय हिन्दी पाठकोंको कराया जाअे। अिसी अुद्देश्यसे मैंने समय-समयपर कुछ अुत्तम कहानियोंका हिन्दीमें अनुवाद किया। अिस कार्यमें मुझे प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादकोंने काफी प्रोत्साहन दिया। अुन सम्पादकोंने स्वयं पत्र लिखकर विशेषांक अेवं साधारण अंकोंके लिअे भी मुझसे तेलुगुकी हिन्दीमें अनूदित रचनाअें माँगी। मैंने सहर्ष समयपर रूपान्तर करके अुन्हें दे दिया! अिस संग्रहकी कहानियोंमें 'चामर-ग्राहिणी' और 'हिमालय किरण' (राष्ट्रभारतीमें) 'प्रणय-कलह' (दैनिक आजके होली-विशेषांकमें) 'ममता' और 'मृगजल' (प्रतिभामें) 'नौका-यात्रा' ('कहानी'-विशेषांकमें) 'सपनेकी सचाअी' (अजन्तामें) 'हवाकी मछलियाँ' ('प्रवाह' के विशेषांकमें) तथा 'अतृप्त कामना' (विश्व-ज्योतिमें) प्रकाशित हो चुकी हैं। अिन पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादकोंके प्रति मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

अिस संग्रहकी तैयारीमें मुझे विशेष रूपसे श्री 'श्रीवात्सवजी' की सहायता मिली है। कहानियोंके चयन व कहानीकारोंके परिचय लिखनेमें अुनकी अच्छी मदद मिली है। दैनिक आन्ध्र प्रभा' के सम्पादक श्री नार्ल वेंकटेश्वर रावजीके प्रोत्साहनको भी मैं भूल नहीं सकता।

अन्तमें मैं अुन समस्त तेलुगु लेखकोंका हृदयसे आभारी हूँ जिन्होंने अिस संग्रहमें अपनी कहानियोंको प्रकाशित करनेकी अनुमति प्रदान की है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका प्रोत्साहन न होता तो यह संग्रह पाठकोंके समक्ष आया ही न होता। अिस कार्यको समितिने अपने हाथमें लिया है। अतः मैं समितिका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ!

मेरी प्रथम रचना 'पंचामृत' का हिन्दी जगतने आदर किया और केन्द्रीय सरकारने २०००) रुपयोंका तथा अुत्तर प्रदेश-सरकारने ३००) का पुरस्कार देकर मेरे अुत्साहको और भी बढ़ाया है। अतः हिन्दी जगतके कृपालु पाठकों तथा अिन दोनों सरकारोंका भी मैं आभारी हूँ। यदि अिन सबका प्रोत्साहन अेवं अुत्साह नहीं मिलता, तो शायद ही यह संग्रह पाठकोंके सम्मुख आता!

वाविवेलुपुरम्
मद्रास–१७

—बालशौरि रेड्डी

तेलुगु कहानीका परिचय

'अेक राजा था।' कहते हुअे किसी भी कहानीको दादी-नानीके शुरू करते ही बच्चोंका कुतूहल बढ़ जाता है। वे प्रश्नपर प्रश्न पूछने लगते हैं—'हूँ, राजाने क्या किया? कैसे थे? कहाँ-कहाँ गअे? अुन्होंने क्या किया?' अित्यादि! अिससे आगेकी कहानीको जाननेकी जिज्ञासा बढ़ती है। कहानीकी आगेकी घटनाओंको जाननेकी अुत्कण्ठाको बनाअे रखनेके लिअे ही अनेक कहानियोंका आविर्भाव हुआ। विश्व-कथा-साहित्यके आधार-भूत 'पंचतन्त्र', 'जातक-कथाअें', 'बृहत कथा-मंजरी' की कथाअें प्रथम भारतीय वाङमयसे ही विश्वकी अन्य भाषाओंमें परिवर्तित होकर पुनः भारतीय भाषाओंमें प्रचार पा गअी हैं। भारतीय कथा-साहित्यकी पर्यालोचना करनेपर अिस बातकी पुष्टि हो जाती है कि कथा-साहित्य हमारे लिअे नया नहीं है। लेकिन हम आज जिस छोटी कहानीका अुल्लेख करते हैं, अुसका रूप हमें अँग्रेजी भाषाके प्रभावसे अुपलब्ध रूप ही कहना होगा। अिसके सम्बन्धमें भी हमारे गण्यमन्य पंडित यह निरूपण कर रहे हैं कि 'कथानिका' के लक्षण अग्निपुराणमें बताअे गअे हैं। किन्तु हमें यह अवश्य मानना पड़ेगा कि आजकी छोटी कहानी विदेशी भाषाओंसे ग्रहण की हुअी अेक साहित्य-प्रक्रिया है।

यूरोपकी भाषाओंमें 'छोटी कहानी' अनेक लेखकोंकी कुशलताके द्वारा नअे स्वरूपको प्राप्त कर चुकी है। भाषा तथा देशके भेदोंको दूरकर आज विश्व-साहित्यमें विभिन्न भाषा-भाषियोंको अेक सूत्रमें पिरो देनेके साधनके रूपमें परिणत हुअी है।

भारतीय भाषाओंमें छोटी कहानी अिस शताब्दिके प्रथम पादसे अुन्नति करने लगी है। प्राचीन कालकी कहानियाँ पद्य अथवा गद्यमें भी अेक कृत्रिम भाषा तथा अेक लौह चौखटेमें कसी गअी थीं। अुन सब बन्धनोंको तोड़कर

जनताकी भाषामें—सबकी समझमें आनेवाली पद्धतिमें भारतीय भाषाओंमें छोटी कहानीकी रचना प्रारम्भ करनेवालोंमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अुपन्यास-सम्राट प्रेमचन्द, युग-प्रवर्तक श्री गुरजाड अप्पाराव जैसे लोग है। अुनकी साधनाके कारण ही साहित्यमे छोटी कहानीको अेक विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। तेलुगुमे प्रथम छोटी कहानीको तराशकर पाठकोंके सामने रखनेवाले स्व. गुरजाड अप्पारावजी थे। ये तेलुगु साहित्यके कअी क्षेत्रोंमें क्रान्ति लानेवाले युग-प्रवर्तक थे। 'छोटी कहानी' द्वारा आन्ध्रवासियोंके आचार-व्यवहारोंमे वे सुधार करना चाहते थे और यही कारण है कि आपने कहानियों द्वारा समाजमे जागृति लानेका प्रयत्न किया। अिसका अभिप्राय यह नही कि आपने तोता-मैनाके किस्सेकी भाँति अपनी कहानियोंमें नीति अेवं अेकमात्र अुपदेश दिया है! 'छोटी कहानी' की परिभाषाके अनुकूल आवश्यक लक्षणोंको ध्यानमें रखकर सुन्दर शिल्पपूर्ण कहानियोंकी रचना की। प्रस्तुत संग्रहकी आपकी 'सुधार' नामक कहानी अेक अैसी ही कहानी है। अिस कहानीका नाम 'दिद्दु बाट् (सुधार) है! अिस कहानीको पढ़ जानेपर लेखकके शिल्प और अुनकी रचना-रीतिको भली-भाँति जाना जा सकता है।

तेलुगु साहित्यके पुनरुज्जीवनके आन्दोलनके समय प्राचीन सम्प्रदायोंके कवियों और लेखकोंने अिस आन्दोलनका विरोध किया था। अिस आन्दोलनको बल प्रदान करनेके लिअे शक्तिशाली साधनके रूपमें 'साहित्य समिति' नामक लेखकोंकी अेक संस्था सन १९२० मे स्थापित हुअी थी। आजके प्राय. अनेक प्रसिद्ध कवि, कहानीकार, नाटककार, तथा अन्य कलाकार अिस संस्थाके सदस्य हैं। अिस संस्थाकी तरफसे 'सखी' और 'साहिती' नामक दो साहित्यिक पत्रिकाओंका प्रकाशन हुआ। अिन पत्रिकाओंमे कअी अत्युत्तम कहानियाँ प्रकाशित हुअी। 'साहित्य समिति' के सभापति श्री शिवशंकर शास्त्री तथा सदस्योंमे श्री विश्वनाथ सत्यनारायण, चिता दीक्षितुलु, मोक्कपाटि नरसिह शास्त्री, वेदुल सत्यनारायण शास्त्री अित्यादि कअी लेखक 'छोटी कहानी'की रचनामे सिद्धहस्त है। अिनमेसे तीन लेखकोंकी रचनाअें अिस सग्रहमे दी गअी हैं। मानव-जीवनकी विभिन्न घटनाओंको अपने दृष्टिकोणके अनुसार चित्रित करनेका अिन लेखकोंने प्रयत्न किया है। अिस सस्थाके

बाहर रहकर भी छोटी कहानीकी रचनामे क्रॉति लानेवाले श्री गुडिपाटि वेंकटचलम हैं। आपने आधुनिक सामाजिक जीवनकी गंदगीका निर्मूलन (प्रक्षालन) करनेका बीड़ा अुठाया और अुसका सामना करनेके लिअे अपनी कहानियोंमे योग्य पात्रोकी सृष्टि की। शरद्चन्द्रकी भॉति आपने भी पतित नारियोके जीवनके प्रति सहानुभूति प्रकट की है ! परन्तु चलमके पात्र शरद्के पात्रोंकी तरह सामाजिक दुर्बलताओंके सामने सर नहीं झुकाते ! सामाजिक रीति-नीति, नियम-वन्धन तथा पाप-पुण्योसे आपके पात्र भय नही खाते; बल्कि स्वतन्त्रतापूर्वक विवाह-बन्धन और आचार-व्यवहारोंकी प्रचलित परम्पराओंको बन्धन न मानते हुअे सैलानी प्रेमका प्रतिपादन करते है, तथा समाजकी और सामाजिक नियमोकी अवहेलना करते है। लगता अैसा है कि लेखक स्वयं भी अैसा ही स्वच्छंद जीवन विताना पसन्द करता है और यही कारण है कि अुसका भी अपना जीवन समाजसे दूर हो गया है; लेखक तिरुवन्नमलै मे सब कुछ त्यागकर तपस्या कर रहे हैं। मानवके कामोद्रेक अेवं शारिरिक सुखोको अुत्तेजित करनेवाली अिनकी रचनाओंको पसन्द करनेवाले जितने पाठक है, अुसी अनुपातमे अुनका विरोध करतेवाले पाठक भी है। अिस लेखककी विचारधारा अेवं प्रतिभासे प्रभावित होकर अनेक युवा लेखक अिस दिशामे अग्रसर हुअे। अुनमे श्री कोडवटिगंटि कुटुंबराव, श्री टी. गोपीचन्द, श्री बुच्चि बाबू अित्यादि मुख्य हैं। अिन सबने प्रेम-प्रधान कहानियोंकी रचना की है। यद्यपि अुनमें अिन लोगोंने स्त्री-पुरुषके रूपाकर्षणकी प्रवृत्तिको प्रधानता दी है; लेकिन अुसके 'सेक्सुअल' तत्वको प्रधानता देते हुअे अुसके मानसिक तत्वके परिशीलनकी दृष्टिसे अिन लोगोंने कहानियॉ लिखी है और सबने अपनी प्रत्येक विशिष्टताका परिचय दिया है। अेक विशिष्ट प्रकारके मानसिक विश्लेषणको अपनी कहानियोमे स्वरूप प्रदान किया है। अिस प्रकारकी रचनाओंमे प्रमुख स्थान युवक कहानीकार श्री पद्मराजुको दिया जा सकता है। अिनकी 'गालिवान' (तूफान) नामक कहानीको विश्व-कहानी प्रति-योगितामे पुरस्कार प्राप्त हुआ है। अिनकी कहानियोमे हमे अेक विशिष्ट प्रकारके शिल्पका परिचय मिलता है। ये परिस्थितियोके प्रभावमे परिवर्तित होनेवाले मानवके चरित्र "व्यवहारिकता" की रीतिका सुन्दर चित्रण करते है। समाजके दलित-पीड़ित पात्रोंका अिनकी कहानियोंमे चित्रण होनेपर

भी वे नीच प्रतीत नहीं होते ! अिनकी कलमके अिन्द्रजाल द्वारा नीच जातिकी नारियाँ भी देव-कन्याअें बन जाती है। वे पात्र भी हमें कोअी दिव्य सन्देश प्रदान करते है और स्थाअी रूपसे हमारे हृदयोंमे स्थान बना लेते हैं। कहानीमें सुन्दर वातावरणकी सृष्टि करनेमें ये अत्यन्त कुशल हैं। अिनकी 'पडव-प्रयाणं' (नौका-यात्रा) नामक कहानी विदेशी भाषाओंमें रूपांतरित हो गअी है।

अन्य भारतीय भाषाओंकी भाँति तेलुगुमें भी प्रथम विश्व-संग्रामके अुपरान्त ही छोटी कहानीका विशेष प्रचार होने लगा। हजारोंकी संख्यामें बिकनेवाले पत्र-पत्रिकाओंमें छोटी-कहानियाँ छप रही हैं। आज तो प्रत्येक सप्ताहमें ५०, ६० कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें छप रही हैं। प्रत्येक सप्ताह लाखों पाठक अुन कहानियोंको पढ़ते हैं। अिनके अतिरिक्त संग्रहोंके रूपमें पुस्तकें भी छप रही हैं। अिन सबको हम अुत्तम कहानियाँ नहीं कह सकते। अपने समयके जीवनको प्रतिबिम्बित करनेवाली अनेक कहानियोंका प्रकाशित होना तो सत्य है ! अतः अिनके आधारपर हम आजके नवयुवकोंके हृदयोंमे अुत्पन्न होनेवाले आशय अेवं अभिप्रायोंसे परिचित हो सकते हैं। राजनीतिक समस्याअे 'वर्ग-भेद'—अमीर-गरीबका भेदभाव, आर्थिक अेवं सामाजिक परिस्थितियाँ—ये सब आजकी कहानियोंकी कथावस्तुअें हैं। यथार्थ जीवनका चित्रण होनेपर तत्सम्बन्धी गुण-दोषोंका निर्णय विज्ञ पाठकोंपर छोड़ दिया जा सकता है।

आसेतु हिमाचल पर्यन्त व्याप्त अिस विशाल भारत भूमिमे किस कोनेके गाँवमे कौन-सा सौन्दर्य विद्यमान है, किस पर्वतके शिखरसे झरनेवाले झरनेमें कौन-सा मधुर गान सुनाअी दे रहा है, किस धानके खेतके पौधोंमें कौन-सी संपदा नृत्य कर रही है, किस गरीबके स्वेद जलमे कैसा खारापन निहित है, अिन सबका हमारी ज्ञानेन्द्रिय देख, सुन, स्पर्शकर, गन्ध अथवा रुचि देखकर अनुभव करनेको अुद्विग्न हैं। काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारी तक, काठियावाड़से कामरूप तक भारतीय आत्माका अेक ही शरीर और अेक ही स्वरूप है ! हमें यह देखना होगा कि अिस विश्व-रूपके संदर्शनके लिअे हमारे लेखक कैसा योगदान दे रहे है ! हम चाहे पंजाबी हों, चाहे आन्ध्रावासी हों, अुर्दू बोलते

हों अथवा मलयालम, चाहे रोटी खाते हो या चावल——सबकी आशा अेवं संस्कृति अेक है ! असलिअे कोअी भी लेखक किसी भी भाषामें चाहे जिस किसी भी पद्धतिमे अपनी भावनाओ द्वारा भारतीय हृदयको स्पन्दितकर सके तो हम अुसका आदर करते हैं, अच्छाओको ग्रहण करते है। अिस संग्रहकी कहानियोंमे तेलुगुपनका निरूपणकर आन्ध्र देशकी खूबियों, आचार-व्यवहारों तथा सम्प्रदायोंका चित्रण हुआ है। लेकिन समस्त भारतके दृष्टि-कोणका विस्मरण करके नही ! समस्त भारतको स्पन्दित कर हिलानेवाले आन्दोलनोंका प्रभाव आन्ध्र और तेलुगु भाषापर भी पड़ा है। राष्ट्रीय भावनाओ तथा मार्क्सके सिद्धान्तोका भी तेलुगु–लेखकोंने अपनी कहानियोंमें विशेष प्रचार किया है। विश्वासके साथ अुनका प्रतिपादन भी किया है ! लेकिन जब लेखकने कहानियोंको केवल अपनी भावनाओके प्रचारका साधन मात्र बनाता है, तब पाठकोंमे जुगुप्सा पैदा होती है। आजके लेखकोंमें यह बात देखी जाती है, अैसी रचनाओंको अिस संग्रहमे स्थान नही दिया गया है।

आज आन्ध्रमे असंख्य कहानीकार है। अुन सबकी रचनाओंको अिस संग्रहमें स्थान देना सम्भव नही है। अिस सग्रहमें कअी अच्छे कहानीकारोंकी भी रचनाअे नही दे पाअे, अिस बातका हमे दुख है। लेकिन जहाँतक हो सका, विभिन्न प्रकारकी सुन्दर रचनाओको नमूनेके तौरपर अिस संग्रहमे देनेका प्रयत्न किया गया है। अब भी ३०, ४० अुत्तम कहानीकारोंकी रचनाअें नही आ सकी, जिनकी कहानियोके कारण तेलुगु कहानी साहित्य समृद्ध कहा जा सकता है। आशा है कि अुनकी रचनाओंका हिन्दी पाठकोको परिचय करानेका सद्‌वकाश पुनः प्राप्त हो जाअेगा। तब तक अिन कहानियोंके गुण-दोषोंकी आलोचना न करके अुनके गुण और अवगुणोके निर्णयका भार हम कृपालु पाठकोंपर छोड़ देते है।

प्रस्तुत संग्रहकी कहानियाँ यदि तेलुगु भाषामे अभिव्यक्त विचारोंकी समृद्धि, आन्ध्र प्रान्तकी सांस्कृतिक परम्पराकी झाँकी दिखानेमें कुछ भी सहायक हो सकी, तो अिस संग्रहके प्रकाशनका अुद्देश्य सफल कहा जाअेगा।

अनुक्रमणिका

१.

चामर-ग्राहिणी

—श्री विश्वनाथ सत्यनारायण

आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। आप अेक साथ कवि, कहानीकार, नाटककार, समालोचक, पंडित, गुरु तथा सौसे अधिक ग्रन्थोंके लेखक हैं। प्राचीन संप्रदायोंमें आपका विकास हुआ, फिर भी आप वर्तमान युगके प्रभावसे अलग रहे। आप प्राचीन संस्कृतिके चिह्न—वर्णाश्रम, धर्म, गुरुभक्ति तथा अन्य प्राचीन संप्रदायोंका प्रतिपादन करनेवाले कलाकार हैं। अपने सिद्धान्तों और विश्वासोंको निर्भयताके साथ पाठकोंके सामने रखकर अुसमें सफलता और यश प्राप्त करनेवाले बुद्धिमान् हैं। आपने राष्ट्रीय आन्दोलनमें भाग लेकर कारावासकी सजा भोगी है, अतः राष्ट्र-सेवक भी हैं। आपके "वेयिपडगलु" नामक बृहत् अुपन्यासको आन्ध्र विश्वविद्यालयसे पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपके अन्य प्रसिद्ध अुपन्यासोंमें "अेकवीर", "जेबु दोंगलु", "चेलियलिकट्ट", "स्वर्गानिक निच्चेनलु", "हाहा हूहू" अित्यादि हैं। आपने कअी छोटी कहानियाँ भी लिखी हैं। "आन्ध्र प्रशस्ति" "ऋतुसंहारमु", "कोकिलम्म पेंड्लि", "किन्नेरसानि पाटलु", "रामायण कल्पतरु" अिनके काव्य-ग्रन्थ हैं। आपने नाटक भी लिखकर अपार यश प्राप्त किया है। आन्ध्रवासियोंने "कवि-सम्राट्" नामक अुपाधि देकर आपका अुचित ही सम्मान किया है।

* * *

चामर-ग्राहिणी

शालिवाहन शकका १०२ वाँ वर्ष। रोम नगरमें अुस दिन अेक महलके सामने लोगोंकी बड़ी भीड़ जमा थी। अुस अुत्सवका कारण हेलीना नामक अेक रूपवतीका दो मास पर्यंत जनशून्य बड़े-बड़े मरुस्थलोंको पार करते हुअे यात्रा समाप्तकर रोम नगरमें प्रवेश करना था। वह चार वर्ष पूर्व आँध्र-चक्रवर्ती गौतमी-पुत्र श्री शातकर्णीके यहाँ चामरग्राहिणी बनकर गअी थी। अुसके वापस लौटकर आनेके अुपलक्ष्यमें ही अिस अुत्सवका आयोजन था।

जब वह चार वर्ष पूर्व आन्ध्र देशमें गअी थी, अुस समय रोम नगरमें अेक शानदार जलसा मनाया गया था और अुसे सम्मानित करके बिदा किया गया था। साधारणतः जो सुन्दरियाँ चामर-ग्राहिणी बनकर जाती हैं, वे १५ वर्ष पर्यंत नहीं लौटतीं। परन्तु हेलीना चार ही वर्षोंमें वापस लौट आअी है। वह अितने अल्प समयमें क्यों वापस आ गअी, किसीको पता नहीं, पर अुतने दूर देशसे आअी हुअी महिला द्वारा भारत और आन्ध्र देशके समाचार जाननेकी अुत्कट अभिलाषासे ही जनता अुसके घरपर अेकत्रित हुअी थी। वह बड़ी धनी होगी। आन्ध्र देशसे मोती, हीरे-जवाहरात, रेशमी वस्त्र, दन्त-सामग्री, कस्तूरी, अिलायची, लवंग अित्यादि अपूर्व द्रव्य अपने साथ लाअी होगी। अिन अपूर्व द्रव्योंको आन्ध्रके व्यापारी सालमें अेक बार लाकर रोममें बेचा करते हैं। अुनका मूल्य अधिक होनेके

कारण बड़े-बड़े रअीस और श्रीमन्त ही अुन्हें खरीदा करते हैं। साधारण प्रजाने अुन्हें देखातक नही। लौग और अिलायचीके स्वादसे भी वहाँके अधिकांश लोग अपरिचित हैं। जायपत्री और लौगके सेवनसे जिह्वामें होनेवाली रसास्वादकी अनुभूतिका अुन्हें अनुभव नही। अिस स्वादका परिचय देनेवाला शब्द भी अुनकी भाषामें नही है। अिसलिअे जनता अुसके स्वाद और सुगंधिसे भी अपरिचित हैं।

हेलीना साधारण परिवारकी लड़की है। अुसे गुदडीमें प्राप्त माणिक कह सकते हैं। रोम नगरके कअी धनिकोंने अुसे पाना चाहा ; लेकिन चार वर्ष पूर्व आन्ध्र-चक्रवर्तीके अधिकारी चामर-ग्राहिणियोंकी खोजमे आअे थे। साधारणतः चामर-ग्राहिणियोंके चुनावमे जमीदारों तथा राजवंशीय पुत्रियोंको ही प्रधानता दी जाती है। पर हेलीना साधारण परिवारकी कन्या होनेपर भी अपूर्व सौन्दर्यवती होनेके कारण तथा अधिकांश लोगोंकी सिफारिशपर आन्ध्र-साम्राज्यके अधिकारियोंने अुसे ले जाना अंगीकार किया था। किन्तु अुन लोगोंने अेक शर्त रखी थी। वह यह थी कि यदि चक्रवर्ती हेलीनाको राज-वंशिनी न होनेके कारण स्वीकार करनेसे अिन्कार करे तो दूसरे वर्ष ही अुसे व्यापारियोंके काफिलेके साथ वापस भेज दिया जाअेगा। ये व्यापारी-जत्थे आन्ध्र देशसे सालमे अेक बार रोम जाया करते थे।

आन्ध्र-चक्रवर्ती अेक चामर-ग्राहिणीको स्वीकार करनेपर अुसके परिवारको २० मन हीरे-जवाहरात तथा मोती दिया करते थे। शेष ४० मन सुगंधि द्रव्य दिया करते थे। वह साधारणतः १५ वर्ष चक्रवर्तीकी चामर-ग्राहिणी बनकर रहा करती थी। चक्रवर्तीके स्वीकार करते समय अुसकी अुम्र १६ वर्षसे अधिक नहीं होनी चाहिअे।

हेलीनाको महाराजने स्वीकार किया। अुसका प्रधान कारण हेलीनाका सौन्दर्य ही है। अुसकी देह-कांति सफेद नही—चन्द्रमाको सानपर चढा शहदमे भिगोअे जैसी है। भ्रमर जैसे केश। अुसका समस्त सौन्दर्य अुसके विशाल नेत्रोंमें मूर्तिभूत है। अुसकी पुतलियोंकी कांति अपूर्व अेवं अद्भुत है। अुस रूपसिको देखनेपर चक्रवर्तीने अंगीकार ही नहीं किया ; बल्कि अुसे प्रधान चामर-ग्राहिणी बनाया।

चामर-ग्राहिणियाँ अन्त.पुरकी स्त्रियाँ थी। अुनके भोग राज-भोग थे। वे बाहर निकलतीं तो पालकियोपर जाती। कोअी भी आँख अुठाकर अुन्हें देख नही सकता। यदि कोअी अुन्हें चामर-ग्राहिणियाँ न समझे तो राज-कन्याअें ही मान लेगा। अुनके शरीरपर शोभित होनेवाले आभूषण रत्नमय तथा अुनके धारण करनेवाली साड़ियाँ स्वर्णमय हुआ करती थी। चक्रवर्ती सदा अुनकी अिच्छाअे पूर्ण करते थे। अुन दिनोमे नारी होकर जन्म लेनेमे दो चरितार्थ थे। प्रथम आन्ध्र-चक्रवर्तीकी रानी होना और द्वितीय चामर-ग्राहिणी बनना।

हेलीना गत चार वर्षोसे अपने माता-पिताको अमूल्य रत्न, कस्तूरी, जायपत्री, लौग, अिलायची, पान, सुपारी अित्यादि भेजा करती थी। अुनके माता-पिता भी अुनका स्वाद रोम-वासियोको चखाते थे। जिन लोगोने स्वाद चखा, वे हेलीनाके माता-पिताके भाग्यकी सराहना करते थे। अन्य लोग अुनके स्वादसे परिचित होनेको लालायित रहते थे।

अैसी स्थितिमे हेलीना घर आअी। लौटते समय दो अूँटोंपर अपना सामान लादकर लाअी थी। लोगोंकी यह धारणा थी कि हेलीना अुन सबको अपने नगरवासियोमे बाँटनेवाली है। फिर जनता अेकत्रित क्यों न होगी ?

हेलीनाको चार दिनतक आराम नही मिला। अपने साथ लाअी हुअी भारतीय वस्तुओके प्रदर्शन तथा थोड़ा-सा अुनका स्वाद चखानेमे वह लगी रही। दस दिनतक यह कार्य चलता रहा।

अिन दस दिनोसे डार्टिमो बराबर हेलीनाके घर आता रहा। डार्टिमो अेक सम्पन्न जमीदारका पुत्र था। हेलीनाके चामर-ग्राहिणी बनकर जानेके पहले ही डार्टिमोने अुससे प्रेम किया था। हेलीनाका प्रेम पानेको डार्टिमोने अनेक प्रयत्न किअे थे। हेलीना अेक सामान्य परिवारकी लडकी है। अेक जमीदारके पुत्रका हेलीनासे विवाह करनेसे बढकर अुसके माता-पिताको और क्या चाहिअे ? सब अिस सम्बन्धको चाहते थे, पर हेलीनाका हृदय विकल था। अुसने डार्टिमोके प्रेमका तिरस्कार किया। वह अिस बातको प्रकट भी नही कर सकती, न वह प्रेमका अिन्कार भी कर सकती, और न अुसे स्वीकार ही कर सकती थी। वह यह मानती थी कि अिस पृथ्वीपर अुससे बढ़कर और कोअी सौन्दर्यवती शायद ही होगी।

सौन्दर्य और विवेकके लिअे आत्मज्ञान अधिक होता है और आत्माभिमान भी। अुसके हृदयमे अेक अुत्कट महत्वाकांक्षा थी––अेक चक्रवर्तीकी पत्नी बननेकी। जब वह चामर-ग्राहिणी बनकर जा रही थी, अुस समय अुसने कल्पना की थी कि अुसकी अिच्छा अवश्य पूर्ण होगी। अुसके माता-पिताको धन पानेकी आशा थी, पर अपनी पुत्रीका दूर देशोमे जाना अुतना पसन्द नही था। हेलीनाके हठ करनेपर ही अुन लोगोने अुसकी बात मान ली थी। अुन्हें मालूम था कि चामर-ग्राहिणियाँ कदापि चक्रवर्तीकी पत्नियाँ नही बन सकती। पुन. अुसकी पुत्री वापस लौटकर आ भी सकती है, नही भी आ सकती है। कुछ चामर-ग्राहिणियाँ अपनी ३५ वी अथवा ३६ वी वर्षकी अवस्थामे विवाहकर आन्ध्र-देशमे ही रह जाती है। नृत्य-गीत अित्यादिका अभ्यासकर अुस कलासे ही जीवन-यापन किया करती है। हेलीना यदि वापस लौटकर भी आती है तो अुसकी अवस्था अधिक होगी। अैसी दशामे यहाँपर विवाह होना कठिन है; लेकिन जीवन-पर्यंत सम्पत्तिका सुखानुभव कर सकती है।

अुस देशमे डेल्फाव नामक ग्राममे अेक भविष्यवक्ता ज्योतिषी रहता था। अुससे हेलीनाने अपनी १५ सालकी अुम्रमे जाकर अपना भविष्य पूछा था। कहा गया था कि वह अेक चक्रवर्तीके यहाँ अन्त:पुरमे रहेगी। अुसका मतलब हेलीनाने चक्रवर्तीकी पत्नी होना लगाया।

हेलीनाके वापस लौट आनेपर अकेले डार्टिमोने ही सन्तोष प्राप्त किया। लडकीके माता-पिताको सम्पत्तिके आगमका द्वार बन्द हो जानेका दुख हुआ। लेकिन अिस बातका अुन्हें हर्ष था कि हेलीना वापस आते-आते बहुत-सी सम्पत्ति लाअेगी, जिससे वे अधिकाश जमीदारोकी अपेक्षा ज्यादा धनी होगे। अुस धनसे अेक अच्छी-सी जमीदारी खरीदी जा सकती है। फिर अुन्होंने अपनी पुत्रीके भाग्यके फूटनेका अनुभव किया। डार्टिमोने अपने भाग्यको फला हुआ-सा अनुभव किया।

डार्टिमोके माता-पिताको यह कतअी पसन्द नही था। पहले हेलीनाके सौन्दर्यपर मुग्ध हो अुन लोगोने अुसे अपनी बहूके रूपमे स्वीकार करनेकी सम्मति भी दी थी। परन्तु आज अुन्हे यह पसन्द नही था। अुनका यह

मनोभाव है कि चामर-ग्राहिणी चक्रवर्तीकी पत्नी ही मानी जाती हैं। पूर्ण-रूपसे पत्नी न हो, फिर भी पत्नी-जैसी ही है। चामर-ग्राहिणीके माने वह राज-रानी नही। चामर मृग नामक अेक जातिके हरिण भारतमें होते है। अुनकी पूँछें बड़े जूडो-सी होती हैं। अुन रत्नजटित मुवर्ण दण्डोमे बँधे हुअे जूड़ोको लेकर नारियाँ चक्रवर्तीके दोनो तरफ खडी हो जाती है और चँवर डुलाती रहती हैं। सम्राटके सिहासनपर विराजमान होते ही यह कार्य होता है। अन्य समयोंमें अुन्हें कोअी काम नही रहता। चामर-ग्राहिणियों-की खोजमे जब आन्ध्रके अधिकारी आअे थे, अुस समय अुन लोगोने कहा था कि चामर-ग्राहिणियों और चक्रवर्तियोंके बीच कोअी सम्बन्ध नही रहता। साधारण प्रजा अिसपर विश्वास नही करती। अिसलिअे डार्टिमोके माता-पिताका अुद्देश्य हैं कि हेलीना चक्रवर्तीकी पत्नी ही है। यही कारण हैं कि वे डार्टिमोके विवाहमे सम्मति नहीं देते हैं।

फिर भी डार्टिमोने हेलीनाके रोम छोड़कर चले जानेपर भी किसीसे विवाह न करनेका संकल्प किया। अुसने मनमे निश्चय कर लिया कि मरण-पर्यत वह अन्य स्त्रीके साथ प्रेम नही करेगा। लेकिन अपने अिस निश्चयको डार्टिमोने किसीसे नहीं कहा। अुसका भी अभिप्राय था कि हेलीना आन्ध्र-चक्रवर्तीकी पत्नी हो गअी है और चक्रवर्ती तथा हेलीनाके बीच वैमनस्य होनेके कारण वह भारत छोड़कर चली आअी है। अब हेलीनाका प्रेम चक्रवर्तीपर न होगा। अपना प्रणय सफल सिद्ध होगा।

गत दस दिनोंसे डार्टिमो हेलीनाके घर आता और दिनभर वही पड़ा रहता। अुसीके घर भोजन करता। हेलीना आन्ध्र-देशके समाचार मुनाती और लोगोके साथ डार्टिमो भी कान खोलकर अुन सब समाचारोंको सावधानीसे मुनता। हेलीना डार्टिमोको मित्रकी भाँति मानती और वैसा ही अुसके साथ वर्ताव करती। हेलीनाके साथ डार्टिमो अेकान्तमें मिलना चाहता, पर हेलीना वैसा मौका न देती।

हेलीनासे लोग पूछते कि तुम भारत छोडकर यहाँ क्यों चली आअी? कुछ लोगोके प्रश्नोंपर तो वह ध्यान नहीं देती और कुछ लोगोके प्रश्नोंका अुत्तर यह देती कि मुझे वहाँपर रहना पसन्द नहीं था। सहेलियोंके पूछनेपर अपने नेत्रोसे

दीनता टपकाती। पहले माता-पिताके पूछनेपर जवाब दिया था कि—हमारे लिअे यह सम्पत्ति काफी नही? पुन-पुन. पूछनेपर रुष्ट हो कहती—"जवाब तो दिया है न? बार-बार वही क्यों पूछते है?" अुन लोगोने भी क्रमशः पूछना बन्द कर दिया। बड़ी धनराशि प्राप्त हुअी है। अुसकी वह् अधिकारिणी है। फिर वे चुप क्यों न रहेंगे?

जैसे-जैसे दिन बीतते गअे हेलीनाके नेत्रोंमे चिन्ताकी भावना झलकने लगी। वह् सदा प्रसन्न रहनेका प्रयत्न करती, पर कभी-कभी अुसकी आँखोमें दीनताका भाव प्रकट हो अुठता। अुस समय वह् अपने अेक विशेष कक्षमें जाकर अेकान्तमें रहती।

कअी महीने बीत गअे। डार्टिमो प्रति दिन हेलीनाके घर जाता। पर वह् प्रेमिकाके घर जानेका अनुभव नही करता, पड़ोसीके घरका-सा अनुभव करता। अेक वर्ष बीत गया। क्रमशः हेलीनाकी चिन्ता बढती गअी। हेलीनाके बारेमे नगरमें तरह्-तरहकी बाते लोग सोचने लगे। हेलीनाका विवाह होनेपर ही ये अफवाहे बन्द नही हो सकती। हेलीनाके माता-पिताने भी डरते-डरते चार-पाँच बार अुससे कहा—"तुम डार्टिमोके साथ विवाह् कर सकती हो। अुसके माता-पिता भी अिस सम्बन्धमे कोअी रुकावट पैदा नही करेगे। वे भी धनी है। अिस समय तुम्हारी अुम्र २२ से अधिक भी नही है। तुम अब आन्ध्र देशमे भी नही जा रही हो। अभी जीवन काफी पडा हुआ है। डार्टिमो तुमसे ६–७ वर्षोसे प्रेम कर रहा है। वह् दूसरी लड़कीसे विवाह् भी नही करेगा। अुसका जीवन व्यर्थ होता जा रहा है। तुम भी अिधर दुखी हो।" अिस प्रकार माता-पिताके समझानेपर हेलीनाने डार्टिमोसे बोलना-चालना शुरू किया। अिसपर अुसके माता-पिता बहुत ही प्रसन्न हुअे।

सप्ताहमे अेक बार हेलीना और डार्टिमो टहलने जाने लगे। डार्टिमोने बहुत समय तक अपने प्रेमको व्यक्त नही किया। अेक बार प्रकट करनेपर वह् डार्टिमोको छोड़कर चली गअी थी। अितना होनेपर भी डार्टिमोको अपने प्रेमको प्रकट करता और हेलीना सुनकर चुप रह जाती।

लगभग दो वर्ष बीत गअे है। हेलीनाके हृदयमें डार्टिमोके प्रति प्रेम है या नहीं—डार्टिमोको पता नही, पर अुन दोनोंके बीच घनिष्ठ परिचय हो गया। डार्टिमो हेलीनाके कधेपर हाथ रखता तो हेलीना अुसे हटाती नहीं, और न ही अुससे दूर हटकर बैठती। लोग अुन्हें पति-पत्नी मानते, किन्तु वे विवाह क्यो नही करते, अिस बातका सबको सदेह था।

अेक दिनकी शामको अुस नगर प्रदेशके गिरिश्रृंगपर दोनों बैठे हुअे थे। डार्टिमोने हेलीनाके हाथोको अपने हाथोंमे लेकर कहा—"हेलीना! मैंने अपना जीवन तुम्हे समर्पित किया। मै तुमसे प्रेम कर रहा हूँ। पर तुम नही करती। मुझे मालूम है कि तुम मुझसे प्रेम नही करोगी, मुझे केवल अेक परम आप्त मित्र मानती हो। तुम्हारे मनमे जो चिन्ता है, अुसका कारण मुझे ज्ञात नही हो रहा है। वही चिन्ता तुम्हें जलाअे जा रही है। यदि मै तुम्हारा परम आप्त मित्र हूँ तो वह रहस्य मुझे बताओ। मै भी तुम्हारी कठिनाअीमे हाथ बँटाअूँगा।"

डार्टिमोके अिस प्रकार गिडगिडानेपर हेलीनाने जवाब दिया—"डार्टिमो! तुमसे बढकर मेरा आप्त मित्र और कोअी नहीं है। मुझपर तुम्हारा जो प्रेम है, वह दैवी प्रेम है। मै तुमसे पुनः प्रेम नही कर पा रही हूँ। अिसलिअे मुझसे बढ़कर कोअी कृतघ्न अिस विश्वमें दूसरी नही हो सकती। मै अपनी कहानी किसीको सुनाना भी नही चाहती थी। मै अिस कहानीको तुम्हे सुनाकर तुमसे पुनः प्रेम न कर सकनेके पापका प्रायश्चित्त करूँगी।"

तुम्हें मालूम है कि मै अत्यन्त रूपवती हूँ। अिसपर मेरे अभिमानकी सीमा नही है। अिसलिअे भगवानने मेरे घमण्डका अिस प्रकार दण्ड दिया है। जबसे होश सँभाला, तभीसे मैंने निश्चय किया कि मै अेक चक्रवर्तीकी ही पत्नी हो सकती हूँ। किसी अन्यकी कदापि नही। चामर-ग्राहिणीके कर्तव्यका परिचय देनेपर मैंने अधिकारियोंकी बातोंपर विश्वास नही किया। अुस चक्रवर्तीके हृदयपर अधिकार कर सकनेका अहंकार मेरे मनमें था। लेकिन आन्ध्र देशमे पहुँचने तक मेरे मनमे यह भय बना रहा था कि वहाँपर मुझसे भी बढ़कर रूपवतियाँ होगी। पर मुझसे बढ़कर कोअी सौन्दर्यवती अुस देशमे न थी, अिस बातके साक्षी स्वय आन्ध्र-चक्रवर्ती ही है। मेरे

सौन्दर्यपर प्राकृत भाषाके कवियोंने कविता की। चित्रकारोंने मेरे चित्र तैयार किअे। शिल्पियोने मेरी मूर्तियाँ गढीं। चक्रवर्तीके अन्तःपुरमें वसन्त ॠतुमें सौन्दर्योत्सव मनाअे जाते है। अुन अुत्सवोंकी रानी मै ही थी। चक्रवर्तीत्वके प्रति जो सम्मान व मर्यादाअे होती है, वे सब मेरे प्रति भी हुआ करती थीं। मेरे नेत्रोमे आरती अुतारते थे। मुझे देखनेके लिअे बड़े-बडे राजा-महाराजा चक्रवर्तीकी राजसभामें आया करते थे।

मेरा मन चक्रवर्तीपर अनुरक्त था। भाअी डार्टिमो! वे चक्रवर्ती केवल अधिकार-बलसे ही चक्रवर्ती नही थे। वरन् वे समस्त पुरुष सौन्दर्यका मूर्त रूप थे। अुनके सौन्दर्यके सामने मेरा सौन्दर्य ही क्या है? हे डार्टिमो! मै अपने दुर्भाग्यका परिचय कैसे दूं। वे चक्रवर्ती अेकपत्नी-व्रती हैं। अक्सर हम सुना करते है कि प्राच्य देशके राजा अनेक पत्नियाँ रखते है। यह बात सत्य नही। यदि किसी राजाके दो-तीन रानियाँ हो, तो भी अुन पत्नियोको छोड अन्य स्त्रियोकी वे कामना नही करते। वे महान नीतिज्ञ है। अुन देशोके सम्बन्धमें हम जो कुछ भी बुरा सोचा करते है, वह ठीक नही। वह अेक दिव्य जाति है।

मुझे अिस बातका आश्चर्य है कि वे चक्रवर्ती मेरे सौन्दर्यकी आराधना करते हुअे मेरे प्रेमको नही पाते। मेरे सौन्दर्यके वास्ते अेक चक्रवर्तीकी पत्नीके जैमा मेरा आदर करते थे। सौन्दर्य नामक यदि कोअी साम्राज्य है,तो मैं अुसकी महाराज्ञी थी। अन्य विपयोमे मैं किसी कामकी नही। चक्रवर्ती और अुनकी पत्नी दोनो मेरे सौन्दर्यपर मुग्ध थे। पर चक्रवर्ती कभी भी मेरी तरफ प्रेम-भरी दृष्टि नही दौड़ाते थे। मेरा स्पर्श करते हुअे आगे न बढते, मेरा हाथ पकडनेका प्रयत्न न करते। मेरे पास बैठे रहनेकी अिच्छा भी अुनमे नही थी।

मै अपनी बात क्या कहूँ? मेरा हृदय चक्रवर्तीमय हो गया था। मुझे निद्रा नही आती थी, भोजन करनेकी अिच्छा तक नही होती थी। मेरा सारा जीवन अन्धकारमय हो गया। मेरी अिच्छा होती कि सदा चक्रवर्ती दरबार लगाअे रहे। अुसी समय अुनके दर्शन होते है और वर्षमें अेक वार वसंतोत्सवके समयमे भी।

भाअी डार्टिमो ! मै अबतक मर जाती। नीद और अपनी कामना-पूर्तिके अभावमें मेरा शरीर शुष्क हो गया था। पर दरबारमे चक्रवर्तीके दर्शन होते ही मेरा शरीर प्रफुल्लताके मारे पुष्ट प्रतीत होता था। अैसा लगता था मानो अुनके नेत्र अमृतकी निधि ही है !

अिस प्रकार चार वर्ष तक मैने सहन किया। अिसके बाद मुझमे सहन-शीलता नही रही। डार्टिमो ! तुम्हारी सहनशीलताके लिअे शत-शत नमस्कार है। मुझसे अितना प्रेम करके प्रेम-विधानको आठ वर्षतक सहन करते रहे, जीवन पर्यंत भी सहन कर सकते हो। अिसलिअे हम दोनोके प्रेमकी तुलना नहीं हो सकती। हे भाअी ! अिसलिअे हम दोनोंका सम्बन्ध अुचित नही। तुम प्रेमसे पूर्ण हो, मै क्षमाविहीन नारी हूँ।

अेक दिन मै चक्रवर्तीके बिस्तरके पास पहुँची। अन्तःपुरकी स्त्रियाँ अुस दिन अुत्सव मना रही थी। महारानी अुस दिन चक्रवर्तीके यहाँ जाने-वाली थीं। अुन्होने अिस आशयकी खबर भेज दी थी। पर आधी रातके समय महारानीको मालूम हुआ कि वह अब किसी कारणवश नही जा सकती। यह समाचार चक्रवर्ती तक पहुँचानेके लिअे महारानीने किसीको भेजा। अुस समय मै चक्रवर्तीके कमरेके पास थी। चक्रवर्ती सो रहे थे। मेरे मनमे अेक अिच्छा पैदा हुअी। मेरे आलिगनके बन्धनमें तथा मेरे चुम्बनोंकी गरमीमे जागृत चक्रवर्तीने कैसे पता लगा लिया कि अुनके आलिगनमे स्थित मैं महारानी नही हूँ, मुझे ज्ञात नही। मैंने मणिमय दीपकपर गाढा कपड़ा ओढाकर सारे कमरेको अन्धकारमय बना दिया।

दूसरे ही क्षण मै दीपकके प्रकाशमे खड़ी थी। वे चक्रवर्ती मेरे प्रति प्रेमविहीन थे, पर दयाविहीन नही। हे डार्टिमो ! अुस अपराधके लिअे फाँसीकी सजा दी जाती है। चक्रवर्ती छोड़ भी दें, पर महारानी नही छोडती। सजा भोगनी ही पड़ती है।

मेरी चामर-ग्राहिणीकी नौकरी चली गअी। अेक सप्ताहभरमें पुत्रीको ससुराल भेजनेकी भाँति मेरे साथ फौजका रक्षण देकर,दो अूँटोंपर बड़ी संपत्ति लदवाकर चक्रवर्ती और अुनकी पत्नीने मुझे अपने माता-पिताके घर भेज दिया।

अिस समय सारा जगत अन्धकारावृत्त था। गिरि-शिखरके अेक वृक्षपर बैठा अेक अुल्लू बोल रहा था।

* * *

२.

हिमालय-किरण

—–स्व. श्री अडिवि बापिराजु

आपका जन्म ८ अक्टूबर सन १८९५ ओ. में आन्ध्रके पश्चिम गोदावरी जिलेके भीमवरम् नामक अेक छोटे-से नगरमें हुआ था। आपने राजमहेन्द्रीके

गवर्नमेण्ट कालेजसे बी.अे. किया। सन १९-२१–२२ के स्वराज्य-संग्राम आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आपको कारावास भुगतना पड़ा। मछलीपट्टनम्की प्रसिद्ध आन्ध्र जातीय कला-शाला (राष्ट्रीय महाविद्यालय) में प्रख्यात चित्रकार श्री प्रमोदकुमार चट्टोपाध्यायके समीप आपने चित्रकलाका अभ्यास किया और साथ ही मद्रासके कालेजमें भर्ती होकर बी. अेल. की परीक्षा पास की। आपने कुछ समय तक अपने जन्म-स्थानमें वकालत की। "त्रिवेणी" नामक साहित्य, संस्कृति, कला, पुरातत्वकी अँग्रेजी मासिक-पत्रिकाके संयुक्त सम्पादक-पदपर रहकर आपने संपादनके क्षेत्रमें भी काफी कार्य किया। सन १९३५ से ३९ तक मछलीपट्टनम्के अुक्त राष्ट्रीय महाविद्यालयमें प्रिन्सिपलके पदपर योग्यतापूर्वक कार्य किया। कुछ समय तक सिनेमा क्षेत्रमें आर्ट डाअिरेक्टर रहे। फिर हैदराबादसे निकलनेवाले दैनिक "मीजान" के प्रधान सम्पादक रहे। आन्ध्र-विश्वविद्यालयसे आपके प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ दो चित्रों—"नारायण राव पेशवा" और "तिक्कन सोमयाजी"पर आपको पुरस्कार मिल चुका है।

"हिमबिन्दु", "नारायणराव", "गानेगन्नरेड्डी", "कोनगि", "जाजियल्लि" ये आपके अुपन्यास हैं।

"अंजलि","हम्पीके खँडहर"आदि कहानी-संग्रह; "तोलकरि","हारती", गीत-संग्रह और "दुक्टिटेदु", "अुषासुन्दरी", "भोगीरलोय" रेडियो-रूपक हैं।

आन्ध्रके अनेक युवकोंको आपने चित्रकलाकी अुच्च शिक्षा दी है। २२ सितम्बर सन १९५२ को आपका स्वर्गवास हो गया।

* * *

हिमालय–किरण

अेक दिन सबेरे-ही-सबेरे आनन्दस्वामीने हरिद्वारके स्नान-घाटपर अुस युवतीको देखा। देखते ही अुनके हृदयमें अेक भीषण टीसकी ज्वाला जागृत हुअी। अुनका शरीर काँप गया।

मुख-मण्डल लाल हो गया। अुनकी तपस्या अन्तर्धान हुअी। स्वामीजी-की दृष्टि अुनके नियंत्रणसे हटकर स्नान करनेवाली अुस सौन्दर्यकी राशि-वाली नारी पर जा अटकी। अुस युवतीके भीगे हुअे कपड़ोंमेंसे अुसका सौन्दर्य झलक रहा था। शिशुता और जीवनकी दीप्ति, धूपछाँव रेशमी वस्त्र-की तरह चमक रही थी। स्वामीजीकी दृष्टि शिशुत्व अेवं मुग्धत्वके साथ झूलनेवाली अुस युवतीके मुख-मण्डलपर केन्द्रित हुअी और कभी-कभी अुस युवतीके कंठ, बाहु-मूल, अुरोज तथा आँखमिचौनी खेलनेवाले कटि-विलासपर दौड़ने लगी।

सहज भावसे प्रशांत हो, दिव्य ज्योतिकी भांति प्रकाशित होनेवाले अुस बाल-योगीका मुख-मण्डल विवर्ण हो गया।

अिसी समय बाल-शंकरके स्वरूपका स्मरण दिलानेवाले अुन आनन्दस्वामी-को, जो स्नान कर रहे थे, काश्मीरी सुन्दरीने देखा।

वह सुन्दरी? श्रीनगरकी अेक काश्मीरी ब्राह्मणबाला है। अुसका शिरोमुण्डन करानेके अभिप्रायसे अुस बालाके पिता अुसे हरिद्वार ले आअे हैं।

छह् वर्षकी छोटी अवस्थामें अुस बालाका विवाह् अेक अभागेके साथ हुआ था, लेकिन वह् अुस दुधमुँही लड़कीको निरीह छोड़, सदाके लिअे अिस संसारसे चल बसा।

वह् बाला संसारसे सदा अनभिज्ञ ही रही। अुसे अिस बातका दुख नही, वह् पति विहीना है। जब कभी अुसकी माता अुसे अपने आलिगनमें लेकर कह्ती—"मेरी बेटी, तेरे भाग्यका सितारा डूब गया है, तेरे जीवनका आधार अितनी छोटी अुम्रमे ही टूट गया है" तो अुसका भाव अिसकी समझमे बिलकुल न आता।

१६ सालकी अवस्थामे वह् युवती कमल जैसी विकसित हुअी। अुसके मुख-मण्डलपर वैधव्य नही दीखता था। बल्कि वह् सौभाग्य-देवी मालूम होती थी।

वह् अपरिचित सौन्दर्य-राशि, शिल्प-कलाके सुन्दर नमूनेकी मूर्ति, अुस काश्मीरी ब्राह्मणके गृह्को ज्योतिर्मय बना रही थी। १८ सालकी अुम्रमे तो अैसी दिखाअी देती थी मानों अुसकी ओर देखने मात्रसे अुसे नजर लग जाअेगी।

अुस युवतीकी फूफीने कहा—"हमारे घरमे अिस सौन्दर्यके रहनेसे वह् अष्टविध पापकृत्योंका आश्रय बन जाअेगा। अिस बाल-विधवाका सिर मुँडवा देना चाहिअे।" अुसकी माता कुढकर रह् गअी।

आनन्दस्वामीजी? राजमहेन्द्रीमे बी. अे. पास करके, कृष्णा जिलेके कलेक्टरेटमे ४०) मासिक वेतनपर नियुक्त हुअे। २५ वर्षकी अुम्र तक रेवेन्यु अिन्सपेक्टरी करते भीमवरममे निवास कर रहे थे। अुस समयका अुनका नाम रामचंद्रराव था। वे अेक कुलीन घरानेमें पैदा हुअे थे। अुनका विवाह् भी अेक सुसम्पन्न घरकी युवतीसे हुआ था। अुनका पारिवारिक जीवन शान्तिपूर्वक बीतता जा रहा था। स्वर्णमूर्ति जैसी पत्नी और दो लड़के और दो लड़कियोंका परिवार अुनके घरको सुखका आगार बना रहा था।

अेक दिन, रातको न मालूम रामचंद्ररावके मनमे कौनसी भावना जागृत हुअी कि वह् किसीसे बिना कहे अुस अमावस्याकी अँधियारीमें अेका-अेक भीमवरमसे अन्तर्धान हो गअे।

सबेरे रामचन्द्ररावका अेक पत्र देखनेको मिला। अुसे देखकर पत्नीको असीम दुख होना स्वाभाविक था। सिर पीटते हुअे बच्चोंका ख्याल न कर वह भी कुअेमे गिर पड़ी। लोगोंने अुसे बाहर निकाला। सबको रामचन्द्ररावके लौटनेकी आशा की, लेकिन वह आशा व्यर्थ सिद्ध हुअी। मित्रोंने रामचन्द्रराव को मूर्ख, कायर कहकर सन्तोष किया।

अिस समाचारसे अवगत अेक व्यक्तिने, जो काशीकी यात्राको गया था, वहाँपर रामचन्द्ररावको देखा और अुसके ससुरको अिस आशयका अेक तार दिया। "रामचन्द्रराव यहाँपर है। शायद संन्यास ले रखा है। अुनकी पत्नी व बच्चोको लेकर जल्दी आ जाअिअे।" सब लोग वहाँ पहुँचे। देखा, रावजी सन्याशियोंके साथ योगाभ्यास कर रहे हैं। अुन्हे देखकर अुनकी पत्नी मूर्छित हो गअी। बच्चे आँखे फाड़-फाड़कर पिताजीको विस्मयपूर्ण दृष्टिसे देखते रह गअे।

सबने घर लौटनेकी प्रार्थना की। लेकिन रामचन्द्रराव शाकर भाष्यका अेक अुपदेश देने लगे कि "संसारसे तर जानेके लिअे वैराग्य ही अेक मात्र साधन है।"

रामचन्द्ररावके गुरु यतीश्वरानन्दजीने सबको समझाया-बुझाया। हिमालयके बुलानेपर कौन लौट सकता है? यही रामचन्द्रराव वहाँके आश्रममें अब आनन्दस्वामीके नामसे पुकारे जाते है।

(२)

अुस युवतीको देखते हुअे आनन्दस्वामीजीका शरीर अपने नियंत्रणसे मुक्त होता जा रहा था। अुनका दिल रेलके अिजनकी भाँति धड़कने लगा। अुनका मन जैसा आज काबूसे बाहर हो गया, वैसा कभी नही हुआ था।

सहमते हुअे आनन्दने स्नान किया और हरिद्वारके समीप स्थित आश्रममें चले गअे।

यह कहाँका घोर पाप है? सारा विश्व क्या रसातलमें धँसता जा रहा है? हिमालय तो नहीं टूट रहे हैं? अपना सर जमीनपर पटकने लगे।

आज तककी तपस्या भग्न हो गअी। गंगोत्रीके समीप आनंदस्वामीने तीन वर्ष तक परम तप किया था। अुन्होने प्राकृतिक सत्यको कभी मिथ्या नहीं माना था।

पिछले दिनो अुनका मन चंचल रहता। "शिवोऽहं"का ध्यान और दीक्षासे पूर्ण महायोग द्‌वारा मन स्थिर हो गया। कुण्डलीको जगाया। पद्‌चक्रोंको पारकर अूपर अुठा। प्राण शक्ति विकल्प समाधि–आगेकी सीढ़ियाँ है।

अुस नीरव अन्धकारमें अेकाकी बैठे हैं। देह शिथिल है, हृदय जम गया है, कुछ सप्ताह तक चेतना-रहित हो पडे रहे। वाह्य ज्ञान नही रहा। अन्तर्ज्ञानका तो कभीका अन्त हो चुका था। हुआ क्या था?

अेक दिन अचानक वह जागृत हुआ। गुरुभाअियोंका—" शिवोऽहं " " शिवोऽहं "...का जप सुनाअी दिया। धीरे-धीरे फलाहार प्रारम्भ किया; दूध, रोटी लेने लगे।

गुरु यतीश्वरानन्दजीने आनन्दको आदेश दिया—" प्रथम सीढ़ी तुमने पार की है, दूसरीके लिअे तैयार हो जाओ।" अुनकी आत्मा महाशक्तिमें स्थित रही। अुनके भालपर तेज दमकने लगा। गुरुजीके समक्ष अनेक ग्रन्थोंका अध्ययन किया, वेदान्तकी विविध वैराग्य भावनाओंको अवगत किया। सब अैसा मालूम होता था, मानो अुन सबसे वह पहले ही परिचित हैं।

कैलाश पर्वतपर निकटकी अेक गुफामें आनन्दस्वामीने दूसरी बार तपस्या करनेके हेतु पद्‌मासन लगाया। अिस बार वह जल्दी ही विकल्प समाधिमें पहुँचे। अुनके शरीरमें मानो हजारों विद्युल्लताअें दौड़ गअी।

छह मास तक अखण्ड समाधि। अपार आनन्द। "ॐ" "ॐ" "ॐ"...का प्रणव मन्त्र।

आनन्दजीने अपने नेत्रद्वय खोले। अुनका मुख सम्पूर्ण चन्द्रमण्डल ही था। अुनके देहसे प्रकाश फूट रहा था। अुनके ओंठोसे मंद हास छूट रहा था। अुनके नेत्रोंसे दिव्य ज्ञान-ज्योति निकल रही थी।

आनन्दजीको अपने गुरुदेवसे आज्ञा मिली थी—" हरिद्वारके समीप अपना आश्रम बनाओ। प्रति दिन भगवानके मन्दिरके सामने स्थित घाटपर स्नान कर अुनके दर्शन करो। तदनंतर आश्रममें जाकर तप करो।"

अुस सुन्दरीका झलकता हुआ मुख-मण्डल हर मिनट सामने दिखाअी दे रहा था। आनन्दजी सिर घुमाकर पद्‌मासन लगा ध्यान करने लगे। वह काश्मीरी बाला थालीमे फल और फूल लेकर पासमे आअी और नमस्कार कर पार्श्वमे बैठ गअी। अुस बालाके अंग आनन्दजीके शरीरका स्पर्श करने लगे। युवतीने आनन्दजीके भालको चूमा।

"ओह!" कहते आनन्दजी तुरन्त अुठ बैठे। वहाँपर कोअी नही है। थाली नही, युवती भी नही है। अकेले वही है और चारो तरफ शून्य कुटीर।

तपोभग हुआ। अुनके अनेक जन्म व्यर्थ हुअे। वह अब अपने गुरुदेवको अपना मुंह कैसे दिखा सकेगे। अपना सर जमीनपर पीटने लगे; रोअे। अुन्होने लाठी लेकर शरीरपर प्रहार किया। अिससे शरीर फूलकर कष्ट देने लगा।

वह बाला अपनी ओर हाथ फैलाकर अत्यन्त प्रेमके साथ आगे बढ़ती आ रही है।

आनन्दजी जोरोसे हरिका नाम स्मरण करते अुन्मत्त हो गगाके किनारे दौड रहे है। गंगाकी धारा प्रतिध्वनित होने लगी।

"मेरी प्यारी बेटी। तेरा भाग्य ही कहाँ रहा? अब तेरा शिरो-मुण्डन कराना ही होगा। क्या मैने नही कराया? माना, तूने केश रखे भी, अुन्हें देखकर सतोष करनेवाला है कौन है?" यह कहते-कहते निरुपमाकी फूफी अुसे मजबूरन खीच रही है। अुसकी माता मुँहपर घूँघट डाले फूट-फूटकर रो रही है। पिता पण्डित दीनानाथ अपनी पुत्रीका हाथ पकड़कर अुसे नाअीकी ओर खीच रहे है।

नाअी हँसते हुअे अुस्तरेको सानपर चढ़ाता हुआ अस्पष्ट स्वरमे कह रहा है—"कितनी ही सुन्दरियोकी सुन्दर वेणियोको निगलकर अिस अुस्तरेने गगा माअीको अर्पण किया है।"

"अरे मै अपना सिर नही मुँड़ाअूँगी।" कहती हुअी निरुपमा बाघके सामने पडी हुअी हरिणीकी भाँति छटपटाती हुअी पीछे हटती जा रही थी। अुसे अपने पतिकी मृत्युका दुख नही है। अुसे लोग घृणाकी दृष्टिसे क्यों देखते है, यह भी अुसे मालूम न था। वह सदा अपने घर—श्रीनगरमे खेला करती थी। पिता धनवान थे। बस, वही अुनकी अेकमात्र सन्तान थी।

पण्डित दीनानाथ कट्टर सनातनी है। अपने आँसुओंको रोकते, कोपका अभिनय करते अपनी पुत्री निरुपमाकी दोनों भुजाअें पकड़े जबर्दस्ती अुसे नाअीके पास बैठाना ही चाहते थे कि वह युवती "स्वामीजी! मेरी रक्षा कीजिअे" कहकर नीचे गिर पडी।

गंगाके तटपर अुन्मत्तकी तरह दौडनेवाले आनन्दस्वामी अुस समय वहाँ पहुँचे। "कौन है?"—नाअीने कहा—"प्रभु! अिस बदनसीब बाल-विधवाकी वेणीको गंगा माअीको अर्पण करने जा रहे है।"

स्वामीजीने पासमें काश्मीर युवतीको बेहोश पडी देखा। तुरन्त अुसे अुठाकर अुसके मस्तकको अपनी गोदमे रखा और "शिवोऽहं" "शिवोऽहं" जपने लगे। युवतीने आँखें खोली। लज्जासे युवती अुठ खड़ी हुअी और घूंघट सँवारने लगी।

पण्डित दीनानाथ स्तब्ध हो देखते रह गअे। स्वामीजी प्रलयकालके रुद्रकी तरह गर्जन करते हुअे शास्त्र और शास्त्रातीत विषयोंका अुपदेश देने लगे—"अिस अबोध बालाको कुरूपा करनेको तुम कैसे तैयार हो गअे हो? किसीको क्या जबर्दस्ती वैराग्य दिलाया जा सकता है? जो वैराग्य मनमें नहीं है, वह क्या सिरके केश मुँड़ा देनेसे पैदा हो सकता है?"

पण्डित दीनानाथका मन वास्तवमें अपनी पुत्रीका मुण्डन करानेको नहीं मानता था, लेकिन समाजके डरसे ही वे तैयार हो गअे थे। अिसीलिअे वे स्वामीजीसे क्षमा माँगने लगे—"स्वामीजी, क्षमा कर दीजिअे। जब तक मेरी पुत्री स्वयं योगिनका वेष धारण करनेकी अिच्छा प्रकट नहीं करेगी, तबतक मैं अुसके केशोको नहीं निकलवाअूंगा। लेकिन आप जैसे ऋषियोंके अुपदेशामृत पाकर हमारा परिवार धन्य हो जाअेगा।"

(३)

आनन्दजीका हृदय तूफानके समयका-सा महासमुद्र हो गया। क्या विश्वामित्रका तपोभंग नहीं हुआ था? वह तात्कालिक राव था। अुसका अन्त अुस सुन्दर कान्ता-परिष्वंगसे ही हुआ था। वह क्या महापाप नही है? तो क्या अपने कर्तव्यकी च्युति हुअी? पलभरके लिअे अुस युवतीका सुन्दर

वदन अुनके हृदय-पटलपरसे विलग नहीं होगा। दिव्य सुन्दरीने जब अुनका स्पर्श किया, तो अुनकी देहमे जो पुलक प्रकट हुअी, जो आनन्द हुआ, वह क्या समाधिसे प्राप्त आनन्दसे अुत्कृष्ट आनन्द है अथवा तत्समान ?

अपने पापका कोअी निराकरण नहीं है ? अपने अिस अधःपतनका अन्त कहाॅ होगा ?

आनन्दजीने कितने ही देशोंका अिस अवस्थामें भ्रमण किया था। जहाँ कही गअे, सबने सम्मानके साथ अुनका बड़ा आतिथ्य-सत्कार किया। स्वामीजीके मुँहपर जो मोहकी हिलोरें अुठ रही थी, अुन्हें विधवा स्त्रियोंने दिव्य पारलौकिक कान्ति समझा।

अिस बीच अुन्होंने कितने ही तीर्थ व पुण्य-स्थानोंका भ्रमण किया। कहाँ-कहाँ गअे, अुन्हें स्वयं नही मालूम। यह परिव्राजकता थी अथवा अुस भामिनीमें आसक्तिपूर्ण परवशता थी, बताया नही जा सकता। घूम-घूमकर नेत्र खोलकर देखा तो वह काश्मीर देश ही है। श्रीनगरके अेक भवनके सामने अुन्होंने अपनेको खड़ा पाया।

स्वामीजीको घरके अन्दर ले जाया गया। अुनका आतिथ्य अेवं अुनकी सेवा की गअी। अब आनन्दजी काश्मीरी पण्डित दीनानाथके गृह-गुरु हैं। स्वामीजीके हृदयकी जड़को हिलानेवाली वह बाला अुनकी परिचर्या कर रही है।

जिस दिन संन्यासी आनन्दस्वामीजीने अुस युवतीकी रक्षा की थी, तबसे वह अुस बालाके साक्षात ओश्वरावतार बन गअे। हिमालयके धवल श्रृंगोंपर नृत्य करनेवाले नटेश्वर ही मानो अुस बालाके लिअे वे बाल संन्यासी बने।

सदा स्वामीजीकी सेवा करनेसे अुस बालाका जन्म धन्य हो गया।

जब अुनकी गोदमें वह पड़ी थी, अुस समय अुसका शरीर आनन्दसे परवश हो गया था, अुनके मुख-मण्डलपरका मन्द हास अैसा प्रतीत होता था, मानो हिम-शिखरपर ज्योत्सना छिटकी हुअी हो। क्या मनुष्य रूप धरे वह भगवान तो नही है ! प्रति दिन अुनकी सेवा करनेसे ही तृप्ति होगी। अुनके पैर दबाने होंगे। वे भी अुसे मुक्ति-मार्गका ज्ञान कराते, सिरपर हाथ रख आशीर्वाद देंगे ! ....

अिस तरहके विचारोंमे डूबी हुअी अुस काश्मीरी बालाको "स्वामीजी पधारे है"—अपने पिताके ये शब्द सुनाअी दिअे। वह काँप गअी। नेत्रोंमें आनन्दाश्रु भर आअे। सारा शरीर अतिशय आनन्दके मारे हल्का हो गया। स्वामीजीने अुनकी कामना सुनी है। अुनका तप व्यर्थ नही गया है। अुनके गुरु स्वयं अुन्हें खोजते हुअे नही आअे हैं ?

स्वामीजी घरमें आअे। काश्मीरी बाला स्वामीजीके पैरोंपर गिर पड़ी और अुनकी पद-धूलि अुसने सिरपर चढा ली।

अुस नगरमें आबाल-वृद्ध स्वामीजीकी परिचर्या कर रहे है। फल, दूध, मिठाअी आदि पहुँचा रहे है। स्वामीजीको पलभरके लिअे भी अवकाश नही है। लोग सदा अुन्हें घेरे रहते है।

स्वामीजीने संसारकी असारता, मनकी दुर्बलता, कर्म, ज्ञान आदिकी अुत्कृष्टताका निरूपण किया। सैकड़ोकी संख्यामें अुनके भक्त बैठे थे। स्वामीजी अुन्हें अुपदेश दे रहे थे।

रातमे स्वामीजीकी परिचर्या निरुपमा ही करती रही। बिस्तरपर दुपट्टे और शाल बिछे थे; जपके लिअे कृष्ण-मृगकी छाल वगैरह। स्वामीजीके कपड़े धोना, फलोके छिलके निकालना, दूध गरम करना, पैर दबाना, अित्यादि निरुपमाके काम थे। अिससे दोनोंको आनन्द प्राप्त होता था। भक्तिके साथ परिचर्यामें लीन पुत्रीको देख माता-पिताको सन्तोष होता। वैराग्य-पथमें चलती हुअी वह समस्त दुखोंको भूल जाअेगी न ?

अितने वर्षोकी तपश्चर्याका बल सम्भवतः और भी हो। वह बाला अुनके पास रहकर परिचर्या करती रहती तो मोहको रोक नही पाती। अुसके साथ कामकी कल्पना मात्रसे स्वामीजी डरते थे। तो भी अुनका मन विवश हो पतवार-च्युत नावकी तरह समुद्रमे कूदनेको तैयार था।

स्वामीजी किसी-न-किसी बहाने अुस युवतीका स्पर्श करते थे। अुसके केश सँवारते और आध्यात्मिक रहस्योका बोध कराते समय अुसे बीच-बीचमें हृदयसे लगाते।

स्वामीजीपर अुसका मोह नहीं, स्वामीजी ही अुसके देवता है, सर्वस्व हैं। स्वामीजीकी आज्ञा हो तो वह अुन्हें अपनी देह तक अर्पण कर सकती है,

अपने पिताके हृदयपर कटार भोंक सकती है और झेलम नदीमें भी कूदकर प्राण त्याग सकती है। वह अपने सर्वस्वका त्याग कर सकती है। परन्तु स्वामीजीको छोड़कर क्षणभर भी वह नही रह सकती।

अेक दिन स्वामीजीने पूछा—"बेटी! मेरी परिचर्या क्यों करती हो?"

"अपने देवताकी परिचर्या करना क्या आश्चर्यकी बात है?"

"सब अपने लिअे आप ही देवता है। मेरा महत्व ही क्या?"

"अिस रहस्यको समझनेके अुपरान्त सब अपने लिअे आप ही देवता हो सकते है। तबतक गुरु ही देवता है।"

"लेकिन सब प्रकारकी अुत्कृष्टताओसे पूर्ण व्यक्ति ही गुरु कहलाने योग्य है, न कि मेरे जैसे........"

"पापका शमन हो। अैसा न कहिअे। आप स्वयं भगवानके ही अवतार है।"

आनन्दस्वामीकी सारी तपस्या नष्ट हो गअी।

किसी अेक मुहूर्तमें आनन्दजी अपनी अिच्छाओंको रोक नही सके। परिणामत: निरुपमा अुनके आलिगनकी बलि पड़ गअी।

वह संधान-मुहूर्त पवित्र था, या पाप-पूर्ण था? अुसी रात्रिको अुन्होंने लज्जासे सिर झुकाकर, भयकंपित हो, हृदयमे पश्चात्तापने दावानल रूप धारण किया और वे घर छोड़कर भाग खड़े हुअे।

निरुपमाने अपने जन्मको धन्य माना। वह अैसी तेजस्विनी बनी, मानो अुसे भगवानके दर्शन हुअे हों। अुसके तेजको कोअी नही पा सकता था।

प्रात:काल होते ही पिताने पूछा—"बेटी, स्वामीजी कहाँ है?"

निरुपमा—"तपस्या करने गअे है।"

माता—"कब गअे है?"

निरुपमा—"बहुत ही सबेरे।"

पिता—"बेटी! तेरा मुख-मण्डल प्रज्वलित हो रहा है। क्या स्वामीजीने तुझे अुपदेश दिया है? बड़े-बड़े ॠषि-मुनियोकी तपश्चर्यासे भी प्राप्त न होनेवाला महाभाग्य तुझे अपने पूर्वजन्मके सुकृतके कारण प्राप्त हुआ है।"

तेजीके साथ पीछा करनेवाले भयंकर शेरकी पकड़मेसे छूटकर भागनेवाले हिरणकी तरह आनन्दजी हिमालय-पहाड़ोंमे भाग गअे। सारा संसार अुन्हें अन्धकारमय प्रतीत हुआ और अैसा मालूम होता था मानो हिमालयका शिखर टूटकर अुनके अूपर आ गिरा हो।

शुभ्र हिमालय पर्वत-पंक्तिको देखकर अुन्हें मलिन अेवं सड़े-गले अपने जीवनका स्मरण हो आया। अुन्होंने संन्यास ही क्यों धारण किया? तीव्रताके साथ चलनेवाली हृदयकी धड़कनके आवेगको वे रोक न सके। तेजीसे अुस महान पर्वतकी घाटीमे वे कितनी दूरीपर जा गिरे हैं, अिसका अुन्हें पता तक नही।

वहाँ बहनेवाले झरनोंकी ध्वनि सुनाअी दे रही थी। वृक्ष और पत्थर भी अुनके साथ बहते आ रहे थे। अैसा लगता था, मानो अेक ही मिनटमें सिर फूटकर टुकडे-टुकड़े हो जाअेगा और फिर अुनका स्वरूप ही कहीं दिखाअी नही देगा।

"शिवोऽहं! शिवोऽहं!!"....कहते-कहते आनन्दस्वामी बेहोश हो गअे।

निरुपमा दिन-प्रति-दिन महातेजस्विनी होती जा रही है। अुसके मुख-मण्डलकी कान्तिको कोअी भी देख नही पा रहा है।

वह शीघ्र ही विश्वको अेक शिशु प्रदान करने जा रही है। अिस बातका पता जब घरके लोगोंको लगा तो अुसकी माता सिर पीटने लगी और बोली—"मेरी बेटी, तुमने घरको ही डुबोया। कअी पीढ़ियों तक हमारे परिवारोको मुक्तिसे दूर कर दिया। मुसकुराती क्यों हो? क्या वह दुष्ट संन्यासी ही है न?"

माताका दुख अुसकी समझमें नही आया। अुसने अपराध ही क्या किया है? केवल स्वामी द्वारा अुपदेशित मन्त्रका पठन मात्र किया है। अुस दिन वह अपनी बेटीको देख नही सकी।

अेक सप्ताहमें यह समाचार पण्डित दीनानाथको भी मालूम हो गया। अुनके भी क्रोधकी सीमा न रही। संन्यासीकी दुष्टताका स्मरण करके अुनके मनमे बार-बार ये विचार अुठते थे कि संन्यासीके सिरके हजारों टुकड़े

कर दिअे जाअें। अश्रुधारा बहाते हुअे पण्डित दीनानाथ रोने लगे, और बोले––"हे भगवान, आपने कैसी भयानक विपत्ति मेरे सामने खड़ी कर दी? पवित्र परिवारपर अैसा कलंक!"

वे पुनः क्रोधसे पागल हो अुठे और कहने लगे–"दुष्ट, भ्रष्टा लड़की! तू अुस संन्यासीके जालमें फँस गअी? स्त्री यदि सच्चरित्रा हो तो पुरुष कर ही क्या सकता है? अुसी दिन अिसके सिरका मुण्डन करा दिया होता तो अच्छा था। अुस दुष्ट संन्यासीने वेदान्तका व्याख्यान देकर रोक दिया। अिस विश्वमे कैसा पाप भरा है!"

"अब हमें क्या करना चाहिअे? अिस दुष्टाको झेलममें क्यों न डाल दिया जाअे? अथवा फिर अिसे विष ही क्यों न दे दिया जाअे....?" किन्तु फिर अेक दूसरा विचार अुनके मनमे आया कि अकेली सन्तान है। बड़ी प्रतीक्षाके बाद पैदा हुअी है। हे भगवान, अपने हाथोंसे अुसका गला कैसे घोंटा जाअे? ....

बेटीके पास पहुँचे। अुसके प्रफुल्ल बदनको देख काँप गअे। अिस बालाके मुख-मण्डलमे अुन्हें काशीकी अन्नपूर्णाके दर्शन हुअे। बेटी, तुमने यह कर्म किया? अुनकी पत्नीने शायद गलत समझा हो?

"बेटी क्या कर रही हो?"

"स्वामी द्वारा अुपदेशित मन्त्रका पारायण कर रही हूँ।"

अुस दुष्टने कैसा व्यर्थ मन्त्र दिया होगा।

"स्वामीजी तो स्वयं भगवानके अवतार हैं।"

"नहीं, तुम समझती नहीं।" हमारे परिवारको ही अुसने नरक-कूपमें ढकेल दिया है।"

आपने अिसके पूर्व जो कहानियाँ सुनाअीं, अुनमें व्यास महर्षिने धृतराष्ट्र और पाण्डुको कैसे प्रदान किया था, पिताजी?

"म। म म.....प।"

"परम तेज सर्वत्र व्याप्त रहता है। पाप और पुण्यका आरोपण मन ही करता है।"

"........" सिर झुकाकर खड़े रहते हैं।

दूसरे दिन सारा काश्मीरी ब्राह्मण परिवार काशी-यात्राके लिअे निकल पड़ा। वहाँसे रामेश्वरम् जाते हुअे रास्तेमे मदुरा, श्रीरंगम, काँचीपुरम, तिरुपति, कालहस्ती अित्यादि तीर्थोंका पर्यटनकर यह परिवार कालीघाट (कलकत्ता) पहुँचा।

अेक दिन शुभ मुहूर्तमें निरुपमाने अेक पुत्र-रत्नको जन्म दिया। वंश-प्रतिष्ठाको दूषित करनेके लिअे पैदा हुअे अुस मलिन रक्त-पिण्डको हुगली नदीमें फेंक देनेका पण्डितजीने निश्चय किया। दूसरे दिन पण्डितजीने कमरेमें प्रवेशकर देखा––बालकको बगलमें लिअे निरुपमा सो रही है। वह बालक महान तेजसे प्रकाशमान है।

किसी अज्ञात वाणीने गम्भीर स्वरसे अुनके कानोमें शब्द गुँजा दिअे––"पागल ब्राह्मण! तुम्हारे कोअी सन्तान नहीं है। भगवानने अिस बालकको तुम्हें प्रदान किया है।" अिस वाणीको सुनकर पण्डितजी चौक पडे और सोचने लगे––"लोग क्या कहेंगे? समाजमे बदनामी होगी सो अलग। अैसी हालतमे अपना मुँह कैसे दिखाया जाअे? तब फिर क्या कोमल फल जैसे अिस शिशुका अन्त कर दिया जाअे? यह तो अुससे न होगा। वह कसाअी नहीं।"

पण्डितजीने विचार किया कि यदि किसीको पालनेके लिअे दे दिया जाअे तो?

पर अिस कलंकको लेगा कौन? अुन्हें ही पालना होगा? यदि यह कहा जाअे कि किसीके बच्चेको पालनेको लाअे है, तो लोग क्या कहेंगे? लोगोंको यह कहकर समझाया जा सकता है, यह तो अनाथ बालक है।

+ + +

स्वामीजीको जब होश आया तो अुन्होंने अपनेको अुस घाटीकी झाडियोंमें लटकते पाया। अुस झाड़ीने अुनके प्राण बचाअे। सारा शरीर दर्द कर रहा है। सिर फटा जा रहा है। वह हिल-डुल नहीं सकते हैं। झाड़ियोंकी शाखाओंने अुन्हें झुलाया। नीचे गहराअीमे बहनेवाली नदी अपनी कलकल ध्वनिके संगीतसे अुनकी पीड़ा दूर कर रही है।

बड़े प्रयत्नके अुपरान्त स्वामीजी झाडीसे बाहर आअे। परन्तु अूपर भी चढ़ नही सकते और नीचे भी नही जा सकते। अैसा क्यों? क्या भगवानने अुनको कैदमे तो नही डाल दिया? कुछ भी हो, अुन्हें डर ही क्या है? अन्त हो जाअे तो और भी अुत्तम है। पद्मासन लगाकर घोर तपस्या की।

श्रीनगरमे काश्मीरी पण्डित दीनानाथका पालित शिशु अुनके महलमें बालकृष्णकी भाँति बढ़ रहा है। निरुपमादेवी योगिनी हो गअी हं और अुन्होने अपना सिर मुँडा लिया है। बन्धु-बान्धव सभी दीनानाथजीको कलकत्तेमें प्राप्त ब्राह्मण बालकको देख आश्चर्य-चकित हो रहे है। कुछ लोगोको बालकके रूपको देखकर सन्देह हुआ, परन्तु दिव्य स्वरूप तपस्विनीकी भाँति दिखाअी देनेवाली निरुपमादेवीको देखकर अुन्हें डर हुआ और दीनानाथ पण्डितके कथनपर सबने विश्वास कर लिया।

निरुपमादेवी तपस्यामें लीन हो गअी है। स्वामीजीका अुपदेशित वह मन्त्र ही अुनका परम मार्ग है। अुसे अपने पुत्रपर ममता नही है। दोपहरके समय पास-पड़ोसकी औरते पालकीसे, नावसे और कुछ पैदल आती और निरुपमादेवी द्वारा भगवद्गीताके रहस्योको सुनकर फूल अुठती।

कुछ समयके अुपरान्त आनन्दस्वामीजी हिमालयसे अुतर आअे और काशीमे रहने लगे। सिरमे जटाजूट, लम्बी भव्य दाढी और मूँछे बढी हुअी है। वस्त्र फटे हुअे है। सीधे जाकर आनन्दजी अपने गुरु यतीश्वरानन्दजीके पैरोपर पड़े। वह महानुभाव मुस्कुराअे और आशीर्वाद देते हुअे बोले—"वत्स! तुम्हें जो अनुभव प्राप्त हुआ, वह परा शक्तिका चिद्विलास है। गिरकर अुठे हो। पापी जगतको आँखे भरकर देख लिया। प्रारब्ध विच्छिन्न हो गया है। हिमालयका, गौरीशंकर शिखर तुम्हारा साधना-पीठ होगा।"

दो मासके अुपरान्त अेक दिन प्रात.काल पण्डित दीनानाथ जप कर रहे थे। अुस समय आनन्दजी आअे और अुनके सामने खड़े हो गअे। पण्डितजीने आँखे खोलकर देखा। पहले पहचान नही पाअे। कैलाश पर्वतपर विहार करनेवाले देवताओमेसे कोअी अेक देवता समझा। आँखें मलकर देखा और कंपित कण्ठसे मन्त्रोच्चार प्रारम्भ किया।

आनन्दस्वामीजीने पूछा—"पण्डितजी, कुशल है?"

दीनानाथजीने अुस स्वरको पलभरमें ही पहचान लिया— "स्वा . . . . स्वा...मी...जी ! "

"हॉ, हिमालयसे चलकर काशीमे गुरुजीके दर्शन किअे और पुनः हिमालयमें जानेके पूर्व आपके दर्शन करने यहाँ चला आया हूँ।"

पहले तो पण्डितजीको आश्चर्य हुआ, पर अब क्रोधने अुस स्थानको ले लिया। अुन्होंने गरजकर पूछा—" मेरी पुत्रीके लिअे तो नही आअे ? "

"पण्डितजी ! अीश्वर हम सबकी रक्षा करें। मैंने महान पाप किया और अुसका फल भी भोगा।"

"महा पाप किया ! और अुसका फल भोगा ! ! तुमने अुसका फल ही कहॉ भोगा ? तुम संन्यासी हो ? छीः दुष्ट, क्या तुम आदमी भी हो ? मेरे सामनेसे हट जाओ, वरना तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा।"

स्वामीजी मुस्कुराते रहे, और थोड़ी देर बाद बोले—" पण्डितजी, मैंने तुम्हारे प्रति जो घोर अपराध किया है, अुसके लिअे किसी भी प्रकारकी सजा तुम दे सकते हो। तुम अपना वांच्छित दण्ड देकर मुझे पापसे मुक्त करो।"

"छीः दुष्ट, मेरे घरसे चले जाओ। तुम्हारे सिरके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।" महा रौद्र रूप धारणकर बगलमें पडी लाठीको लेकर दीनानाथजी स्वामीजीपर टूट पड़े।

स्वामीजीने सिर झुकाया।

पण्डित दीनानाथको अैसा लगा मानो अुनके पैरोको किसीने पकड लिया हो। सिर झुकाकर देखा कि अुनके दौहित्र, पालित पुत्रने 'ठुमक-ठुमक' चालसे आकर और "दादा" "दादा" कहते हुअे हाथ फैला दिअे हैं।

पतिके क्रोधपूर्ण वचनोंको सुनकर रसोअीसे अुनकी पत्नी वहाँ आअीं और निरुपमादेवी अपनी तपस्या समाप्तकर पिताजीके पास अुपस्थित हुअी।

स्वामीजी आँख बन्दकर सिर झुकाअे वहीपर खडे रहे। वे वहीं समाधिमें तन्मय हो गअे। अुनके मुख-मण्डलसे सहस्र ज्योतियाँ फूट रही थी। वहाँपर खड़े समस्त लोगोंको कोअी दिव्य संगीतकी श्रुति सुनाअी दी।

अपने गुरुदेव, अपने स्वामीको देख निरुपमाका शरीर पुलकित हो अुठा और अपनेको भूलकर वह सीधे जाकर स्वामीजीके पैरोंपर गिर पड़ी। निरुपमाकी माताने अपना घूँघट सँवारा और सिर झुकाकर स्वामीजीको नमस्कार किया।

स्वामीजीके शरीरसे कोअी ज्योति निकलकर चतुर्दिक फैल गअी।

पण्डित दीनानाथके हाथोंसे लाठी छूटकर नीचे गिर पड़ी। अुनके पैर लड़खड़ाने लगे। "प्रभु, क्षमा कीजिअे।" कहते-कहते वे जमीनपर गिर पड़े और मूर्च्छित हो गअे। आनन्दस्वामीजी अुस महान आनन्द-समाधिमें खड़े ही रह गअे।

हिमाच्छादित शृंग, अुन्नत पर्वत-पंक्तियाँ, नन्दन वनकी समता करनेवाली घाटियाँ, सुगन्धिको फैलानेवाली चित्र-विचित्र पुष्प-लताअें, वृक्ष-समूह, निर्मल नीलाकाश, विभिन्न प्रकारके रंग, अुन सबने मिलकर वातावरणमें अेक प्रकारका वैचित्र्य पैदा कर दिया था।

आनन्दस्वामी अुस देव-पर्वतमें घुसते जा रहे हैं। हेमन्तका वह पवित्र दिन परम निर्मल होकर प्रज्वलित हो रहा है।

परमेश्वर-स्वरूपको प्राप्त यह महा पर्वत-पंक्ति जगतकी तपोभूमि है। समस्त धर्मावलम्बियोंको यहाँपर मुमुक्षु (मुक्ति पानेके अिच्छुक) होना पड़ेगा। हे पर्वतेश्वर! तेरी किरण विश्वके हृदयको अपनी अनुपम कान्तिसे पूर्णकर पुलकित कर रही है। "शिवोऽहं" "शिवोऽहं" कहते आनन्दस्वामीजी अुन अगम्य पर्वत-पंक्तियोंमें घूसते जा रहे हैं।

"शिवोऽहं! शिवोऽहं!! शिवोऽहं!!!" की ध्वनि अुन पर्वत-मालाओंको प्रतिध्वनित करने लगी।

* * *

३.

नौका-यात्रा

—श्री पालगुम्मि पद्मराजु

प्रारम्भमें आप रसायन-शास्त्रके प्राध्यापक रहे। लेकिन बहुत ही जल्दी आप अेक सफल कहानीकारके रूपमें सामने आ गअे। अिस ख्यातिके

कारण आज आप सिने-क्षेत्रमें कार्य करने-वाले प्रज्ञाशाली हैं। आपकी 'गालिवान' (तूफान) नामक कहानीको विश्व कहानी प्रतियोगितामें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपने बहुत कम कहानियाँ लिखीं, पर जो भी लिखीं, वे सब अुत्तम कोटिकी रचनाअें हैं। आपकी 'पडव प्रयाणम' (नौका-यात्रा) चेकोस्लोवेकियामें प्रकाशित अेक कहानी-संग्रहमें दी गअी है। आपकी कहानियोंकी विशेषता विभिन्न व्यक्तियों-की मानसिक चित्त-वृत्तियोंका वर्णन है। वर्तमान समयमें विशेष रूपसे प्रचार प्राप्त 'व्यावहारिकता' नामक वादके आधारपर विशेष परिस्थितियोंमें मानवका व्यवहार कैसे परिवर्तित होता है, अिसका चित्रण आपकी कहानियोंमें देखा जा सकता है।

* * *

नौका - यात्रा

सूर्यास्त हो गया है। सारा जगत चिन्तित-सा ज्ञात होता है। नौका पानीपर धीरे-धीरे सरकती जा रही है। नौकाके दोनों ओर जल 'कल-कल' ध्वनि कर रहा है। जहाँ तक दृष्टि जाती है, सारी दुनिया सुनसान दिखाअी दे रही है। कहीं किसी प्राणीकी कोअी हलचल नहीं दिखाअी देती। परन्तु अेक प्रकारकी ध्वनि जैसे देहसे स्पर्श कर रही है—कानोंको अुसका अनुभव नहीं हो रहा है, मनके भीतर वह पूर्ण रूपसे कम्पित होता दिखाअी दे रहा है। अैसा लगता है कि जीवनके अन्तिम समयकी अुदासीनता, पूर्ण रूपसे अेक शान्त निराशा मनमें समा गअी है। दूरपर अस्पष्ट रूपसे दिखाअी देनेवाले वृक्ष माया-जालकी भाँति जैसे निश्चल नौकाके आगे-आगे बढ़ रहे हैं और पासके पेड़ जैसे बिखरे बाल भूतोंकी भाँति पीछे-पीछे चल रहे हैं। नौका नहीं, जैसे नहरके तट हिल रहे हैं। मेरी दृष्टि मानो पानीकी गहराअीका पता लगा रही है, जिसपर प्रतिबिंबित अन्धकारको चीरते हुअे रातके नक्षत्र जैसे लहरोंपर धीरे-धीरे झूला झूलते-झूलते आँखें खोले ही सो गअे हैं।

अब हवाका संचार नहीं। नौकाके पिछले भागमें चूल्हेमें आग जल रही है। कभी-कभी वह प्रज्वलित हो अुठती है, तो कभी-कभी बुझ-सी जाती है। अेक जवान नावमें आअे हुअे पानीको बाहर फेंक रहा है। नौकामें कअी प्रकारके बोरे हैं। धान, गुड़, नमक, अिमली आदि। मैं नावकी

छतपर चित लेटा हुआ हूँ। नावके भीतरसे चुरुटका धुआँ और वार्तालापकी ध्वनि धीरे-धीरे चतुर्दिक फैल रही है। गुमाश्तेके कमरेमें अेक छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा है। नाव चली जा रही है।

किसीने पुकारा—"अै नाववाले! नावको अिस किनारेपर लाओ; अिस किनारेपर।"

नावके किनारे लगते ही दो व्यक्ति अुसपर चढ़े। नौका अुस तरफ जरा-सी झुक गअी।

"छतपर बैठेंगे"—अेक युवतीका स्वर था।

"अितने दिनतक कहाँ रही? दिखाअी नही पड़ी?"—पतवार सँभालनेवाले व्यक्तिने पूछा।

"मैं अपने आदमीके साथ विजयनगर, विशाखपट्टणम् घूमने गअी थी। अप्पन्न कोंडा भी गया था।"

"अब कहाँका अिरादा है?"

"मण्डपाक जा रहे हैं। भाअी, तुम तो अच्छे हो न? गुमाश्ता वही पुराना है क्या?"

"हाँ।"

मर्द छतपर अस्त-व्यस्त लेट गया। अुसके मुँहसे चुरुट नीचे गिर गया, तो अुस स्त्रीने अुसे अुठाकर बुझा दिया।

"अै! अुठके बैठ जाओ न?"

"चुप रह, शैतान कहींकी। क्या तुम समझती हो, मैंने पी रखी है। शैतानी करोगी तो तुम्हारी मरम्मत कर दूंगा।"

वह करवट बदलकर पड़ा रहा। अुस युवतीने अुस अधेड़के शरीरपर अेक कपड़ा अुढ़ा दिया और अेक चुरुट निकालकर जलाया। सलाअीकी सीकके प्रकाशमे मैंने अुसका चेहरा देखा। अुसका वर्ण श्याम और मुख लाल दिखाअी दिया।

अुसके स्वरमें मर्दका स्वर मिला हुआ था। अुसके बोलते समय अैसा मालूम होता था कि वह परिचिता है और हमे मना रही है। यद्यपि मुख-

मंडल विशेष सुन्दर नहीं है। जूड़ा बिखरा हुआ है, तो भी अुसके चेहरेपर अेक भलमनसाहत झलकती है। अुस अन्धकारमें भी अुसके नेत्र जागृतावस्थाकी सूचना देते हुअे चमक रहे हैं। सींककी रोशनीमें बगलमें लेटे हुअे मुझको अुसने देख लिया है।

"यहाँपर कोअी लेटे हैं।"—कही वह अपने पतिको जगाने लगी।

"सो जाओ, चिल्लाओगी, तो तुम्हारी पीठ तोड़ दूँगा।"—कर्कश स्वरमें अुसने अुत्तर दिया और बहुत कोशिश करनेपर जरा सरका।

अितनेमे गुमाश्ता दिया अूपर अुठाकर नावके पार्श्वमें खड़ा हो गया। बड़े जोरसे चिल्लाकर अुसने पूछा—"अै रंगी! यह कौन है?"

"बाबूजी, पडाल है, मेरा आदमी।"—रंगीने अुत्तर दिया।

"पडाल! अुतारो...वह चोरका बेटा है। तुम्हे कुछ भी अकल नही? फिर अुस दुष्टको नावपर चढ़ा लिया। अेक नम्बरका पियक्कड़ है।"

"मैंने जरा भी नही पी है। कौन कहता है, मैने पी है।" —पडालने कहा।

"अरे! अिसको अुतारो! अिसे चढ़ने ही क्यों दिया? बहुत पीता है यह।"

"बहुत नहीं, जी, थोड़ी-सी पीता हूँ।"

"अरे, चुप रह! बाबूजी, हम मण्डपाकके पास अुतर जाअेंगे।" —रंगीने कहा।

"गुमाश्ताजी, नमस्ते। आपकी दया है। मैंने आज नही पी है, बाबूजी!"—जोरसे पडाल बोला।

"शोर मचाया, तो मैं नहरमें फेंकवा दूँगा। सावधान!"—गुमाश्ता कहकर कमरेमें चला गया।

पडाल अुठ बैठा। वास्तवमें वह पिया हुआ मालूम नही होता था।

"नहरमे फेंकवाअेगा। सुअरका बच्चा।"—धीमे स्वरमें पडालने कहा।

"रे, चुप भी रह। सुन लेगा।"

"कल सबेरे तक नावकी हालत देखने दो सालेको। मेरे सामने बेटा, रौब गाँठने चले है।"

"अँह! अुस तरफ कोअी लेटा हुआ है।"

"कौन?....सो रहा है वह।"—और पडालने चुरुट जलाया।

पडालकी मूँछें अटपटी हैं। चेहरा लम्बा और छाती चौड़ी है जो सदा फूली रहती है। रीढ़की हड्डी तो धनुषकी भाँति झुककर फिर खड़ी हो जाती है। संक्षेपमे अुसका परिचय दें, तो वह दुबला-पतला और बेहद लापरवाह मालूम होता है।

नाव सन्नाटेको चीरती हुअी आगे जा रही है। अब नावके पिछले भागमें आग नहीं सुलग रही है। मल्लाह थालियोंको साफ करते हुअे आपसमे बाते कर रहे है।

हवा ठंडी नही है। तो भी मैने गमछा ओढ़ लिया है। अुस अनंत अन्धकारको अुस असहाय स्थितिमें अपने शरीरको समर्पित करनेमें मुझे डर लग रहा है। हवा तेज है। कोमल नारी-स्पर्शकी भाँति नाव जलको कितनी मृदुलतासे स्पर्श करती जा रही है। अवर्णनीय मृदुलता, जैसे विराट नारीत्व अुस रात्रिमे पूर्ण रूपसे समाविष्ट है। अुस आलिगनमे मुझे चिर कालकी गाथाअें याद आती हैं। अनादि कालसे पुरुषका लालन-पालन करनेवाले नारीत्वकी कथाअें।

थोड़ी-सी दूरीपर दो चुरुट लाल-लाल जल रहे है; अुन्हें देखनेपर अैसा प्रतीत होता है कि मानो जीवन भार रूपमें वहाँ बैठा चिन्तामें निमग्न चुरुट पी रहा है।

"आगे कौन-सा गाँव आ रहा है?"—पडालने पूछा।

"कालदारी।"—रंगीने जवाब दिया।

"ओह, अभी बहुत दूर है।"

"आज सावधान रहो। नही-नही, सुविधा देखकर बात करो। क्यों मेरी बात नही सुनोगे?"—रंगीने अनुनय-विनय अेवं याचनाके स्वरमें कहा।

"रह-रहकर मिनकती है, छिनाल!"—पडालने कहा और अुसकी बगलमें चिकोटी काट ली।

"अुअी ! जान गअी ! !"—रंगी धीमेसे चीखी। फिर आकाशकी ओर मुँह अुठाकर वह अेकटक अन्धकारकी ओर देखने लगी। अुस स्पर्शको शाश्वत रूपमें बनाअे रखनेके लिअे संभतवः अुसने मुँह अुठाया था।

मुझे धीरे-धीरे नीद आ रही है। सारी नाव सो रही है और पानीपर खिसकती जा रही है। मुझसे थोड़ी दूरपर वे दोनों 'फुस-फुस' कर रहे है। मुझे नीद तो आअी है, लेकिन पूरी तरहसे नहीं। मुझे ज्ञात है कि नाव चल रही है, पानी खिसकता जा रहा है और पेड़ पीछे चले जा रहे है। नावको कोअी खे नही रहा है। नावमें सभी झपकियाँ ले रहे है। रगी मेरी बगलसे होकर पतवारके पास जाती है और वही बैठ जाती है।

"भाअी, कैसे हो ?"—रंगीने पूछा।

"तुम कैसी हो ?"—माँझीने पूछा।

"मेरे आदमीने कितने ही मुन्दर स्थान दिखाअे है। हम सिनेमा गअे है। जहाज देखें है। जहाज मानो साधारण नाव नही। वह हमारे गाँव जैसा बड़ा होता है। पतवार अुसका कहाँ होता है ? ओह, क्या बताअूँ ?" —अिस तरह रंगी बहुत देर तक अुसे विचित्र-विचित्र बातें बताती रही और वे बातें लोरियोंकी तरह मुझे सुलाती रही।

"अै लड़की, मुझे नीद आ रही है !"—माँझीने कहा।

"लाओ, पतवार तब तक मै सँभालती हूँ। तुम वहाँसे जाओ भाअी !" —रंगीने कहा।

नाव फिर धीरे-धीरे सरकती जा रही है। चुपचाप अुस निस्तब्धता-को बनाअे रखते हुअे रगीने अपने ठंडे स्वरमें गाना शुरू किया —

कहाँ है, वह मेरा, कहाँ है ?
खाना थालीमे रखकर
बैठे देखते रहनेसे
संध्याकी छायाकी भाँति
आँखें नही झपतीं।
आह, बिच्छूकी भाँति
डक मारनेवाली यह सर्द हवा.....

रंगीके कंठमे मर्द जैसा संगीत है। अुस गीतसे वहाँ लेटे हुअे सभी प्राणी अूँघने लगे। पिछले युगकी प्रेम-गाथाअे जैसे विचित्र रूपसे व्यथाअें भरकर अुस गीतमे कपित हो रही थी। जैसे वह गीत पानीकी बाढ़ हो और अुसमे अुफान आ जाअे तो सारा संसार अुसमें अेक छोटी-सी नौकाकी भाँति तैरने लगे। मानव जीवन जैसे अिस प्रणय और विपादके नशेमें चूर-सा हो रहा है।

मुझसे थोड़ी ही दूरपर पडाल सिरपर चूड़ियाँ बाँधे बैठा है। लेकिन मुझे अैसा प्रतीत होता है कि अुसके और रगीके बीचमे जैसे अेक युगका अन्तर है। वह छतपरसे अुतरकर नावके भीतर चला जाता है। मै अकेले चित होकर लेटा रहता हूँ। रंगी अुसी तरह गाअे जा रही है--

मंदिरके पीछे गलीमे
अेक औरत है।
बिना आवाज किअे
तुम अुसके पास चले गअे।
वह युवती कौन थी,
मेरे प्रियतम!
जवानीसे भरी मै ही तो थी।

मुझे नीद आने लगी है। रंगीका गीत जैसे कअी लोकोंकी यात्रा करके लौटता है और पुनः धीरे-धीरे मेरे हृदयको स्पर्श करने लगता है। और मुझे नींद आ जाती है। निद्रामें प्राकृतिक प्रणय मेरे सामने अुछलने लगता है। ग्रामीण कृषक युवतियाँ अपने प्रियतमोसे आँख-मिचौनी खेलती हुअी गानेमें निमग्न है। सर्वथा अनजान अेक स्वप्निल जगत मेरे सामने खुल जाता है। अुसमे रगी और पडाल कअी रूपोंमें घूम रहे है। धीरे-धीरे गानेका स्वर मेरे स्मृति-पटलसे तिरोहित होता जाता है और निद्रा मेरे मनके द्वारोको धीरे-धीरे बन्द कर देती है।

(२)

नावमें थोड़ी-सी हलचल होती है। मैं आँख मलते हुअे अुठ बैठता हूँ। नाव किनारेपर आ लगी है। दो लालटेनें लिअे मल्लाह घबराहटके साथ नावपर चढ़-अुतर रहे हैं। किनारेपर रंगीको दो व्यक्ति कसकर पकड़े हुअे हैं। अुनमे अेक गुमाश्ता है जिसके हाथमें कोड़ेकी तरह बटी हुअी मोटी रस्सी है। रंगीपर शायद खूब मार पड़ी है। मैं तुरन्त नावसे अुतरकर किनारे पहुँचता हूँ और दरियाफ्त करता हूँ कि हुआ क्या ?

—" वह चोर भाग निकला है। बहुत-सा माल अुड़ा ले गया है। अिसी शैतानने नावको यहाँ किनारे लगा दिया था। यही दुष्टा पतवार सँभाले हुअी थी "—गुमाश्ताने क्रोध और निराशापूर्ण शब्दोंमे कहा।

—" क्या अुठा ले गया है ?"—मैंने पूछा।

—" दो गुड़के और तीन अिमलीके बोरे। मैं जानता था। अिसीलिअे कहा था अुस लुटेरेको नावपर मत चढ़ाओ। मालिक सारा नुकसान मेरे सिरपर मढ़ेगा। न जाने कहाँ अुठा ले गया। "

—" बाबूजी, कालदारीके पास। "

—" चुप, शैतानकी बच्ची ! कालदारीके पास हम जगे हुअे थे। "

—" तो निदडवोलुके पास अुतारा होगा। "

—" यह अभी अिस तरह नहीं बताअेगी। कल अत्तिलिमें अिसे पुलिसके हवाले कर देंगे। . . . . . चढ़ो नावपर चढ़ो। "

—" बाबूजी ! बाबूजी ! ! मुझे यहीपर छोड़ दीजिअे। "

—" नखरे मत दिखाओ। चलो। चढ़ो। "—और गुमाश्ताने अुसे नावकी ओर ढकेल दिया।

दो मल्लाहोंने अुसे जोर लगाकर नावपर चढ़ाया।

—" सभी सोअक्कड जमा हो गअे है। माल-असबाबकी रक्षाकी किसीको चिन्ता नही। अुसके हाथमें पतवार सौपनेको किसने कहा था ? तुम लोगोंकी अकल मारी गअी है। " —गुमाश्ता सबपर अपना क्रोध अुतारकर अपने कमरेमे चला गया।

रंगीको छतपर चढ़ाया गया। अेक माँझीको अुसके पहरेपर तैनात कर दिया गया ताकि वह भाग न सके। मै भी छतपर चढ़ गया।

नाव फिर रवाना हो गअी। मैंने चुरुट जलाया।

—"बाबूजी, अेक चुरुट दिलाअेंगे?"—रंगीने घनिष्ठता जोड़ते हुअे कहा।

अुसने चुरुट जलाया और मल्लाहसे पूछा—"हे भाअी! मुझको पुलिसके हवाले करनेसे क्या फायदा?"

मॉझीने जवाब दिया—"गुमाश्ता नही छोड़ेगा।"

मैंने पूछा—"पडाल तुम्हारा पति है क्या?"

—"हॉ, वह मेरा आदमी है। —रंगीने जबाव दिया।"

—"अिसे वह भगा ले गया था, जी! अिससे अुसकी शादी नही हुअी। अुसके पास अेक औरत और है। अब वह कहाँ है री?"—मल्लाहने पूछा।

—"कोव्वूरुमें है। अब भी अुसकी देहमें और जवानी कायम है।...... मेरी जैसी मार खाअी होती, तो वह भी मेरी ही अैसी हो गअी होती।"

—"तो तुम अुसके साथ क्यों रहती हो?"—मैंने पूछा।

—"वह मेरा आदमी है जी!"—रंगीने कहा, मानो सारा गुर अुसी शब्दमे हो।

—"तो वह अुस औरतके पास जाता है?"

—"मेरे विना वह नही रह सकता। वह राजा आदमी है मालिक! वैसा आदमी कही नही मिलेगा।. . . . ."

बीचमे मल्लाह बोल अुठा—"बाबूजी, अुसकी करतूत आपको नहीं मालूम। अेक वार अुसने अिस रगीको झोपड़ीमे वन्द करके आग लगा दी थी। यह बेचारी जलकर भी वच गअी। अिसका भाग्य वहुत बलवान है।"

—"वाबूजी, अुस समय वह मिल जाता, तो मै अुसका गला ही घोंट देती। जलकर मै अेक खंभेपर वेहोश पड़ी थी बाबू!"—और वह मुड़कर चोली अुठाती खड़ी हो गअी। मुझे अेक बड़ा सफेद दाग अुस अन्धकारमें भी अुसके शरीरपर साफ दिखाअी दिया।

—“अितनी यातनाअें पानेपर भी अुसके पीछे पागलकी तरह तुम क्यों पडी रहती हो?”—मैंने पूछा।

—“करूँ क्या? जब वह सामने आ जाता है, तो सब भूल-भालकर मेरा दिल पिघल जाता है। वह कितना दयनीय होकर अुस वक्त बोलता है। आज संध्याको जब कोव्वूरुसे हम चले तो रास्तेभर वह गिड़गिड़ाता रहा—रंगी, चलो, अिस नावपर चढे और कुछ माल अुतार लें। मेरे बिना यह काम संभव नही था। पगडंडियोंसे होकर हम मड्डुगु पहुँचे।”

—“माल कहाँ अुतारा?”

—“मुझे अिसका पता नही है जी!”

हँसते हुअे मल्लाहने कहा—“चोरकी नानी! हमारी आँखोमे भी धूल झोंकना चाहती है!”

रगीका चेहरा देखनेकी मेरे मनमे बड़ी अुत्सुकता थी। लेकिन अुस निविड़ अन्धकारमे वह जादूगरनीकी भाँति अदृश्य-सी ज्ञात होती थी।

नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही है। अर्धरात्रिके बीत जानेपर हवा ठंडी होती जा रही है। पेड़के पत्ते हिल रहे है। मल्लाह नावको खेते जा रहे हैं। मुझे अब नीद नही आ रही है। पहरा देनेवाला व्यक्ति थोड़ी देरमे ही झपकी लेता-लेता सो गया है। रंगीने शायद अब भाग निकलनेका प्रयत्न बिलकुल छोड दिया है। वह मजेसे बैठी-बैठी चुरुट पी रही है।

—“तुम्हारी शादी नही हुअी?—मैंने पूछा।”

—“नहीं, बचपनमें ही पडाल मुझे भगा ले आया था।”

—“तुम्हारा घर कहाँ है?”

—“अीडुपालेम। . . . अुस समय मुझे यह नही मालूम था कि यह पियक्कड़ है। . . . . अब तो मै भी पीती हूँ। वैसे पीना कोअी गुनाह तो नहीं है, लेकिन पीनेके बाद नशेमे आनेपर वह मेरी चमड़ी अुधेड़ देता है, अिसीका मुझे दुख है।”

—“तो अुसे छोड़कर चली क्यों नही जाती?”

—"मार पड़नेपर तो मैं भी यही सोचने लगती हूँ। लेकिन वैसा आदमी दूसरा नही। आप नही जानते, जब वह पिअे नही रहता है, अेकदम मक्खनकी तरह कोमल रहता है। मेरे बिना अुसका दिल टूट जाअेगा और वह मर जाअेगा।"

अुसकी बाते मुझे बड़ी विचित्र मालूम हुअी। मेरी समझमे नहीं आया कि अुन दोनोंके बीच यह कैसा बन्धन या सम्बन्ध है ?

रंगीने फिर कहना शुरू किया—हम दोनोने बहुत कोशिश की कि कोअी-न-कोअी काम ठीकसे जमा ले। लेकिन हम असफल ही रहे। आखिर अिस तरह चोरी करनेपर मजबूर हुअे। मेरी अम्मा, अभी परसों ही मरी है। वह मुझे बहुत गालियाँ देती थी।.... अेक दिन पडाल मेरी झोपडीमे अेक और औरतको भी ले आया था। वह अुसे भी मेरे साथ ही अपनी झोपड़ीमे रखना चाहता था। मैंने अुस औरतकी अैसी मरम्मत की कि पडालने बिगड़कर मुझे भी अैसा मारा कि मेरी भी हालत खराब हो गअी। फिर वह अुसके साथ चला गया।.... फिर आया तो मैंने अुसे खरी-खोटी सुनाअी और घरमे घुसने नही दिया। तब देहलीके पास बैठकर वह बच्चेकी तरह रोने लगा। यह देखकर मेरा दिल पिघल गया। मै अुसके पास गअी, तो मुझे गोदमें लेकर अुसने मेरी माला (हार) माँगी। मेरे पूछनेपर अुसने बताया कि वह औरत अिसे चाहती है। मारे गुस्सेके मै अपनी सुध-बुध खो बैठी। होश आनेपर मै जी भरकर अुसे कोसती रही। अिसपर वह रोने लगा। रोते-रोते वह कहने लगा, अुसके बिना मै जी नही सकूँगा। मेरे गुस्सेका पारा फिर तो और चढ़ गया। देहलीपरसे अुसे ढकेलकर मैंने दरवाजा बन्द कर दिया। दरवाजा खटखटाते-खटखटाते जब वह थक गया तो चला गया। अुस दिन मुझे बहुत देरतक नीद नही आअी। मै झपकियाँ ले रही थी कि अितनेमे झोपड़ीमें आग लग गअी। बाहरसे साँकल लगाकर अुसने झोपड़ीमें आग लगाअी थी। कोअी भी मददके लिअे नही आया। आधी रातका समय था। मेरा सारा शरीर झुलस गया। दरवाजा ढकेलते-ढकेलते मेरा होश जाता रहा। अितनेमे बाहरसे किसीने दरवाजा खोला। दूसरे दिन पुलिस अुसे पकड़ ले

गअी। . . . . . . मुझसे पूछा, किसपर सन्देह है ? मैंने साफ कह दिया कि पडालपर मेरा कोअी सन्देह नही है। वह छूटकर संध्या समय मेरे पास आया और फूट-फूटकर रोने लगा। वह जब भी पीता है, जरूर रोता है। बाकी समय अुसे रोना नही आता। हमेशा हँसता ही रहता है। अेक बूँद शराब गलेमे अुतारी नही कि बस बच्चेसे भी ज्यादा रोने लगता है।" मैंने अपनी माला अुसे देते हुअे पूछा कि तुम अुसके साथ चोरी करनेमें भाग ही क्यों लेती हो ?

—"क्या करूँ ? बताअिअे ?"—वह गिड़गिड़ाने लगता है।

—"तुमने कहा था कि वह तुम्हें विजयनगर आदि शहरोंमे ले गया था।"

—"वह सब सरासर झूठ है। मेरे अूपर मल्लाहोंका पूरा विश्वास है। अिसके पहले भी अिस नावपर दो बार और चोरी हो चुकी है।"

—"तुम्हें पुलिस पकड़ेगी तो क्या करोगी ?"

—"कुछ भी नहीं करूँगी, मुझे पकड़कर वह करेगी क्या ? अेक दिन पीटेगी, दूसरे दिन छोड देगी। मेरे पास चोरीका माल तो है ही नहीं। क्या मालूम कौन ले गया है ?"

—"पडालको भी तो आखिर पकड़ेगी। वह चोरीके माल सहित पकड़ा जाअेगा तब ?"

—"वह नही मिलेगा। अिस समय तक माल बिक भी गया होगा। अुसे बचानेके लिअे ही मै नावपर रहती हूँ।"—अुसने गहरी साँस ली। फिर धीमे स्वरमे कहने लगी—"यह सब माल अुसी औरतको प्राप्त होगा। अुसपर जबतक अुसका मन लगा रहेगा, तब तक अुसे छोड़ेगा नही। मुझे ये सब तकलीफे अुसीके कारण सहन करनी पड़ रही है। वह चुड़ैल मेरा खून पी रही है।"

रंगीकी अिन बातोंमें मुझे अुत्तेजनाकी गंध नही लगी। बल्कि मुझे यह लगा कि अुसने पडालको यथार्थ रूपमें स्वीकार किया है। पडालके लिअे वह सब कुछ करनेको तैयार है। वह कोअी आदर्श नारी नही, आदर्श पतिव्रता भी नहीं, प्रेमिका भी नहीं। वह है कअी विचित्र, संकुचित भावनाओं, अीर्ष्या, अनुरागों और भी अनेक तत्वोंसे परिपूर्ण नारीका अेक हृदय। तो भी

वह हृदय सबका परिणाम बनकर अेकपर लगा हुआ है। अपने पुरुषके लिअे वह निरन्तर तप रही है। अुसका कोअी निश्चित अभिप्राय नहीं है कि अुसका पुरुष सज्जन बनकर नीति-मार्गपर चले। अुसने पडालको अुसके सभी गुणों-अवगुणोंके साथ स्वीकार किया है।

तेज हवा बहनेके कारण नाव तेजीसे आगे बढ़ी जा रही है। प्रातः-काल हुआ ही चाहता है। थकावटको दूरकर दुनिया जागने जा रही है। कहीं-कहीं खेतोंपर पहरा देनेवाले किसान मेंड़ोंपर चलते दिखाअी दे रहे हैं। भोरके तारोंका अभी अुदय नहीं हुआ है। रंगी अव्यक्त भावनाओंमें विभोर होकर घुटने मोड़े पड़ी है और अेकटक अनन्तकी ओर निहार रही है।

"वह मेरा है! जहाँ कही भी क्यों न घूमे-फिरे, मेरे पास आनेसे वह नहीं रह सकता।"——मन-ही-मन वह अपनेको समझा रही है। अुसमें अेक आशा, विश्वास तथा धीरज झलक रहा है। यह वाक्य अुसके समूचे जीवनका निचोड़ प्रतीत होता है।

मैं भक्ति, भय तथा दयासे अिस शब्दको सुनकर चुप रह जाता हूँ। सबेरे तक हम दोनों अुसी तरह बैठे रहते हैं।

नावपरसे अुतरनेके पहले अपनी जेबसे अेक रुपया निकालकर मैं अुसके हाथपर रख देता हूँ और जल्दी-जल्दी अपने कदम अुठा देता हूँ। अुसके अुत्तरकी प्रतीक्षामें खड़ा नहीं रहता।

अुसके बाद अुसकी हालत क्या हुअी, मुझे नहीं मालूम।

* * *

४.

ममता

—श्री टी. गोपीचन्द

'विप्लव' कवि नामसे विख्यात श्री गोपीचन्द स्वर्गीय श्री त्रिपुरनेनि रामस्वामीजी चौधरीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। कल्पना और आदर्शोंमें ये अपने पितासे भी कहीं आगे बढ़ गअे हैं। वकालतकी परीक्षा अुत्तीर्ण करनेपर आपने वकालत नहीं की। अँग्रेजी और तेलुगु साहित्योंका गहरा अध्ययन करके अुसमें लिखना भी प्रारम्भ किया। आपका कथन है कि भावोंमें विप्लवके बिना देशकी मुक्ति नहीं है। आप 'कला कलाके लिअे नहीं, बल्कि समाजके लिअे' को मानते हैं। आन्ध्रके जनपदोंके जीवनका वास्तविक चित्रण आपकी रचनाओंकी विशेषता है। ये आन्ध्रमें लेखक, कहानीकार अेवं अुपान्यासकारके रूपमें ही नहीं, बल्कि सिने-लेखक अेवं निर्देशकके रूपमें भी विख्यात हैं। अबतक आपके सात कहानी-संग्रह, तीन अुपन्यास और दो आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

"असमर्थुनि जीवयात्रा" और "परिवर्तन" आपके प्रसिद्ध अुपन्यास हैं।

* * *

ममता

बूढ़ा जोगय्या लाठी टेकते हुअे नहरके किनारे जामुनके पेड़के नीचे आ खड़ा हुआ। सूर्यकी किरणोंसे बचनेके लिअे माथेपर हाथ रखकर अुसने खेतकी ओर दृष्टि दौड़ाअी। खेतकी मेंड़ोंपरके सभी बबूलके पेड़ोंसे वह चिर-परिचित है। वे पेड़ भी जोगय्याके हमअुम्र हैं और बढ़ते जा रहे हैं। हाल ही में अुनमेंसे दो वृक्षोंको हल बनानेके निमित्त कटवा डाला गया था। अुन पेड़ोंके कटवा डालनेके कारण जो जगह खाली हो गअी है, वह जोगय्याको किसी अभावकी याद दिलाती है। अुस स्थानको देखनेपर वह अपने दो जवान बेटोंके खो जानेका अनुभव करता है।

वृद्ध जोगय्या गहरी साँस लेकर सिरपर बँधे कपड़ेको बिछाकर जामुनके पेड़के नीचे बैठ गया। अुसके तीन पुत्र हैं। बड़ा पुत्र नरसप्पा खेतका काम देखता है। द्वितीय पुत्र कपड़ेकी दूकानसे कुछ कमाता है। तीसरा लड़का वेंकटसुब्बय्यया अँग्रेजी पढ़ रहा है। अिनके अलावा दो पुत्रियाँ भी हैं। अुसके सभी बच्चे अुससे प्रेम करते हैं। जोगय्या अपने पुत्र-पुत्रियोंको देखे बिना भी रह सकता है। किन्तु अपने खेतको देखे बिना अुसे चैन नहीं मिलता। जोगय्याकी आन्तरिक अिच्छा है कि अुसकी सारी सन्तानें खेतका ही काम देखें। क्योंकि अुसकी दृष्टिमें वे सभी कृषि-कार्यके लिअे ही पैदा हुअे हैं। अिसलिअे वह अपने द्वितीय पुत्रकी कपड़ेकी दूकानके विषयमें

शायद जलनका अनुभव करता है। कभी-कभी वह कहा करता है, लड़का तो बुद्धिमान है, पर पत्नीकी बातोंमें आकर वह अपने निजी कामको भूल गया है। जोगय्याके यहाँ अिस समय सौ अेकड़ जमीन है। अुसमेंसे अधिकांश भाग अुसीने कमाया है। अिसलिअे अुसपर जोगय्याके मनमे गर्वका अनुभव होना स्वाभाविक ही है। खेतको वह अपने प्राणोके समान मानता था। अेक बार जोगय्याके विपक्षियोंने अुसके खेतमे आनेवाले पानीको रोक दिया, तो जानकी भी परवाह किअे विना अुसने अपने हाथों बाँधको तोड़ दिया था। और अिस तरह अुसके खेतमें पानी आने लगा। फिरसे कोअी पानीका आना रोक न दे, अिसलिअे वह लाठी लेकर मेंडपर खड़ा हो गया। अुसके अुग्र रूपको देखकर सारा गाँव काँप गया था। दरारोसे भरा हुआ अुसका खेत जब गटागट पानी पीने लगा तो वह अैसा खड़ा हो गया था मानो माता अपने शिशुको स्तन्य-पान कराते हुअे परवशतामे बैठी हो। जोगय्याके लड़के जब बड़े हुअे तो अुन लोगोंने अुससे कहा था—"अब तुम बूढ़े हो गअे हो। अब अीश्वरका भजन करो और आराम करो। हमारे रहते तकलीफ क्यो अुठाते हो?" अैसी सलाह देनेवाले बेचारे क्या जानें कि खेतीके कार्य करते रहनेमे जोगय्याको कैसा असीम मुख प्राप्त होता है।

अेक मास पूर्व जोगय्याकी पत्नी बीमार पडी। अुसके दस दिन पहलेसे ही वह कराह रही थी, पर अिसपर जोगय्याने कोअी ध्यान नहीं दिया। यदि कोअी अिस ओर अुसका ध्यान आकृष्ट करता तो वह यह कहकर टाल देता कि रोग मनुष्योंको ही होता हैं, वृक्षोंको नही। अुसने स्वप्नमें भी यह नही सोचा था कि अिस प्रकार अचानक हमला करके बीमारी अुसकी पत्नीको अुठा ले जाअेगी। अिसलिअे जब अुसके बड़े पुत्रने कहा—"तुम घरपर ही माताकी देखभाल करते रहो, मैं सिचाअीका काम देख लूँगा।" तो जोगय्या घरपर नही रह सका। अुस समय खेतके लिअे आवश्यक पानीका मिलना भी कठिन था। अुसपर यदि कोअी आकर नहरकी धाराको अपने खेतमें बहा ले तो अुसका बडा पुत्र देखता रह जाअेगा। वह बुद्धिमान है, परन्तु दूसरोंके सामने दबता है। खेतको पानी नहीं मिला तो वह सूख ही जाअेगा। फिर लाख कोशिश भी करें, फायदा ही क्या है? यह सोचकर जोगय्य

गाँवके वैद्यसे अपनी पत्नीको दवा दिलाकर खेतपर चला गया। जोगय्या गाँवसे बाहर भी पहुँच नही पाया था कि अुधरसे अुसके पुत्र द्वारा भेजा गया नौकर दौड़ता आया और बोला --"शत्रु भाले-लाठी लेकर लड़नेको तैयार है, आपका पुत्र नरसय्या देखकर खड़ा रह गया है।"

जोगय्या द्रुत गतिसे खेतकी ओर बढा। अुसने नहरके बाँधको तोड़कर पानीको अपने खेतमें बहा लिया। विपक्षी दल देखता रह गया। अपने खेतमें बहती धाराकी ध्वनिको सुनते ही जोगय्या प्रसन्नताके मारे सब कुछ भूल-सा गया। बीच-बीचमे अुसके पुत्र नरसय्याने अपनी माँकी बीमारीका अुसे स्मरण दिलाया। पर पूरे खेतकी सिचाअी समाप्त होने तक घर जानेसे अुसने अिन्कार कर दिया। लाचार होकर नरसय्याको घर लौट जाना पडा।

प्रातः होते ही अुसे खबर दी गअी कि वह घर जाअे। अुसे मालूम था कि अुसकी पत्नीका सम्बन्ध अुससे सदाके लिअे समाप्त हो गया है। लेकिन खेतका वह थोड़ा-सा भाग अभी सिंचाअीसे बाकी रह गया था। अुसे छोड़कर वह बीचमे घर नहीं जा सका। खेतकी सिचाअीका कार्य पूरा करके जोगय्या बडी आतुरताके साथ घर पहुँचा। अुसने देखा कि अुसकी पत्नी अन्तिम घड़ियाँ गिन रही है। अुस हालतमें भी वह घर-गृहस्थीकी बातें कह रही थी। वह बडबडा रही थी--"तीसरे पुत्रकी शादी देखना चाहती थी, परन्तु तुमने मेरी बात नही सुनी। दूसरी बहू तो मेरी बात सुनती ही नही, अिस-पर अुसने अपना क्रोध प्रकट किया। बड़ी बहूको मक्खन निकालना नही आता था। मै ही मथकर मक्खन निकालूँगी।" यह कहते-कहते वह अुठनेका प्रयत्न करने लगी। अिस बातका अन्तिम घड़ीमें भी अुसे बड़ा दुख था कि अुसके मरनेके बाद अिस गृहस्थीकी क्या दशा होगी।

जोगय्याने सान्त्वना देते हुअे कहा--"अिन सब बातोंसे फायदा ही क्या है। तुम निश्चिन्त रहो।" किन्तु अुसकी पत्नी अन्ततक कुछ-न-कुछ फुसफुसाती ही रही। अन्तमें अधिक पीड़ाका अनुभव करते हुअे अुसने जोगय्याके हाथको अपने हाथमे लिया और अुसके प्राण-पखेरू सदाके लिअे अुड़ गअे।

× × × ×

जोगय्याकी पत्नीका देहान्त हुअे पूरा अेक महीना हो गया है। पत्नीकी बीमारी तथा अुसके प्राणोका ख्याल न करके जोगय्या जिस खेतकी रक्षामें लगा हुआ था, अुस खेतमे कुली आज घास छाँट रहे है। अुनमे औरतें हैं, पुरुष है—सब आनन्दसे गा रहे है। जोगय्या जामुनके पेड़से सटकर बैठा है। पहले जैसे अुसका मन अब स्थिर नही है। अपनी पत्नीके मरते समय अुसने जो पारिवारिक ममता दिखाअी, अुसे भूलनेका प्रयत्न करनेपर भी वह भूल नही पा रहा है। वह जानती थी कि कुछ मिनटोंमे अुसके प्राण निकलनेवाले है। अुस समय वह निद्रासे जगी जैसी बाते करती रही। अिस संसारका नाता सदाके लिअे छोडनेवालीको अिन सबसे क्या मतलब? अिसी प्रकार सब लोगोंको अेक-न-अेक दिन अिस संसारके नातेको तोड़ना पड़ेगा। तो फिर अिससे अितनी ममता ही क्यों रखी जाअे?

खेतसे गाना सुनाअी देने लगा। जोगय्याने आँखें खोलकर अेक बार खेतके चारो ओर दृष्टि दौडाअी। अुस दिन अुसका पोता भी अुसके साथ खेतमे आया था। वह पूछने लगा—"दादा! हमारा खेत कहाँ है?" सौ अेकड़ जमीनके विशाल खेतको दिखाकर जोगय्याने कहा—"तुम्हे जो कुछ भी दिखाअी दे रहा है, वह सब हमारा ही है।" यह कहते हुअे अुसे मनमे गर्वका अनुभव होने लगा। जब वह अिस गाँवमें बहुत समय पहले अपने बैल बेचने आया था और अुसने अुस गाँवके जिस आसामीको बैल बेचे थे, अुसीका बादमें वह दत्तक दामाद बन गया था। अुसके चरित्र तथा व्यवहारसे प्रसन्न होकर अुस आसामीने जोगय्याको अपनी पुत्री देकर अुसको अपने घरमे रख लिया था। अुस दिनसे जोगय्या दिल लगाकर काम करने लगा। वह जब अिस घरमे आया था, तब अुसके ससुरकी जायदाद पाँच अेकड़ मात्र थी। जोगय्याने अपने ससुरके देहान्तके समय तक सौ अेकड जमीन अिकट्ठी कर ली थी, परन्तु जमीनकी वृद्धि करते समय अुसे जो आनन्द तथा अुल्लास था, वह आज नही है। रोज खेतपर जाकर कुली और नौकरोंको डाँटना, खेतके चारों तरफ देख आना, अुसका दैनिक कार्यक्रम हो गया था। पहलेका आनन्द तो आज नही है, परन्तु यह आदत मात्र शेष रह गअी थी। जोगय्या जामुनके वृक्षसे हटकर अुसी तरह बैठा रहा।

सूर्यकी किरणें जामुनके पत्तोके बीचसे जोगय्याके मुख-मण्डलपर नाचने लगीं। आँख खोलकर देखनेपर अुसने पाया कि कुली खेतमे नही है। सब कुली पेड़ोसे बँधी भोजनकी गठरियोंको खोलकर खानेका अुपक्रम कर रहे है। कुछ लोग भोजन समाप्त करके मेड़ोपर लेटनेकी तैयारीमे है।

जोगय्याने गरजते हुअे कहा—"अुठ जाओ!" अिसपर सब कुली यह कहकर हँसने लगे—"अिस बुढापेमें भी जोगय्या कैसे फुर्तीले है।" अेकने कहा—"अभी खाने बैठे है मालिक!" धीरे-धीरे अेक-अेक करके सभी कुली खेतमे चले गअे।

जोगय्याने अेक बार गाँवकी तरफ देखा। रोज दुपहरके समय अुस जामुनके वृक्षके नीचे खानेकी आदत है अुसे। अुसकी पोती प्रति दिन वहीं भोजन लाकर खिलाती है। अुसने दूरपर भोजन लेकर आती हुअी अपनी पोतीको देखा। अन्धेरा छाया हुआ है। पानी बरसे तो क्या होगा! अुसे अपने भीग जानेकी चिन्ता नही है। पर यदि अुसकी पोती भींग जाअे तो! अुसे स्मरण हो आया कि वर्षाके अधिक होनेपर वे दोनों कटहलके वृक्षके नीचे बनी झोपड़ीमे जा सकते है। वह झोपड़ी अुस समयकी बनी है, जब अुसने अिस खेतको खरीद लिया था। तबसे वह धूपमे सूखती, वर्षामें भीगती हुअी अुसी प्रकार खड़ी है।

"दादा! भोजन लाअी हूँ।" पोतीने भोजन-पात्रको नीचे रखकर अुसपर बँधे कपडेको हटाया और यह कहकर वह खेतमे दौड़ गअी—"दादा! जब तक तुम भोजन करते हो, तबतक मै खेतमे हो आअूँगी।" जोगय्या धीरेसे अुठा और नहरके पास जाकर अुसने हाथ-मुँह धोया और फिर भोजन करने बैठ गया।

× × ×

खेतमे कुली घास काट रहे थे। वह लड़की कुछ देरतक मेडपर खड़ी रही। सब कुली "छोटी साहिबा" के सम्बोधनसे अुसका परिहास करने लगे। लहँगेको पैरोसे टकरानेसे बचाते हुअे अुसे हाथमे पकड़कर खेतकी मेड़परसे वह अपने दादाकी ओर दौड़ने लगी। रास्तेमे अुसका पिता मिला। अुसने पूछा, "जरीका लहँगा पहन आअी हो, खेतमें अुसपर कीचड़ नहीं लगेगा?"

लड़कीने जवाब दिया—"दादाने अिसे पहनकर आनेको कहा था। अिस लहँगेको पहने हुअे मुझे दादा देखना चाहते है।"

"तो दादाने नही देखा?"

लड़कीने अुत्तर दिया—"भूल गअे है।"

"बेटी! दादाजी भोजन कर चुके?"

"परोसकर आअी हूँ।"

"वे कहाँ है?"

"वही जामुनके पेड़के नीचे।"

दोनों जामुनके वृक्षके पास चले गअे। आकाशमें अन्धेरा फैलता जा रहा था। वर्षा होनेकी सम्भावना थी। नरसय्याको यह पसन्द नही था कि अुसके पिता साठ वर्षकी आयुमे भी खेतका काम देखनेका परिश्रम अुठाअे। खेतपर भोजन मँगाना तो अुसे कतअी पसन्द ही नही था। नरसय्या अुस गाँवकी पंचायतका मुखिया है। वह प्रतिष्ठाके साथ जीवन बिताना चाहता है। पर कहनेसे फायदा ही क्या है? अुसकी बात अुसका पिता माने तब न? जोगय्या कहता है, खेतपर भोजन करने मात्रसे प्रतिष्ठा घट नही जाती।

मेघ गरजने लगे। बिजली कौधने लगी। वर्षाकी बूँदें 'टप-टप' करके गिरने लगी। द्रुत गतिके साथ नरसय्या जामुनके वृक्षके पास आ गया। अुसके पिता वही पेड़से सटकर बैठे हुअे थे। लाठी और पगड़ी अेक ओर पडी हुअी थी। आँखें मूँदकर जोगय्या गहरी चिन्तामें मग्न दिखाअी दे रहे है। मनुष्य सदा सोचनेवाला प्राणी है। चाहे आवश्यकता हो या नहीं, परन्तु अुसके सोचनेकी क्रिया बन्द नही होती। जोगय्या अपनी मुट्ठीको नाकसे सटाअे अुसमें रखी हुअी वस्तुकी गन्ध ले रहे हैं। अुनकी मुट्ठीमें क्या है? फूल? नही। तम्बाकू? वह भी नही। मिट्टी......बस......केवल धरती माताकी मिट्टी, जामुनके वृक्षके नीचेकी काली मिट्टी।

नरसय्याने व्यग्र चित्त होकर पुकारा—"पिताजी! ....पिताजी!" बड़ी नीरसताके साथ अुसके पिताके मुँहसे 'बेटा' यह शब्द निकला। मुट्ठी ढीली होकर हाथ झुकने लगा और मिट्टी जोगय्याके हाथसे गिरने लगी। जोगय्याकी वह शरीररूपी मिट्टी मिट्टीमें मिल गअी। "पिताजी! ...पिताजी...!"

पिताजीसे फिर अुत्तर नही मिला।

* * *

५.

सपनेकी सचाअी

—श्री कोडवटिगंटि कुटुंबराव

आप द्वितीय अुत्थान-कालके लेखकोंमें अग्रणी माने जाते हैं। आप बहुमुखी प्रतिभाके लेखक हैं। आप वैज्ञानिक दृष्टिकोणके माध्यमसे जीवनको समझनेका प्रयत्न करनेवाले प्रज्ञाशाली हैं। अन्य लेखकोंमें निराशा-निरुत्साह दिखाअी देता है तो आपमें आशा और अुत्साह दिखाअी देते हैं। वास्तविक जीवनके आनन्दका आस्वादन कराते हुअे आपने अपने साहित्यके माध्यमसे युवकोंको अपने अुत्तम भविष्यका निर्माण करनेके लिअे आवश्यक साहस प्राप्त करनेकी दिशामें प्रयत्न करनेका सन्देश दिया है। सामाजिक अपराधों अेवं अन्यायोंका सामना करनेमें आप सदा तत्पर रहते हैं और अुस गन्दगीको दूरकर स्वस्थ बनानेकी आकांक्षा रखते हैं। आपकी कहानियोंमें तीक्ष्ण विमर्शना-दृष्टि गर्भित होती है। आपने सैकड़ोंकी संख्यामें कहानियाँ लिखी हैं। आपने अनेक अुपन्यास लिखें हैं। अुनमें "चदुवु", "प्रेमिंचिन मनिषि", "आडजन्म", "अरुणोदयम्" और "पंच कल्याणि" मुख्य हैं। आपके कअी रेडियो रूपक रेडियोसे प्रसारित हो चुके हैं। अुनमें "सवति तल्लि"(सौतेली माँ)"औरान मंचू" अित्यादि अनेक भाषाओंमें रूपान्तरित हो प्रसारित हो चुके हैं। विज्ञानशास्त्र (अेम. अेस. सी.) का अध्ययनकर आप वैज्ञानिक नहीं बने, बल्कि आपने लेखक बनना अधिक पसन्द किया। फिर भी आपकी रचनाओंमें सर्वत्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण देखा जा सकता है। "हिरोशिमा", "मानव वंशवृक्ष", "ग्रहोंकी अुत्पत्ति" आपके अँग्रेजी अनुवाद हैं। "प्राणी और विश्व" अित्यादि मौलिक वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं। आपकी गणना प्रगतिशील लेखकोंमें की जाती है।

* * *

सपनेकी सचाओ

किसीके द्वारा जगानेका अनुभवकर जोगाराव बिस्तरपरसे अुठ बैठा। सारा वातावरण सुनसान है। सावधानीसे देखनेपर केवल लीलाके साँस लेनेकी ध्वनि सुनाओी दे रही है। निचले हॉलकी घड़ीने तीनकी घण्टी बजाओी।

जोगाराव अपने सपनेका स्मरण करते हुअे पुनः बिस्तरपर लुढ़क गया। फिरसे निद्रा आनेकी सम्भावना अुसे प्रतीत नहीं हुओी।

अुसके सपनेमें कोओी विशेषता नहीं है। न मालूम क्यों दस वर्षके पूर्वकी घटनाअें पुनः स्वप्नमें दिखाओी दी हैं। कठिनाअियोंसे भरे वे दिन, वह झोपड़ी, चारपाओी, और कागजकी हरिकेन लालटेन! अुस समय वह लीलासे अपरिचित था। लीलाका नाम भी अुस समय नहीं जानता था। तो आज स्वप्नमें वह दिखाओी दी। जोगारावने स्वप्नमें अुस झोपड़ी, टूटी-फूटी चारपाओी, हरीकेन लालटेन और लीलाको बड़े प्रेमसे देखा था। स्वप्नको देखते समय अुसका मन कैसा निर्मल था!

अपनी गरीबीमें जोगाराव पत्र-पत्रिकाओंमें लेख और कहानियाँ भेजा करता था। अुसके आलोचनात्मक लेखोंकी प्रशंसा करनेवाले पाठक भी थे। लेखक और समीक्षकके रूपमें जोगारावने थोड़ी-सी ख्याति प्राप्त की थी। अुन दिनों अपनी किसी कहानीके लिअे पारिश्रमिकके रूपमें पाँच रुपये 'पत्रं-पुष्पं' प्राप्त होते तो अुसे कैसा आनन्द प्राप्त होता? वे पैसे जोगारावके

हाथोंमें जादूका खेल दिखाते। प्रति दिन चार आने पैसोंसे अपना पेट कैसे भरें? कअी महीनों तक यही क्रम चलता रहा। वह स्वयं ही भोजन बनाता, अिसमें प्याज, मिर्च, नमक और तेल मिलाकर कुछ खाता, फिर मट्ठेमे नमक और नीबू मिला गलेसे नीचे अुतारता—अत्यन्त आनन्द होता। कम पैसोमें अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके अन्वेषणमें ही वास्तविक आनन्द है। जोगाराव अिस आनन्दसे परिचित था। परन्तु अुसे पहचान नहीं पाया।

जोगाराव और लीलाके शहरमें आनेके अुपरान्त अुन्हें कअी दिनों तक अच्छा भोजन अुपलब्ध नही हुआ। चार अिड्ली, साम्बार, आधा कप काफी भी मिल जाता तो अुसके लिअे काफी था, किन्तु अितना भी प्रति दिन नसीब होना कठिन था। रातको कैरियरमें पाँच आनेका भोजन मँगाकर दोनो अपना पेट भरते।

लीलाको सिनेतारिका बनानेका स्वप्न यथार्थ होनेपर भी, अपनी दूसरी कामनाकी पूर्तिकी कल्पना जोगारावने कम की थी। दोनों स्वप्न साकार हुअे। सत्य निकले। लेकिन जोगारावको अिस रात्रिके समय आनन्दकी प्राप्ति क्यों नही है? अिस बातकी वह आत्म-परीक्षा करने लगा।

जोगारावको अिस समय जो दुखी बनानेवाली स्थिति है, अुसका "व्यथा" जैसा बड़ा भाव भी निकाला नही जा सकता है और न लिवरकी गड़बड़ी जैसा छोटा अर्थ ही। अिस असन्तुष्टिका कारण यदि लीलाको माना जाअे तो अिस असन्तोषको दूर करनेमे जोगारावके सामने कअी रास्ते है। लेकिन अुन रास्तोंका अन्वेषण करके जोगाराव आत्म-वंचना नही कर सकता है। लीला और अुसके बीचका जो सम्बन्ध है, वह पिछले तीन-चार सालोमें बहुत कुछ बदल गया है। यह सत्य होते हुअे भी लीलाको दोष देना निरर्थक है। क्योंकि गत आठ वर्षोंसे वह लीलाका कअी प्रकारसे ऋणी बना हुआ है।

लीला किसी व्यक्तिकी पत्नी नही। वह वेश्या परिवारकी है। अुसके माता-पिता जीवित है। लेकिन अुसके पिताने लीलाके साथ पिता जैसा व्यवहार नही किया। १२ वर्ष पूरा होनेके पहले ही अुसने लीलाको बाजारमें रखा। अुसमें मानसिक वांछनाओं (भौतिक कामनाओं) के अुत्पन्न

होनेके पूर्व ही घृणित अिन्द्रियानुभूति अुद्भव होनेके कारण वह पुरुषोके प्रति द्वेष करना मात्र जानती है। पुरुषोंकी मित्रतासे वह अनभिज्ञ है। अिस अभावकी पूर्ति जोगारावने की। अुसके द्वारा लीलामे स्त्रीत्व परिपूर्णत्वको प्राप्त हुआ। लीलाने जोगारावके प्रभावको पूर्ण रूपसे स्वीकार ही नहीं किया, अपितु अुसे अिस बातका गर्व भी हुआ कि मानो विश्वका अेक श्रेष्ठ पुरुष अुसका अपना हो गया है। अुसके अूपर विश्वास रखकर अुसके साथ नरक तक भी जानेका जोगारावने निश्चय किया। अितना होते हुअे भी लीला कभी जोगारावके हाथका खिलौना नही बनी। वह अुसका प्रतिबिम्ब तो है ही नही और न लीलाको अपना प्रतिबिम्ब बनानेका प्रयत्न ही जोगारावने कभी किया।

लीलाको सिनेमामे अभिनय करनेका अवसर प्राप्त हुआ तो वह केवल जोगारावके प्रयत्नके कारण ही। अुसने लीलाके प्रति पूर्ण विश्वासका परिचय दिया। किसी-न-किसी तरह लीलाको अभिनेत्री ही बनानेकी वेदना जोगाराव-के मनमे न होती तो वह सफल न हुआ होता, लेकिन अुसके मनमें जो अटल विश्वास था कि लीला आज नही तो कल अवश्य अेक प्रसिद्ध सिनेतारिका बन जाअेगी। जोगाराव लीलाको साथमे लिअे हुअे सिने-निर्माताओके पीछे कभी दौड़ा नही, और न वह निर्माताओके पास जाकर अनुनय-विनयके साथ गिड़-गिड़ाया ही। निर्माताओंने लीलाके प्रति विश्वास प्रकट न किया तो जोगारावने कभी अुनकी निन्दा नही की। अुसके मनमें यह धारणा थी कि अुसे निर्माताओंके पास ले जानेपर निर्माताओंका ही नुकसान होगा। वही अभिप्राय अेक-दो निर्माताओमे भी पैदा हुआ। अस्तु, पहले लीलाको अेक-दो छोटे रोल मिले।

जोगारावने लीलाको सब प्रकारकी स्वतन्त्रता दे रखी थी। मानवोंपर लगनेवाले बन्धनोमेसे किसी प्रकारका कोअी बन्धन लीलापर लागू नही था। स्वभावसे ही लीला विहग जैसी रही। जोगारावने अुसे स्वतन्त्रता-प्राप्त विहग बनाया।

निर्माताओकी प्रवृत्ति शिकारी जैसी होती है। वे जल्दबाजीमें बन्दूक दागकर चिड़ियाको हाथसे जाने नही देते। अुनकी धारणा थी कि यदि वे अपनी ओरसे अधिक अुत्सुकता न दिखाअेंगे तो लीला सस्तेमें मिलेगी। यदि

वे अधिक अुत्सुकता दिखाअेंगे तो अुसकी दर भी बढ़ सकती है। अिसलिअे वे सहस्रों आँखे खोले जाल लिअे लीलाको फँसानेके ताकमें बैठे रहे। अिसी बीच अेक निर्माता लीलाको बुक करने आया। शायद अुसकी "तारिका" ने अधिकाधिक रुपये अैठनेके विचारसे टाल-मटोल करना शुरू कर दिया था। कन्ट्राक्ट फार्मपर हस्ताक्षर करते समय पूर्व निर्णयको ठुकराकर अुस तारिकाने बडी मोटी रकमकी माँग की होगी। अिससे पहले अुस तारिकासे तीन कन्ट्राक्ट फार्मपर हस्ताक्षरके प्रसंग आअे थे। अुससे तंग आकर निर्माता मोटरकारपर दौड़े-दौड़े लीलाके पास गअे और अुन्होंने अुससे कहा—"यह परसों मेरेद्वारा प्रारम्भ किअे जानेवाले पिक्चरमे हीरोअिन पात्रका कन्ट्राक्ट है। अिसपर केवल संख्या मात्र नही दी गअी है। कहो, तुम कितना चाहती हो? यदि मुझे तुम्हारा काम पसन्द आया तो मैं तुम जितना कहोगी, देनेको तैयार हूँ, अन्यथा पिक्चर बनाना ही बन्द कर दूंगा।"

कन्ट्राक्ट फार्म लेकर जोगारावने लीलाके हाथमे दिया और हस्ताक्षर करनेकी जगहकी ओर संकेत करते हुअे हस्ताक्षर करनेको कहा।

निर्माताने पूछा—"रकम कितनी लिखी जाअे?"

लीलाने अुत्तर दिया—

"आप अपने निर्णयके अनुसार दीजिअे। नुकसान होनेपर हमें रुपये देनेकी जरूरत नही। आप हमारे यहाँ आअे है। हम आपके यहाँ नही गअे है। कोअी भी अतिथियोसे मोल-भाव नही करता।"

व्यापारीके भीतरकी मानवताने जोर मारा। मनमें छह हजारसे आठ हजार तकका निर्णय करनेवाले निर्माताने अब दस हजारकी रकम भरते हुअे कहा—"मै जो रकम देना चाहता था, अुससे मैंने दो हजार अधिक लिखे हैं। यदि लीला मन लगाकर काम करेगी तो मेरे ये दो हजार रुपये अधिक दिअे हुअे वसूल होनेमें कोअी सन्देह नहीं है।"

अितने वार्तालापके पश्चात निर्माताने छुट्टी ली। ताकमे बैठे दो अन्य निर्माताओंने अुस निर्माताको गालियाँ दी और अुन लोगोंने भी दस-दस हजारके कन्ट्राक्ट लिखाअे। अिसके बाद वे कअी दिनों तक अपनी मूर्खतापर पश्चाताप करते रहे।

अिसके बाद लीलाकी अुन्नतिसे जोगारावका सम्बन्ध न रहा। अिस वर्ष अुसने छह कन्ट्राक्टोंपर दस्तखत किअे हैं। अिनमेंसे प्रत्येक तीस हजार रुपयेका है। पिछले साल ही अेक लाख रुपये लगाकर यह भवन खड़ा करवाया है। अिसमे जोगारावका कोअी हाथ नही है। अिन दो-तीन वर्षोंमे सवाक्-चित्रपटपर लीलाके सौन्दर्यका खूब विकास हुआ। लीलाका अभिनय दिन दूना रात चौगुना सफल होता रहा। किन्तु अुसकी अिस अुन्नतिका मेकपमैन, फोटोग्राफर, दर्शक, प्लै-बैक-गायक, सिनेरियो-लेखक अित्यादिके सहयोगमें हैं। अिसमे जोगारावका हाथ बिलकुल नही है।

सिनेमा संसारमे अपने पैर मजबूतीके साथ जमानेके बाद लीला कअी विषयोंमे पहलेकी अपेक्षा पीछे रह गअी। अुसने भगवान वेंकटस्वामीकी (बालाजी) मनौतियाँ पूरी की। अभिषेक कराया। पिछले दो-तीन सालोमे दो-तीन ज्योतिषियोंका पोषण कर रही है। अिन सबके अलावा अपनी अुन्नतिमे योग देनेवालोकी कृतज्ञता और अपनी अुन्नतिमे बाधा अुपस्थित करनेवालोंपर विजय भी वह अपने ही अुद्योगो अेवं अकथ परिश्रमसे प्राप्त कर रही है।

लीलाको देखकर जलनेवाले और अुसके पतनकी कामना रखनेवाले भी अुसपर दूषित प्रचार कर रहे हैं। अुसे डरा-धमकाकर भी जो लोग अुससे रुपये अैठ नही पा रहे है, वे पत्र-पत्रिकाओंमे अुसकी निन्दा करने लगे हैं। लीला अिन सब परिस्थितियोसे घबरा गअी। लेकिन जोगाराव अुसे बराबर धीरज बँधाता रहा।

वह कहता—"तुम्हारे पेशेमे तुम्हारी अपख्याति बाधा अुपस्थित नही कर सकेगी। तुम्हारे पतिके स्थानपर जबतक मैं हूँ, तबतक कोअी भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ नही सकता। जो पत्थर फेकेगा, वही घायल होगा।"

जोगारावके अिस प्रकार धीरज बँधानेपर लीलाका अुत्साह द्विगुणित हो अुठता और अब तककी अर्जित सफलतापर अुसकी छाती गर्वसे फूल अुठती।

अुसे पर्देपर देखने मात्रसे लाखों प्रेक्षकोंको परवशता प्राप्त होती, लेकिन अुसका आलिंगन भी जोगारावको विचलित नही कर सका। अेक समय लीलाको जो लावण्य और सुन्दरता प्राप्त थी, वह अब नहीं रह गअी है।

अनियमित, क्रमविहीन निद्रा तथा आहारवाला अभिनय तथा प्रेमविहीन काम-तृप्ति अुसके सौन्दर्यको नष्ट कर रही है। अुसका सहज सौन्दर्य क्रमशः घटता जा रहा है। पर अुसके स्थानपर अब कृत्रिम सौन्दर्य दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है।

दो मास पूर्वसे लीलाका सिनेमा क्षेत्रोंमे अब अेक नया अध्याय प्रारम्भ हो गया है। अुसके साथ कुछ और लोगोने मिलकर अेक पिक्चर तैयार करनेका निश्चय किया है। जोगारावको यह कतअी पसन्द नही है। लेकिन अिससे लीलाके निरुत्साहित होनेके लक्षण देखकर जोगारावने अिस योजनाका कोअी विरोध नही किया। अिस चित्रका निर्वहन अननुभहीन और अधिक लोगोका हाथ होनेके कारण चित्र निर्माणके पूर्व ही लीलाके बीस हजार रुपये खर्च हो गअे, और लीलाको पतातक न चला। जोगारावने अिस मामलेमें दखल देना अुचित न समझा। वह स्वयं कहानीकार था। अुसकी अन्तिम कहानीको प्रकाशित हुअे पॉच-छह वर्ष पूरे हो गअे हैं। स्वयं अेक अच्छा कहानीकार होते हुअे भी जोगारावने लीलाके अभिनय करनेवाले चित्रोंकी कहानियोंकी ओर ध्यान नही दिया।

जोगाराव लीलाके व्यवहारोंमे किसी दृष्टिसे भी हस्तक्षेप करना पसन्द नही करता था। अुसने लीलाके मित्रों और अुसके सैर-सपाटोंकी कभी आलोचना नही की। अुसने लीलासे कभी यह भी नही पूछा—" कहाँ गअी थी? कहॉसे आ रही हो? " अिस विषयमे लीलाके प्रति द्वेष भी अुसके मनमें नही था, क्योंकि लीलाने अपना हृदय किसी दूसरेको कभी नही सौपा।

जोगारावपर लीलाका अब भी स्नेहभाव है। पर लीलासे जोगाराव केवल अुसकी कमाअीकी कामना रखता है। जोगारावको आवश्यक स्नेह देनेके लिअे भी अब लीलाके पास समय नही है। वह अिस समय कलाकी अुपासना भी नही कर रही है। अिस समय अभिनय करना लीलाके लिअे कला नही, पेशा नहीं, वल्कि अेक व्यापार-मात्र रह गया है। वह अिस समय चित्र निर्माणमें वितरकों द्वारा कान्ट्राक्ट लेना, अन्य नर-नारियो द्वारा काम कराकर अधिकाधिक लाभ प्राप्तिमें लगी हुअी है।

लीला क्या करती है, कब करती है, कैसे करती है—अिस विषयकी जानकारी प्राप्त करनेकी जिज्ञासा पैदा करनेवाली बात जोगारावके मनमें कभी नही आअी। सेठ-साहूकारोसे मिलने वह अन्य स्थलोपर भी जा आया करती है और अपने समस्त प्रयत्नोके बारेमे वह जोगारावको सुनाती भी रही है। लेकिन वह अुसकी सलाहकी प्रतीक्षा नहीं करती। तब वह यह सब अुसे क्यों सुनाती है, यह जोगारावकी समझमें नही आता।

जोगाराव लीलाके धनका गुलाम नही बना है। यदि वह अैसा बन जाता तो कोअी झंझट नही थी। लेकिन आनन्दकी प्राप्तिके लिअे जीवनसे लड़ना है तो लीलाके लिअे अेक समस्या पैदा करनी होगी। जोगाराव यह निर्णय नही कर सका कि लीलाको अुसने ही सिनेतारिका बनाया था। अब लीला अुसकी आकांछाओंकी पूर्ति कर रही है। लेकिन वह जिस प्रकारका फल प्राप्त कर रही है, वह जोगारावके लिअे वाछनीय नही है। यद्यपि लीलाका अुसमे कोअी दोष नही है, फिर भी वातावरण ही अैसा कुछ बना हुआ है। वह लीलाको छोड़कर अपने पैरोंपर खड़ा हो? जीवनमें प्रवेश करना है तो अुसका ठीक समय लोलाके पतनके बाद ही है। लेकिन अुस हालतमे लीलाको त्यागना कहाँतक न्यायसंगत है।

घडीमें पाँच बजते सुनकर जोगाराव बिस्तरपरसे अुठ बैठा। पता नही क्यो? अुसे अचानक बचपनकी अेक घटना स्मरण हो आअी। चारपाअीके सामने दर्पणमे अपनी आकृतिको देखते ही अपने भाअीका स्मरण हो आया। वह कअी साल पूर्व चार महीने तक चारपाअीपर पड़ा रहा। तन्दुरुस्तीके ठीक होनेपर अुसे फिरसे चलना सीखना पड़ा। वास्तवमें वह भी अैसी दशामे नही है? लीलाकी कमाअीपर जीवन बिताना छोड़कर अपने पैरोंपर खड़े रहनेका प्रयत्न करनेपर क्या वह गिर न जाअेगा? अवश्य गिर जाअेगा।

जोगाराव लीलाके पलंगके पास जाकर बैठ गया और अुसने लीलाके शरीरपर हाथ रखा।

लीलाने करवट बदली। लेकिन वह अुठी नही।

"ली ला! अेय्!"

"अूँ जगाओ मत। निद्रा पूरी नही हुअी है।"

"मै गाँव जा रहा हूँ।"

"कहाँ? किस गाँवमे?" आँखे मूँदे निद्रामें ही लीलाने पूछा।

"कही? किसी गाँवमें।"

"क्यों?" लीलाने जबरदस्ती आँखें खोलकर पूछा।

"कुछ विशेष बात नही। थोड़े दिनतक घूमनेकी अिच्छा है।" लीला अुठ बैठी। लेकिन थोडी देर तक चुप रही।

"कब जा रहे हो?"

"आज ही।"

"कहाँ?" फिरसे पूछा।

"कुछ पता नही। अभीतक निश्चय नही किया।"

"कुछ सूझता नही क्या? है न? ओह!"

"हाँ।"

"फिर कब आओगे?"

"जब अिच्छा होगी।"

लीलाका मुँह विवर्ण हो गया। अब अुसे होश आया। अुसने कल्पित अुत्साहका अभिनय करते हुअे कहा—"अेक काम करेंगे। जरा फुरसत होते दोनों ही जाअेगे।"

"तुम्हे कभी फुरसत नही मिलेगी। तुम्हे हाथ भर काम है। मैं ही बेकार आदमी हूँ।"

लीलाने मुँह सिकोड़कर कहा—"क्या अपमान लगता है?"

"मुझे स्वयं मालूम नही। लेकिन मुझे अैसा प्रतीत होता है कि मैं बेकार पड़ा हुआ हूँ।"

"वहाँ जाकर करेंगे क्या?"

"अभी तक सोचा नही।"

"मेरे बारेमें क्या सोचा है?"

"तुम्हें किस बातकी कमी है?"

"तो क्या यह अपयश अुठाअूँ कि तुमने मुझे त्याग दिया है ? "

जोगारावने हँस दिया और कहा—"तो तुम्ही कहो कि तुमने ही मुझे छोड़ दिया है।"

"कौन मुझसे आकर पूछेगा ? "

"तो जाने दो, मै ही कहूँगा।"

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे।

"अचानक मेरे अूपर तुम्हें अितना क्रोध ही क्यों हुआ ? "

"क्रोध ? कभी नही हुआ। मैंने कभी तुम्हें कुछ नही कहा। तुमने मेरी जो भलाअी की, वह दूसरा कौन करेगा ? "

"तो फिर जाना ही क्यों ? "

"तुमने कुछ किया, अिसलिअे नही, बल्कि अिसलिअे है कि मै कुछ नही कर रहा हूँ।"

"क्यो नही करते ? कोअी-न-कोअी काम करनेको मैंने कअी बार कहा था। तुम्हारा न करना क्या मेरा ही दोष है ? "

"लीला ! तुम अपने विषयको छोड, दूसरेपर क्यों नही सोचती ? करनेको अच्छा काम भी तो हो ?...तब न ? "

"अब भी वह झंझट रहेगी। फिर अकारण ही वहाँ जाकर तकलीफ क्यों अुठाते हो ? "

जोगारावने पुनः हँस दिया और कहा—"यदि मै कुछ न कर सकँगा तो फिर नही आ सकता हूँ क्या ? तुम रोकोगी भी नहीं न ? "

यह बात लीलाके मनमे चुभ गअी। अुसे क्रोध भी हुआ और अुसने कहा—"तुम्ही ये बातें करते हो। मै तो तुम्हें यहीपर रह जानेको कह रही हूँ न।"

"आज तक हमारे बीचमें कभी झगड़ा नही हुआ। आज भी नहीं होना चाहिअे। दोस्तोंके रूपमें रहे, वैसे ही रहेगे ? "

थोड़ी देर तक सोचकर लीलाने पूछा—"दूसरी कोअी मिल गअी क्या ? "

"अभी तक नही। तुम्हारे प्राप्त होनेके बाद दूसरी कोअी मेरा मुँह नहीं देख सकती। सिनेतारिकाओंके पति कैसे चरित्रवान होते है, तुम्हें नहीं मालूम ? "

लीलाने ओंठ काटते हुअे कहा—" यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता। "

जोगारावके सामने वह दूसरे लोगोसे कब कैसा व्यवहार करना जानती थी। लेकिन अब जोगारावके विरुद्ध बोलनेमे वह कुछ-का-कुछ जवाब दे रही है।

"मै अपने बारेमे सोचूँ तो अपनेपर ही मुझे घृणा होती है। अिन सात-आठ वर्षोमे मै नालायक बन गया हूँ। अिसलिअे अब तुझे ही सोचना है।"

"ओह! साढ़े पॉच बज गअे है। मै अभी आअी।"—अैसा कहती हुअी लीला चली गअी। जोगारावको अिस बीच आत्म-चिन्तन, मनन करनेका अवसर मिला। अुसके मनमे पहले केवल यह भावना पैदा हुअी थी कि कही-न-कही अवश्य जाना चाहिअे। लेकिन अुस भावनाको अेक रूप देनेके अभिप्रायसे ही जोगारावने लीलाको बातोंमे घसीटा था। अिस सम्भाषणके बाद अुसने पूरी तरहसे जानेका ही निश्चय किया। वापस लौटकर लीलाने देखा—जोगाराव नही है। कही चले गअे है। अुसका मनीबेग कोटकी जेबमें ही है। अुसे भी बिना लिअे वह चले गअे है।

अपनी वेदनाको न रोक सकनेके कारण लीला रो पडी। किसीने भी अुसका अैसा अपमान नही किया था। अुसने अपने मनसे प्रश्न किया—"मैने किया ही क्या है ? मेरे द्वारा कौन-सा अपराध हुआ है ? मुझे अिस प्रकारकी सजा क्यों दी गअी है ? " लेकिन अिन प्रश्नोका समाधान कौन करे ?

जहाँ भी देखा, जोगारावका स्मरण दिलानेवाली चीजे पड़ी हुअी है। अिन वस्तुओंके देखनेपर कअी तरहकी प्राचीन स्मृतियाँ जाग अुठती है और अुसकी वेदना अधिकाधिक गहरी होती जाती है। मृत व्यक्तिके बारेमें जैसा स्मरण किया जाता है, अुसी भाँति अपने जीवनसे सम्बन्धित विषयोंका वह स्मरण करने लगी। गत दो-तीन वर्षोकी घटनाअें ही याद हो आअी हों, अैसी बात नही, बल्कि कअी सालोकी घटनाअे ताजी होने लगी।

लीलाने अपने जीवनमें अकेले जोगारावसे ही सच्चा प्रेम किया था। नाम और प्रतिष्ठाके आधारपर होनेवाला जोगारावके साथका यह प्रेम क्रमशः लुप्तप्राय हो गया। यह सत्य है कि लुप्त होनेवाले प्रेमका मूल्य अधिक ही होता है। गुजरे हुअे दिनोंमें जो आनन्द प्राप्त हुआ था, वह अब नही रहा।

यदि अुस दिन रातमें अुसे अकेले ही घरपर सोना पड़ता तो अुसे कितनी व्यथा होती! पर अुस रातको शूटिंग थी, वह बेकार हो गअी। दूसरे दिन वह अस्वस्थताका बहाना कर घरपर ही रह गअी। प्रातःकाल तीन बजे घर लौटी, बिना मेकअप आदि धोअे चारपाअीपर पड़े-पड़े रोती रही और अुसे नींद आ गअी।

दूसरे दिन वह घरपर ही रही। टेलीफोन करनेवालों तथा घरपर आअे हुअे लोगोंको अुसने कहलवा दिया कि वह घरपर नहीं है। जोगारावको भूलना ही यदि अुसका अुद्देश्य है तो अुसने बड़ी भूल की है।

तीसरे दिन जब वह शूटिंगमे गअी तो अुससे जोगारावके बारेमें पूछा गया। अुसने गाँवका बहाना किया। अुस दिन भी सारी शूटिंग व्यर्थ गअी। सारे शहरमें यह समाचार बेतारके तारकी तरह फैल गया कि जोगाराव लीलाको छोड़कर चले गअे है। लीला सभीसे कहती रही कि वह कामसे बाहर गअे हैं, जल्दी ही लौट आअेंगे।

जोगारावको गअे १५ दिन हो गअे हैं। अिधर लीलाके मनमें दिन-प्रति-दिन जोगारावके लौटनेकी आशा अेक ओर बढ़ रही है तो दूसरी ओर अुसके वापस न लौटनेकी निराशा भी बढ़ती जा रही है। लीलाके बहुत-कुछ दिमाग लड़ानेपर भी अुसे कुछ नहीं सूझा कि वे कहाँ है, कैसे रहते हैं, क्या करते होंगे और अुन्हें खर्चके लिअे रुपये कहाँसे मिलते होंगे?

अिस विश्वमें अपराधकी कल्पनाकर बिना किसीके द्वारा दण्डित हुअे सजा भोगनेवाले लोग भी है और दण्डके अनुभवकी कल्पनाकर सजाका पता न पा, अपराधकी कल्पना करनेवाले लोग भी हैं। लीलाने निश्चय किया कि अुसने जोगारावके प्रति कोअी बड़ा अपराध किया है। अुसका निश्चय दिन-प्रति-दिन दृढ़से दृढ़तर होता गया।

लीलाने कअी काम किअे थे। जोगारावने प्राय: सबको भुला दिया था। तो भी वे अब महान अपराध बनकर लीलाको पीड़ित करने लगे।

जोगारावसे अुसे कअी बातें कहनी थीं। अुसके जाते समय अुसके अुपकारकी कृतज्ञता लीलाने प्रकट नहीं की। बल्कि जोगारावने ही लीलाके प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। अुसने केवल अपने बारेमें ही सोचा है। जोगारावके सम्बन्धमे कभी नही सोचा है। अिस बातका स्मरण जोगारावने दो बार दिलाया था। लेकिन लीलाने ध्यान ही नही दिया।

अेक दिन लीला कोअी पत्रिका अुलट रही थी। अुसमें अुसे जोगारावका नाम दिखाअी दिया। "प्रत्यक्ष नरक" नामसे जोगारावने कोअी कहानी प्रकाशित कराअी थी। अुस छपे हुअे नामकी ओर लीलाने अनेक बार देखा। वह विश्वास नही कर सकी कि यह नाम अुन्हींका है। यद्यपि अुसे मालूम है कि वह कहानी जोगारावने ही लिखी है। अिस नामकी ओर देखते समय अुसे अैसा लगा मानो जोगाराव समक्ष खड़े होकर अुसकी निन्दा कर रहे हैं। अुसने अिस कहानीको पढ़नेकी कअी बार कोशिश की, लेकिन आँखोंके सामने अक्षर धुँधले-से दीखने लगे और वह समाचार दिमागमें बैठता भी नहीं था। विचारोंका प्रवाह जारी रहा।

कहानी समाप्त करके बहुत देर तक वह अेक ही दिशामें अेकटक निहारती हुअी विचारोंमें डूबी रही। टेलीफोनकी घण्टीकी आवाजसे अुसका ध्यान भंग हुआ।

टेलीफोन करनेवालेने पूछा—"जोगाराव ?"

लीलाने तुरन्त जवाब दिया—"घरपर नही है जी !" अुसे अिस बातका ध्यान न रहा कि नौकर आकर टेलीफोन अुठा लेगा।

"कौन बोल रहे है जी ? अिधर जोगारावने कहानियाँ नहीं लिखीं थीं, अिस बार बहुत ही सुन्दर कहानी लिखी है। अुन्हें बधाअी दे रहा हूँ। अुनसे कहिअेगा।"

अुस आदमीने अपना नाम तक नहीं बताया और टेलीफोन रख दिया।

टेलीफोनके रखते ही लीलाके मनमें अेक विचार आया; जिसमें यह कहानी छपी थी, डाअिरेक्टरीमें अुसने अुस पत्रिकाके कार्यालयका नम्बर देखा। अुसने पूछा—"क्या आप कृपा करके अपनी पत्रिकाके कहानीकार—जोगारावका पता बता सकते हैं?"

कार्यालयवालोंने बड़े सन्तोषके साथ पता बताते हुअे पूछा—"कहानी कैसी है जी?"

"बहुत ही भद्दी है।"—कहकर लीलाने टेलीफोन रख दिया।......

झोपड़ीमें टूटी-फूटी चारपाअीपर लेटे सिरहानेकी ओर हरीकेन लालटेनकी रोशनीमें पढ़नेवाले जोगाराव आहट पाकर चौंककर अुठ बैठे और आगन्तुककी ओर देखकर अुन्होंने कहा—"ओह! तुम हो?"

अिस झोपड़ीमें लीलाने प्रथम बार पैर रखा था।

"मेरा स्वप्न! मेरा स्वप्न!!"—कहकर जोगाराव अुद्विग्नकी भाँति चिल्ला अुठे।

वे क्या बोल रहे हैं, यह लीलाकी समझमें नहीं आया। वह आश्चर्य-चकित हो जोगारावकी ओर देखती हुअी अुसी प्रकार खड़ी रही।......

* * *

६.

हवाकी मछलियाँ

—श्री अे. आर. कृष्ण

आप युवक लेखक और कहानी-रचनामें अत्यन्त पटु हैं। रंगमंच-क्षेत्रमें आपका प्रयास स्तुत्य है। हैदराबाद सरकार द्वारा चलाअी गअी कहानी-प्रतियोगितामें आपकी कहानी 'हवाकी मछलियाँ' (गालि चेपलु) को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यही अिनकी प्रतिभाका सुन्दर परिचायक है। तेलंगानेके तरुण कलाकारोंमें आपका अपना विशिष्ट स्थान है। समाजकी वर्तमान स्थितिका यथार्थ चित्रण तथा व्यक्तियोंकी मनोभावनाओंका प्रतिबिम्ब आपकी रचनाओंमें सर्वत्र देखा जा सकता है।

* * *

हवाकी मछलियाँ

अिस संसारमें कुछ अैसे लोग हैं जो अचानक परिस्थितियोंके वशीभूत होकर किसी बड़ी जिम्मेदारीको अपने सिरपर लेते हैं और अुसकी पूर्तिमें अपनेको भूलकर कर्तव्यके पालनमें निमग्न हो जाते हैं। अैसा करते समय वे अपने मनमें यह भी समझते हैं कि अुस कार्यके निभानेमें वे ही समर्थ हैं। अुनके अभावमें वह कार्य पूरा हो ही नहीं सकता। वे अिस नअे कार्यसे अपने निजी कामोंमें होनेवाले नुकसानोंका ख्याल न करके जिम्मेदारीको निभानेमें दत्तचित्त हो जाते हैं।

चिन्नम्माके विषयमें भी ठीक अैसा ही हुआ। अुस दिनकी शामको रथमें छोटे बाबूको बगलमें बैठाकर चिन्नम्मा सैर करने चली। अिनके पीछे दो अंग-रक्षक खड़े थे। कोचवान तेजीसे गाड़ी हाँक रहा है। अुस रथमें चार अरबी घोड़े जुते हुअे हैं। रथ राजपथमें जा रहा है। वहीं अेक घटना हुअी। वह मामूली नहीं, बड़ी विचित्र घटना है। अुस घटनाने बहुत-सी बीती हुअी बातोंको चिन्नम्माकी आँखोंके सामने ला खड़ा किया।

चिन्नम्माका जन्म तो अुत्तम कुलमें ही हुआ है; परन्तु गरीबोंके लिअे जाति-भेद कहाँ! घोर दारिद्रयमें ही चिन्नम्माके पतिने अुसकी छोटी-सी अवस्थामें आठ महीनेके बच्चेका भार अुसके कन्धोंपर छोड़कर अिस संसारसे

सदाके लिअे आँखें मूँद ली थी। जीविकाका कोअी रास्ता न पाकर चिन्नम्मा अपनी ३५ वर्षकी अुम्रमे जमीदार रामप्रसादके यहाँ चौका-बर्तनके कामपर नियुक्त हुअी। अुस समय छोटे बाबूकी अवस्था पाँच महीनेंसे कुछ कम थी। छोटे बाबूको दूध पिलाना, स्नान कराना आदि काम चिन्नम्माको ही करने पड़ते थे। रानी बच्चेको जन्म देकर तो बैठ गअी, पर पालन-पोषणका भार चिन्नम्मापर आ पड़ा।

चिन्नम्माने अपने आठ महीनेके पुत्रको अपने छोटे भाअी रामय्याको देखरेखमें छोड़ दिया, और रोज दिनमें अेक बार जाकर वह अुसे देख अवश्य आती तथा दिनभर जमीदारके यहाँ छोटे बाबूकी देखरेख करती। अिसी शर्तपर ही तो अुसने जमीदारके यहाँ नौकरी पाअी थी। छोटे बाबूको दाअी होनेके कारण अुसे खाने और कपडोंकी कोअी कमी नहीं थी, और वहाँ अुसे अुचित गौरव भी प्राप्त होता जा रहा था। किन्तु साल-भर पूरा होनेके पूर्व ही रानीने वातरोगसे कुछ ही घडियोंमे अिस संसारसे सदाके लिअे छुट्टी ले ली। अिस प्रकार अचानक घटनेवाली घटनाकी स्वप्नमें भी किसीने कल्पना नही की थी। खासकर जमीदार साहबने तो यह सोचा ही नही था कि बड़ी तपस्याके बाद अुत्पन्न हुआ यह लाल अितनी शीघ्र ही मातृप्रेमसे वंचित हो जाअेगा। अपनी प्रियतमा रानीके वियोगने जमीदारको मर्माहत किया और यह समस्या जटिल बनकर अुनके सामने अुपस्थित हुअी कि अुस अबोध बच्चे (युवराज) का लालन-पालन कैसे हो? धन-धान्यका अुन्हें कोअी अभाव न था। यद्यपि वे सभी साधनोंसे समृद्ध थे, पर चिन्ता तो अिस बातकी थी कि यदि अुस अबोध बालकको यह पता लग जाअे कि वह मातृ-विहीन है, तो अुसके कोमल हृदयपर कितनी बड़ी चोट पहुँचेगी—अिसकी वह कल्पना नही कर सकते थे। अुन्होंने निश्चय किया कि शान्तिमय जीवन व्यतीत करते हुअे अपने अेकमात्र पुत्रको बड़ा बनाना ही अब अुनके जीवनका प्रधान लक्ष्य होगा। अपने अिस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिअे जमीदारने अन्य कोअी अुपाय न पाकर चिन्नम्माको बुलाकर कहा—"चिन्नम्मा! तुम कर तो दाअीका काम रही हो, पर तुम अिस कामको जिस प्रकार कर रही हो, अुस प्रकार कोअी निजी माता भी नही कर सकती।

मुझे मालूम है, छोटे बाबूपर तुम्हारा कितना गहरा प्रेम है। मैं तुमसे यही चाहता हूँ कि भूलसे भी कभी छोटे बाबूको यह मालूम न हो कि अुसकी माता नही है और पाल-पोसकर बड़ा बनानेका भार भी मैं तुम्हें ही सौप रहा हूँ।"--यह कहते-कहते जमीदार साहब बच्चेकी तरह फफक-फफककर रोने लगे। वे अेक बड़े जमीदार होते हुअे भी अेक मामूली दाअीके सामने अितने दीन बनकर याचना कर रहे है। यद्यपि यह अेक आश्चर्यकी ही वात है; फिर भी जमीदारकी अिस याचनामें अुसे कोअी आश्चर्य मालूम नही हुआ, बल्कि अुसे अिस बातका बड़ा आनन्द हुआ कि अपने बच्चेके मातृत्वकी जिम्मेवारी लेनेवालेके सामने यह अपना हृदय खोलकर रख रहा है। जमीदारकी आँखोमे आँसू देखकर चिन्नम्माका हृदय तड़प अुठा और वह समझ गअी कि पत्नीके वियोगने अुसके हृदयपर कितना गहरा घाव किया है। अिसलिअे चिन्नम्माने बिखरे हुअे साहसको बटोरकर कहा--"बाबूजी, मेरे रहते छोटे बाबूको मातृत्वका अभाव नही खटकेगा।" चिन्नम्माकी अिन बातोको सुननेपर जमींदारको कुछ शान्ति मिली।

अुस दिनसे परिस्थितियोंने चिन्नम्मामें बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया। जमीदारकी आज्ञासे सभी लोग अुसे "चिन्नम्माजी" कहकर पुकारने लगे। आजतक वह दाअी मात्र थी, परन्तु अब अुसने युवराजके मातृत्वका भार अपने कन्धोंपर ले लिया है। अिससे अुसे नया ओहदा प्राप्त हुआ है और अब अुसपर अेक महत्वपूर्ण अुत्तरदायित्व आ गया है। तबसे चिन्नम्माके कार्योमे यद्यपि कोअी विशेष परिवर्तन नही हुआ है। किन्तु अुसकी कल्पनाओंमें परिवर्तन अवश्य हो गया है। अब अुसे अपने पुत्रको दिनमें अेक बार देख आनेका भी अवसर प्राप्त नही होता। पल-भरके लिअे वह छोटे बाबूसे दूर हो जाती तो वह रोने लगता है। बच्चेका रोना सुनकर चिन्नम्माको जमींदार साहबकी आँखोंके आँसू याद आते है। वह मनमें सोचती है कि मैं जमीदार साहबकी अिससे अधिक और क्या सहायता कर सकती हूँ कि दिअे हुअे अपने वादेकी पूर्तिमें व्यस्त हूँ। जिम्मेदारीके बोझके मारे वह अब सिर भी अूपर नही अुठा सकती है।

अुसका छोटा भाअी आज, पूरबकी ओर, बहुत दूर अपने शहर जा रहा है। अब चिन्नम्माका क्या कर्तव्य है ? अपने पुत्रके साथ भाअीका अनुकरण करना या जिस जिम्मेदारीको सिरपर लिया है, अुसे पूरा करके कृतकृत्य होना ? कोअी भी माता क्या अपने पुत्रको दूर देशोमें भेजकर सन्तोषकी साँस ले सकती है ? अेक ओर अपने कलेजेका टुकड़ा, असहाय, अनाश्रय पुत्र ? दूसरी तरफ छोटे बाबू मातृविहीन और जमींदारके प्राणप्रिय पुत्र ! विचारोंके अिस द्वन्द्वमें अुसका मन तड़पने लगा। वह कुछ निश्चय नहीं कर सकी कि वह क्या करे। अपने पुत्रके लिअे तो वही अेकमात्र माता है। पर छोटे बाबूको सैकड़ों माताअें मिल सकती हैं। जमींदार साहबके पास तो धन, नौकर–चाकर, वाहन, वस्त्र सब-कुछ हैं; किन्तु अपने गुदड़ीके लालके लिअे ये सब कहाँ ! निश्चय ही अुसे अपने पुत्रके साथ जाना चाहिअे। पर मैंने जो वादा किया है, अुसका क्या होगा। चिन्नम्माके हृदयमें विचारोंकी आँधी अुठ रही है। वह अुसमें तिनकेकी भाँति अिधर-अुधर अुड़ रही है। सारा ससार अुसे अन्धकारमय दिखाअी दे रहा है। अुस अन्धकारमें जमींदारके नेत्रोंकी आँसूकी वे बूंदें कमल-पत्रोंपरके मोतियों जैसे ओस-कणोंकी तरह चमक रही है। चिन्नम्मा अपनी वेदनाको रोक न सकी। अुसका कोमल हृदय अिन दारुण समस्याओंके सामने पराजित हो गया। वह तिलमिला अुठी। वह सोचने लगी कि अिस संसारमें कितने ही जी रहे है और कितने ही मर रहे है। मुझे भी अिस भव-सागरकी कठिनाअियोसे टकराते हुअे अेक दिन मरना ही होगा। मेरी जिन्दगी ही क्या ? पर छोटे बाबूको तो महाराजाओंके घरोंमें पैदा होनेका सौभाग्य प्राप्त है। अुस छोटे बाबूके लिअे मुझे अपने मातृत्वका दान करना ही होगा। त्यागमे जो सुख अेवं सन्तोष प्राप्त होता है, ओह ! .... मेरी अनुपस्थितिमें छोटे बाबू अेक पल-भर तक भी नहीं रह सकेंगे ! ..... छोटे बाबूको कमजोर होते देख जमीदार साहब भी......अुनके नयनोंके वे आँसू.....! बच्चेकी तरह अुनकी की हुअी याचना ..... अिन सब विचारोके बोझको चिन्नम्मा सह न सकी। अुसके पास जो धन था, अुसे अपने छोटे भाअीके हाथमें देकर तथा अपने पुत्रकी देखभालका भार अुसे सौंपकर वह जमीदारके यहाँ लौट आअी।

अुस दिनकी रातको चिन्नम्मा अपनी विवशताका स्मरण करते-करते सो गअी। अेक लहर—जैसे स्वप्नमें अुसका पति यह कहते दिखाअी दिया—"चिन्नम्मा! तुम पानीमें रहनेवाली मछली हो, हवामें कितनी देर तक अुड़ सकोगी?" यह दृश्य देखते ही वह अुठ बैठी। बगलमें अेक मुलायम मखमलकी गद्दीपर छोटा बाबू सो रहा है। अुस कोमल हृदयको सुख-दुखका अनुभव नही होता है। कैसी विचित्र है यह दुनिया! "खाड़ीके किनारे चलते समय आरम्भमें भयका अनुभव होता है, पर चलते-चलते साहसका संचार होता है।" चिन्नम्माने मनको शान्त किया और अपने कलेजेको मजबूत बनाया।

अिस मानसिक आन्दोलनमें ही चिन्नम्माने दिन, सप्ताह, महीने और साल बिताअे। जब छोटे बाबूकी अवस्था दस सालकी थी, अुस समय चिन्नम्माका भाअी रामय्या अपने भानजेको लेकर वापस आया। चिन्नम्माने पुत्रको अपने विचारोंके कुछ विरुद्ध ही रखा। वह नटखट बनता जा रहा है। पढाअी-लिखाअीमें अुसका मन नहीं लगता। सभ्यतासे कोसों दूर कहाँ चिन्नम्माका पुत्र! और अुसका पालित कहाँ 'छोटे बाबू'! अुस वक्त अगर वह 'छोटे बाबू' को छोड़कर अपने पुत्रके साथ जाती, तो जमीदारका पुत्र भी अिसी प्रकार नटखट बना होता। अुसके वहीं रहनेके कारण ही तो 'छोटे बाबू' पढ-लिखकर सभ्य बन सका? चिन्नम्माको अिस बातका घमण्ड था कि भले ही अपना पुत्र आवारा निकले, पर राज-परिवारका लड़का 'छोटे बाबू' सुशिक्षित और सभ्य बन गया है।

चिन्नम्माने निश्चय किया कि अबतक अुसने जो कुछ किया, ठीक ही किया है। क्योंकि चिन्नम्माका भाग्यपर भरोसा था। वह भाग्यवादिनी थी। यद्यपि कर्मसिद्धान्तका ज्ञान अुसे न था, फिर भी अुसका यह विश्वास था कि आदमीका बनना-बिगड़ना अुसकी सफलता-असफलता आदि भगवानके हाथमे है। मानव अुसकी दृष्टिमें केवल निमित्त मात्र है। अुसकी धारणा थी कि अुसका पुत्र यदि अुसके साथ भी रहता तब भी वह आवारा ही निकलता। अिसीलिअे भगवानने अुसे अिस बड़े ओहदेको देकर जमीदारके यहाँ पहुँचाया है और अपने पुत्रका त्याग कराकर छोटे बाबूके साथ रहनेका आदेश दिया है। अिससे अुसे लोगोमें गौरव प्राप्त हुआ और वह त्यागकी मूर्ति बनी।

अपने पुत्रके वापस लौटनेपर भी चिन्नम्मामें कोअी तबदीली नही हुअी। वह पहलेकी भाँति कभी-कभी रामय्याके हाथमे कुछ धन देकर लड़केकी देखभाल करनेको कहती। कभी-कभी लुक-छिपकर भाअीके पास जाकर और अपने पुत्रको देखकर वापस लौट आती। समय-समयपर वह अपने भाअी रामय्याके हाथमें लड़केकी देखभालके लिअे जो धन दे आती, अुसे अपने भानजेको न देकर रामय्या ही अुड़ाअे जा रहा है--अिसका सन्देह चिन्नम्माको जरूर था। पर वह कर ही क्या सकती है?

छोटे बाबूकी अुम्र २५ वर्षकी हो गअी है। अभीतक अुसे अिस बातका पता नही होने दिया गया कि अुसकी माता नहीं है। जमीदार साहबका सुव्यवस्थित प्रबन्ध तथा चिन्नम्माकी होशियारीने छोटे बाबूको अपनी माताकी मृत्युकी खबर न होने दी।

जमीदार साहब रथमें अपने पुत्रको बगलमें बिठाकर प्रति दिन सैर करनेको जाते थे। अेक दिन जमीदारकी अनुपस्थितिमें चिन्नम्मा छोटे बाबूको लेकर सैर करने निकली। कोचवान राजपथपर गाड़ीको हाँकते जा रहा है। चिन्नम्माका यह विचार था कि नगरके बाजारोंके गुजरनेपर छोटे बाबूको नगरकी विशेषताअे दिखाअी जा सकती है। गाड़ीको मार्केट होते हुअे सामनेवाली गलीसे गुजरना था, लेकिन किसीकी मृत्यु हो जानेके कारण लाशको ले जानेवाली भीड़ सामने आ धमकी। अतः कोचवानने गाड़ी अेक ओर करके रोक दी। मृत व्यक्ति कोअी धनवान मालूम होता है। लाशके साथ बड़ी भीड़ लगी हुअी है। बीच-बीचमें लाशको ढोनेवाले कन्धे बदल रहे हैं। अुसी भीड़मेसे अेक व्यक्ति, जो अुस मृत व्यक्तिका रिश्तेदार मालूम होता है, रेजगारीकी थैलीसे पैसे निकालकर अर्थीपरसे पैसे फेंकता जा रहा है। अब पहलेकी भीड़से दुगने भिखारी कहींसे आ धमके और फेंके हुअे पैसे, आने-दुअन्नी, चवन्नी व अठन्नियोंको चुनने लगे। अेक ही मिनटमें भिखारियोंने सड़कपर गिरे हुअे पैसोंको चुनकर अटीमें खोंस लिया और फिर दूसरी लड़ाअीके लिअे सन्नद्ध हो गअे।

गाड़ीमें बैठे हुअे छोटे बाबूको यह घटना अजीब-सी लगी। अुसने आजतक अिस तरहकी विचित्रता नहीं देखी थी। अेकका रुपये-पैसे अुँड़ेलना

और बाकी सबका बड़ी प्रतीक्षाके साथ अेक दूसरेको ढकेलेते हुअे अुन्हें चुन लेना, विचित्र बात नही तो क्या? अिस घटनामें छोटे बाबूने विनोदका अनुभव किया। चिन्नम्माको अिस घटनासे आश्चर्य नही हुआ, बल्कि अेक दूसरा दृश्य अुसके स्मृति पटलमें अुपस्थित हुआ। जमींदारके यहाँ अेक कोनेमें कअी मछलियोंको फेंका जाता तो कहीसे चीलें आकर अेक पलमें अुन सभी मछलियोको अुड़ा ले जाती है। यह सब अेक क्षणमें हो जाता है। अुन चीलोमे और अिन भिखारियोंमे क्या अन्तर है? अिस प्रकार विचार-परम्परामें मग्न चिन्नम्माका छोटे बाबूकी पुकारने स्वप्न भंग किया।

गाड़ीकी बगलमें खड़े होकर गुदड़ोंसे लिपटा हुआ अेक अर्ध नग्न युवक, जिसकी मुट्ठीमे आने-पैसे है, चिन्नम्माके आँचलको खीचते हुअे "अम्माँ!"—कहकर पुकार रहा है। वह कितने समयसे पुकार रहा है—पता नहीं। चिन्नम्माने अुसे देखा और पहचाना। अिसी अवधिमें पीछेवाले अंग-रक्षकने चाबुकसे अिस युवककी पीठपर प्रहार किया और गाड़ी भी द्रुत गतिसे अुसी क्षण आगे बढ़ी—ये दोनों काम अेक साथ हुअे।

"अम्माँ! कहकर पुकारनेवाला वह युवक कौन है?"—छोटे बाबूने प्रश्न किया।

"कोअी भिखमंगा होगा।"—चिन्नम्माने जवाब दिया। यद्यपि अुसने अैसा कह तो दिया, परन्तु अुसकी अन्तरात्माने अिसका विरोध किया। रह-रहकर अुसके मनको ये विचार कचोटने लगे कि अपनी ही कोखसे पैदा हुअे हृदयके टुकड़ेको वह भिखमंगा कह रही है।

'छोटे बाबू' कुछ पूछ रहा है और वह कुछ और जवाब दे रही है। अभी-अभी बीती घटना अुसे धमकी दे रही है। बीती कहानी अुसकी आँखोंके सामने विजलीकी भाँति कौंध गअी।

गाड़ी कहाँ-कहाँ घूमकर घर लौटी है, समय और स्थलका भान चिन्नम्माको नहीं हुआ। "मेरा ही पुत्र, भिखमंगा!" ये ही बाते अुसके कानोंमें गूँज रही हैं। अुसीके लड़केका चित्र अुसकी आँखोंके सामने घूम रहा है। अुसके जिन्दा रहते हुअे अुसीकी आँखोंके सामने ..... अपने पुत्रपर चाबुककी मार! ..... ओह ...... अिस घृणाको वह कैसे सहन करेगा?

अिस अपमानका बदला लेनेको वह कैसे अुद्यत न रहेगा? अिस संसाररूपी रंगमंचपर अपने जीवनका मैं जो पार्ट अदा कर रही हूँ, यह और किस प्रकारके दुष्परिणामोंको ला खड़ा कर देगा। हे भगवान! तू ही रास्ता दिखा।

खिड़कीके सामने खड़ी होकर चिन्नम्मा अेकटक अनन्त आकाशकी ओर निहार रही है। बगीचेके अेक कोनेसे तीतुवु (अुलूक, अुल्लू) (यह पक्षी अधिकतर श्मशानमें घूमा करता है। अिसके दिखाअी देनेपर मृत्युकी आशंका की जाती है।) पक्षी बोलते हुअे अुड़ता जा रहा है। अुस अमावस्याकी रात्रिमे अुसे निर्मल आकाश और फूलों जैसे नक्षत्र दिखाअी दे रहे हैं। अब अुसकी दृष्टि विषय-परिज्ञानकी ओर दौड़ी। वह सोचने लगी——अिस आकाशमें नक्षत्र जैसे दीपकोंको किसने जलाया? आजन्म गरीबिनको किसने युवराजके मातृत्वका पद प्रदान किया? मुँह माँगा धन भाअीको देते रहनेपर भी अपने पुत्रको भिखारी बनाकर बाजारोंमें कौन घुमा रहा ह? हम तो केवल नियतिके पुतले मात्र है। अपना पार्ट पृथ्वीके रंगमचपर अदा करना हमारा कर्तव्य है। अुसका ध्यान न सुलझनेवाली अुलझनकी गुत्थीसे हटकर छोटे बाबूकी ओर गया। वह पुस्तकको अपनी छातीपर छोड़कर सो रहा है। अुसकी बगलमें दीपक अपने प्रकाशको फैलाकर अन्धकारको दूर कर रहा है। चिन्नम्माने पुस्तक हटाकर छोटे बाबूपर दुपट्टा ओढा दिया और कमरेमें जाकर विचार-सागरमे गोते लगाते-लगाते वह निद्रादेवीकी गोदमें खुर्राटे लेने लगी।

अितने लम्बे समयके बाद चिन्नम्माको फिर स्वप्नमें अपना मृत पति दिखाअी दिया। आज भी वह अुसी स्वरमें, अुसे चेतावनी देता हुआ कह रहा है——"चिन्नम्मा! मैंने कहा था न! अुड़नेवाली मछलियाँ हवामें थोडी देर तक ही अुड़ सकती है। फिर अुन्हें पानीमें कूदना ही होगा। यह सम्पत्ति और गौरव तुम्हारे लिअे स्थिर नही है। तुम्हारे भरोसेपर जिस लड़केको मैंने तुम्हें सौपा था, अुसे तुमने आवारा बना दिया। अनाथ, अनाश्रित कर दिया। अुसे भीख मॉगने तथा लाशोंपरके वारपर फेके हुअे पैसे अुठानेको बाध्य किया!"

चिन्नम्मा कॉप रही है। वह सोचने लगी कि पराअे स्थानपर काफी समय वितानेके कारण वह अपने स्थानसे, अपनी स्थितिसे बहुत दूर आ पड़ी है। अुसे याद आने लगा अुस दिनका अपनी आँखों देखा वह दृश्य। ओह! अुसका ध्यान सहसा ही अपने पुत्रके भिखमगा बनकर गली-गली मारे फिरनेकी दुरवस्थाकी ओर गया। 'अम्मॉ' कहकर पुकारनेपर अुसे चाबुककी मार खानेकी स्थिति अुत्पन्न होनेका कारण खुद वही तो है। हाँ, वही है! अुसकी लापरवाही और असावधानीने ही तो पुत्रको गुण्डा, भिखमंगा बननेका अवसर दिया। अिसीलिअे चिन्नम्मा स्वप्नमे दिखाअी देनेवाले अपने पतिसे निवेदन कर रही है कि अुसे कर्तव्यसे पराङ्गमुख होनेकी स्थितिसे शीघ्र ही अुबारा जाअे।

हठात किसीके कूदनेकी आहट पाकर चिन्नम्मा अुठ खड़ी हुअी और छोटे बाबूकी तरफ बढ़ती आ रही है। अुसे पहचानकर चिन्नम्मा बड़े जोरसे चिल्लाअी--"गोपी!" अुसकी आवाज चारो तरफ गूँज अुठी। 'छोटे बाबू' जग गअे और पहरेदारोंने गोपीको पकड़ लिया। अिस दृश्यको देखकर चिन्नम्मा अेक अिंच भी आगे नहीं बढ़ सकी। वह अेकदम भौचक-सी रह गअी और पागलकी तरह अस्फुट स्वरमें गुनगुनाने लगी। कितने समयके बाद अुसने अपने पुत्रको नाम लेकर पुकारा था! अचानक अुसके पतिका चेहरा अुसकी आँखोके सामने चमकते देख वह काँप अुठी।

पहरेदार गोपीको नीचे ले गअे। वह चिल्लाता जा रहा है। अुसमें शायद प्रतिशोधकी भावना आग अुगलती होगी। परन्तु वह मूक है। अिधर छोटे बाबू पूछ रहा है कि--"अिस भिखमंगेको तो हमने बाजारमें कही देखा था। यह मेरे कमरेमें क्यों आया है?" अितने ही में अेक नअे पहरेदारने कह दिया कि यह भिखमंगा नही, बल्कि चिन्नम्माका लड़का है। छोटे बाबूको विश्वास नही हुआ। अुसने अुस नअे पहरेदारके गालपर तीन-चार चपत जमा दिअे और असली बातको जाननेके लिअे अुसने चिन्नम्माके कमरेमें प्रवेश किया।

चिन्नम्मा अेकटक देख रही है कि छोटे बाबू अुससे कुछ पूछनेके लिअे अुसीकी ओर आ रहे हैं, किन्तु यह नहीं तय कर पा रही है कि वह क्या जवाब देगी? सबेरा होते-न-होते जमीदार साहब भी आ जाअेंगे। अुन्हें वह क्या अुत्तर देगी? अुनसे अुसने वादा किया था। अेक ओर अुसका पति

अुसे ताना मार रहा है। दूसरी ओर जमींदार साहबके आनेका समय निकट होता आ रहा है। अिधर अुचित समाधानके लिअे 'छोटे बाबू' दरवाजा खटखटा रहे हैं। अुधर चिन्नम्माके किअे हुअे अपराधका बदला लेनेके लिअे आया हुआ अुसका पुत्र 'गोपी'.......सभी अुसपर अेक-अेक करके हमला कर रहे हैं। वह आगे और अिस हवामें अुड़ नहीं सकती है। ....अिन फिसलनेवाली सीढ़ियोंपर वह चढ़ भी नहीं सकती है।.....

नक्षत्रोंको निहारनेवाली अिस तिमंजले मकानके अूपरसे अुस अन्धकारमें किसी बोझिल वस्तुके नीचे गिरनेसे "धम्म" की आवाज हुअी। जमींदार साहबके यहाँके सभी लोग चौंक अुठे। अपनी कल्पनाके द्वारा बनाअे हुअे महलोंको टूटते हुअे देख चिन्नम्माने अपने दोनों नेत्रोंको खोलकर जगतकी ओर निहारा। अुसकी खुली हुअी आँखें खुली-सी ही रह गअीं।

दूसरे दिन बंगलेमें लौटे हुअे जमींदार साहबने सारी कहानी सुन ली और अुनके मुँहसे अचानक निकल गया--"बेचारीकी क्या दशा.....!"

* * *

७.

प्रणय-कलह

—श्री मुनिमानिक्यम् नरसिंहराव

साहित्य-समिति द्वारा प्रकाशमें आनेवालोंमेंसे आप भी अेक हैं। पारिवारिक जीवनके सुख-दुखोंका अनुभवकर अुसके चिरन्तन आनन्दको कहानियोंके रूपमें प्रदान करनेके लिअे आपने जिस गृहणीकी अपूर्व सृष्टि की, वह है— "कांतम्"। "कांतम" नामक पात्र तेलुगु-पाठकोंके लिअे सुपरिचित हो गया है। मध्यवित्त परिवारके गार्हस्थ जीवनकी मधुर घटनाओंको आपने अपनी कहानियोंमें मंजुल शैलीमें चित्रित किया है। आपकी विशिष्टता है—सुकोमल हास्य। आपके सात-आठ कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। "अुपाध्यायुडु", "तिरुमाळिग" और "वक्ररेखा" अिनके अुपन्यास हैं। ये हास्य-लेखकके रूपमें विशेष विख्यात हैं। आपको "कांतम् कथल" (कहानी-संग्रह) पर "तेलुगु भाषा समिति" का पुरस्कार मिला है।

आप बी. अे. अेल. टी. हैं। आपने बहुत समय अध्यापन-कार्यमें बिताया, किन्तु आजकल आप आकाशवाणी, हैदराबादमें काम कर रहे हैं।

* * *

प्रणय - कलह

मेरी स्त्री जबसे ससुरालमें आअी, तबसे अभी तक अेक बार भी अुसने प्रणय-कलहका अभिनय नहीं किया। अिस 'प्रणय-कलह' शब्दको मैंने काव्योंमें पढ़ा और अनेक मुखोंसे सुना। अिसलिअे मुझे अपनी पत्नीमें 'प्रणय-कोप' पैदा करनेकी अुत्सुकता हुअी। समय-समयपर मैंने कहा भी—"क्यों कांतम्! तुमने कभी प्रणय-कोपका अभिनय नहीं किया?" तो वह जवाब देती—"समय आने दीजिअे। अपने आप हो जाअेगा।" अिस तरह दिन बीतते गअे। हमने कभी प्रोग्राम बनाकर शास्त्रोक्त पद्धति से प्रणय-कलह नहीं किया।

लोगोंको कहते सुना, लेकिन प्रणय-कलह कैसे किया जाअे, मुझे भी नहीं मालूम। अपनी पत्नीको नायिका मानकर प्रणय-कलह करनेको कहूँ, तो बेचारी अुसे कैसे कर पाअेगी? अिसलिअे वात्स्यायन कामसूत्रको मँगाकर अुसके 'प्रणय-कलह' विधानका मैंने आद्यन्त अध्ययन किया। यह अैसा-वैसा विषय नहीं है, सत्यनारायण व्रतकी जैसी तैयारीका काम है अिसमें।

नायकको भोजनके अुपरान्त शुक और सारिकासे बुलवाना है। मेरे मुहल्लेके चतुर्दिक खाली जमीन होनेके कारण मील, डेढ़ मीलकी दूरीमें कहीं तोते और मैना दिखाअी नहीं देते।

शास्त्रकारों द्वारा कहे गअे नियमोका अुल्लघन करनेको मेरा मन नही कहता। चाहे कितने भी कठिन कार्य क्यों न हों, शास्त्र-विधिके अनुसार प्रणय-कलहका निर्वाह करनेका मैंने निश्चय किया। हम तो बडे होते जा रहे है, आगे फिर कौन यह मोल लेगा? अिसलिअे भोजनके अुपरान्त सिरपर तौलिया डाले कड़ी धूपमे अपनी स्त्रीके मना करनेपर भी मै चार मीलकी दूरीपर स्थित बगीचेमे चला गया। वहाँ घूम-फिरकर बड़े प्रयासके बाद शुक और सारिकाओको बुलवाया और शाम तक घर पहुँच गया।

अिसके बादके कार्यक्रमके बारेमें विचार किया--'तदन्ते . . . संमर्जन-पुष्ण प्रकरम्,' शयन रचना . . . . . . अिनकी तैयारी होनी है।

अिनका क्रमशः प्रबन्ध करता आया हूँ। अुसमें शयनगृहको संचारित सुरभि धूपवाला जो नियम है, अुसके पालन करनेके निमित्त दो पैसेकी अगरबत्ती खरीद लाया हूँ।

सन्ध्याके भोजनके समय अिस प्रणय-कलह विधानको अुसे समझाकर अिस कार्यक्रमको सफल बनानेका विचार किया, लेकिन "प्रत्त" अर्थात विवाहिता स्त्रीको काम-शास्त्र ग्रहणका अधिकार नही है। अैसा सोचकर चुप रहा।

भोजनके समय कान्तम्ने पूछा भी--"अैसी क्या बात है कि भोजनके समय भी आप चिन्तामग्न हे?" किन्तु कान्तम्के अिस प्रश्नका मैंने कोअी अुत्तर नही दिया।

अब शयन-रचना करनी है। पुस्तक खोल मेजपर रखकर अेक-अेक विषयको ध्यानसे पढ़ना और अुसी तरह प्रबन्ध करना--यही कार्यक्रम है।

कामसूत्रमे कहा गया है, "शयन-मन्दिर खट्वाश्रय-प्रतिपादिका स्तरणतूलिका आदिसे अलंकृत रहना चाहिअे।" अिस वाक्यमें मुझे अेक शब्दका अर्थ नहीं मालूम हुआ। पास कोअी संस्कृतका विद्वान या विद्यार्थी भी नहीं था। अब क्या किया जा सकता था, अतः अुसको छोड़ दिया।

हंसतूलिकातल्पपर शयन रचना हो। अपने हंसतूलिकातल्प--याने साधारण चारपाअीपर सफेद चादर बिछा दी। आगे लिखा है-"शिरोभागे कूर्चस्थानम्" पहले मुझे अुसका अर्थ मालूम नहीं हुआ। 'कूर्च' शब्द मैंने

शायद कही सुना है। मेरे मनमे आया प्रणय-कलहमें "कूर्च" किसलिअे ? फिर नीचे लिखी टीका देखी तो "कूर्चस्थानम्" माने कुर्सी लिखा है। भले शास्त्रकारने मुझे बचाया। ठीक हमारे हसतूलिकातल्पके शिरोभागमें ही बेतकी कुर्सी है। अब शयन रचना पूर्ण हो गअी।

शयन-मन्दिरकी सजावट अिसके बादका कार्यक्रम है। शयन-गृहमें अेक वेदिका हो। सम्भवतः अुस युगमें टेबुल न रही होगी, अिसीलिअे वेदिका कहा है। हमें क्या चिन्ता ? कमरेमें बढ़िया मेज है।

"नीलोत्पलावगुण्ठित वीणचित्रफलक, पुस्तकम्" और फूलकी मालाअें हो। वीणाके बदले मेरी पुत्रीका फिडेल है। चित्रफलक भले ही न हो, चित्र तो है। "पुस्तकम्" कहा है। अेक क्या सैकड़ों हैं कम्पोजीशन पुस्तकोंको मिलाकर।

अेक आध घण्टेमें कान्तम् सब कुछ ठीक कर देनेवाली है। मैंने कुर्सीपर बैठकर प्रणय-कलह विधान फिर अेक बार पढ़ा। अुसमेंसे मुख्य विषयोंको अनुक्रमणिकाके रूपसे कागजपर अंकित किया।

प्रणय-कलहका प्रथम अध्याय या दृश्य है प्रेयसीको क्रुद्ध करना ..... किसी सौतका नामोल्लेखन-- सौतके नामका अुच्चारण करे---सकेत रूपसे सौतको लक्ष्यकर प्रशंसापूर्ण संभाषण या अुस सौतको ताम्बूल आदिका भेजना जिसे प्रेयसी सहन न कर सके, ये ही प्रणय-कलहके कारण हैं।

क्रुद्ध होनेपर नायिका द्वारा "वाचा" (वचनों द्वारा) कार्यतः (कार्यों द्वारा) कलह पैदा करना है। सिरके केशोंको फैलाना, पलंगसे अुठकर पृथ्वी-पर लेटना, धारण किअे हुअे पुष्पों, मालिकाओं, जेवरोंको अुतार देना अित्यादिको द्वितीय सूत्र बतलाता है। यह बड़ा कठिन कार्य तो नही है, क्रुद्ध होना है। बस, अिससे सहस्र गुना मूल्यवान काम कर देती है मेरी कान्तम् !

और तृतीय दृश्यमें "अनुनय, शयनारोहण पादताड़नम्, अनन्तरम् अश्रुकरणम्, द्वारदेशगमनम्। युक्तिके साथ नयमानम्, प्रसन्नता आलिगनम्, अन्तमें संयोगम्।" ये ही विधियाँ हैं। अिन सबमें कठिन कार्य प्रथम दृश्यमें प्रणय-कलहके लिअे कारण पैदा करना ही है। राजा-महाराजाओंके लिअे अष्ट भार्याअें या अष्टादश भार्याअें होती हैं। अिसलिअे सौतकी प्रशंसा

करना सुलभ तथा संभव है। अेक ही नारीके साथ गृहस्थीको घसीटनेवाले अेक साधारण व्यक्तिके लिअे यह कैसे साध्य होगा? यदि अैसा नहीं है तो किसी परनारीकी प्रशंसा करके कलहका अंकुर बोया जा सकता है। अुसके बाद मेरी स्त्रीके करनेवाले अुपद्रव या हंगामाके लिअे वह सूत्रकार कहाँ तक जिम्मेदार हो सकता है?

यह अेक बड़ी समस्या हो गअी है। अिसका हल क्या हो, यह मैं सोच ही रहा था कि अितनेमें चूड़ियोंकी झनझनाट सुनाअी दी। मेरा दिल अेकदम बैठ गया। अेक हाथमे लिअे हुअे रजतपात्रसे पूरित और दूसरे हाथकी लड्डूभरी थाली लिअे कान्तम् आ ही गअी।

कुछ लोग प्रेयसीको रमा रम्याकार, चतुरवचनी, चारुचिकुर, विमूल्या-लंकार और न जाने और क्या-क्या कहकर पुकारते है। परन्तु मेरी स्त्री साधारण हल्के रंगकी साड़ी पहने ही आअी। अुसके अुज्ज्वल नयन नही, मामूली आँखे है। झुर्रियोंसे पूर्ण कपोल। फिर भी विरक्त न होकर प्रणय-कलह प्रारम्भ करनेका निश्चय किया।

अुसके आते ही अुसके समक्ष जाकर कामसूत्रके अनुसार कहना होता है—"प्रेयसी! तुम्हारे लिअे तड़प रहा हूँ। मेरी स्थिति जानते हुअे तुमने देरी क्यों की?" मैंने भी अुसी प्रकार कहना शुरू किया।

कान्तम्को अुस दिनका कार्यक्रम अभीतक नही मालूम था। अिसलिअे अुसने कहा—"क्यों, क्या हो गया है? परिहास चेष्टाअें न कीजिअे। कोअी सुनेगा तो हँसेगा।"

शामको शुक और सारिकाओंको बुलवाया गया। कामसूत्रमें वर्णित प्रेयसीकी विधियोका स्मरण कराया गया। अुसने कहा—"शुक क्या है और सारिका क्या है? आपके अिन अनर्गल प्रलापोंका अर्थ मुझे नही मालूम।"

"कुछ नही कान्तम्! अितनी विकल होकर क्या देख रही हो? मै मामूली आदमी ही हूँ। यों ही हँसी-मजाकमें कह रहा था।"

"अपने बच्चे ही हम लोगोंके लिअे तोते और मैना हैं। अभीतक मैं अुनसे बोलती ही रही।"

"यहाँ आओ, बैठो।"

वह मेरी शैयापर ही बैठ गअी। अब प्रणय-कलहके कारणकी कल्पना करनी थी। सारी कठिनाअी अुसीमे थी। सौत या परस्त्रीसे परिपयकी प्रशंसा करूँ तो समझ लीजिअे, गृहस्थी डूब गअी। अिस झंझटसे बचनेके लिअे प्रणय-कलहका दूसरा कारण बना लिया गया।

"कान्तम् ? ...."

"अूँ........।"

"हमारी सीताको देखनेके लिअे......."

"सीता है कौन ? ......"

"सीताको नहीं जानती ? मेरी फुफेरी बहन।"*

"हाँ.....तो ?"

"सीताको देखनेके लिअे कल जा रहा हूँ।"

"जाअिअे, अिसमें मेरी आज्ञाकी क्या आवश्यकता थी !"

"आज्ञाके लिअे नहीं, यों ही कह रहा हूँ। सीता बहुत रूपवती है। मैंने अुसके साथ विवाह भी करना चाहा था। लेकिन भाग्यने साथ न दिया। मालूम होता है कि भगवानकी भी अिच्छा नही थी।"

"अब क्या हुआ ? चार बच्चों सहित आअेगी। प्रयत्न तो कीजिअे।"

"मेरा कहना यह नही। यह तो तुम मानती हो न कि वह अत्यन्त सुन्दर है ?"

"क्यो नही ! वह तो तारिका है। आप सब अेक ही वंशमें पैदा हो गअे है न ? अेक ही श्रेणीके है।"

मेरे खयालमें आया, सीताकी सुन्दरताके प्रशंसापूर्ण वाक्य कहकर कान्तम्को बदसूरत कहकर व्यंग्य करूँ तो अुसे आवश्य क्रोध आ जाअेगा। तब अविच्छिन्न रूपसे प्रणय-कलह चल सकेगा।

---

*आन्ध्रमें फुफेरी बहनके साथ विवाह होता है। किन्तु अब यह प्रथा हटती जा रही है।

"वह (सीता) चार बच्चोंकी माता है। फिर भी अुसका सौन्दर्य जरा भी कम नही हुआ। कपोल पिचके नही। अुरोज......"

"वस, बस, अब बन्द कीजिअे।"

"अुसके गालोकी चिकनाअी.....अुसके केश...."

"ये कैसी वाते है? परायी स्त्रीके बारेमें अैसी बाते सुनते मेरा हृदय जल......"

"आया है क्रोध? ...."

"हाँ....."

"तो जल्दी अुठकर जमीनपर धीरेसे गिर जाओ। प्रणय-कलह प्रारम्भ करेंगे।" अपना संकल्पित कार्यक्रम निष्कंटक पूर्ण होनेकी आशासे सन्तोषके आवेगमें मैंने कहा।

"आप पागल तो नही हुअे? ढकेलते क्यों है? नीचे गिर जानेको मुझे क्या पड़ी है?"—अुसने भावपूर्ण चमकनेवाले नेत्रोसे कहा। मेरा आशय यह नही है। प्रणय-कोपके अुत्पन्न होनेके कारण सत्यभामा वरुथिनी, प्रभावती आदि नायिकाअें नीचे गिर गअी थी। तुम जमीनपर नही गिरोगी तो प्रणय-कलह कैसे होगा?"

"न हो, तो न सही। अब कौन-सा अुपद्रव मचनेवाला है? पागलकी चेष्टाअें! धक्के देकर गिराते क्यों हैं?.....आज....आपको कुछ.....ठहरिये, मै अपने बिस्तरपर जाती हूँ।"

"जाओ तो सही......"

"आज आपको क्या हो गया है?........अुन लाट साहबोकी (फिरंगियोकी) दोस्ती कर रहे है? क्लबमें बहुत देर तक रह रहे है। मेरी बदनसीबी......"—कहती वह दूसरे बिस्तरपर जाकर लेट गअी।

अबतक तो मेरा प्रणय-कलह सफलतापूर्वक चला। द्वितीय दृश्यमें नायिकाको विवृद्ध क्रोधमें लाकर मालिकाओं तथा अन्य अलंकारोको देना होता है। मैंने सोचा, क्रोधित हो गअी है, वह कार्य भी कर देगी। लेकिन यह क्या, वह गम्भीर हो, रूठकर चुपचाप लेट गअी है। अुसकी वेणीमें गुँथे

हुअे गुलाबके फूलने मुझे देख मानो अपने नेत्र लाल-लालकर लिअे है। मैंने ही जाकर अुस फूलके टुकड़े-टुकड़े करके बिखेर दिया। अिसके बाद कान्तम्के पार्श्वमें बैठकर पुस्तककी बातोंका पठन किया--"कान्तम्! देखो, मेरी गलतीको माफ करो। तुम्ही रूपवती हो। सन्तानवती होनेपर भी तुम्हारे कपोलोंपरकी चिकनाअी कम नही हुअी। तुम्हारे सिरके बाल भी अभी अधिक सफेद नही हुअे है। हे शरत्कालके पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली सुन्दरी! हे तरुणवयविलासिनी! अुठो। शयनारोहण करो।" कान्तम् मेरी तरफ पागलकी नाअीं देखने लगी। वह भयकम्पित जैसी मुझे मालूम हुअी। मैंने कहा--"कान्तम्! तुम्हें कोअी भय नही, मेरे बिस्तरपर आ जाओ।"

"यह सब क्या है आपका व्यवहार? मैंने किया ही क्या था? आपने ही तो अभी धक्का देकर मुझे गिरा दिया और आप ही माफी माँग रहे है?"

"वैसा मै कभी नही करूँगा। आओ, मेरी भूलपर ध्यान न देकर क्षमा करो।"

"मै क्षमा किसके लिअे करूँ? यह सब क्या है? चलिअे।"

"ठहरो....ठहरो.....अुठो मत। प्रणय-कलह क्रमानुसार पूर्ण हो जाअे। अभी तुम्हें अेक काम करना होगा।"

"क्या है वह?"

"मेरे किअे हुअे अपराधोंका स्मरणकर मेरी मध्य पीठपर कही धीरेसे अेक लात मारो। अिससे प्रणय-कलहका पात्र परिपक्व होने लगेगा। अुसके बादमें मेरा गिड़गिड़ाना, तुम्हारा कुछ समय तक अनुकरण करना, तदुपरान्त शयनारोहण--यही कार्यक्रम बाकी है।

"यह सब काम अभी ही हो जाना चाहिअे?"

"नही तो प्रणय-कलह पूर्ण नही होगा।"

"अैसा होना ही चाहिअे, यह कहाँ लिखा है।"

"ग्रन्थमें देखो, ये ही कामसूत्र है। अिसीलिअे मै यह सारी तकलीफ अुठा रहा हूँ। "अूँ"--कहते हुअे धीरेसे अेक ठोकर मारी।"

"बात यह है, महाराज! मैं दुनियाकी बात अधिक नहीं जानती। तभीसे यह सोचकर मैं बहुत भयभीत हो गअी हूँ कि आपका दिमाग खराब हो गया है। खराब पुस्तकें पढ़कर मुझे रुला रहे हैं। ये सब असह्य कार्य करनेको कहते हैं।"

"तो तुम्हारी राय क्या है? प्रणय-कलह आधा तो समाप्त हो गया गया है। मध्यमें हैं। अब क्या अिसमें विघ्न करोगी?"— गद्गद् कण्ठसे मैंने कहा।

"प्रणय-कलह चलाना है! चलाअूँगी, अच्छी तरह चलाअूँगी! अिधर आअिअे तो।"

मुझे अपने पास बुलाकर अुसने शिक्षक द्वारा किसी नटखट विद्यार्थीको दण्ड देनेकी मुद्रामें मेरा कान पकड़कर अैंठते हुअे कहा—"फिर कभी अैसा नाटक रचेंगे.....?"

"ओह! ......"

"कहिअे, आगे कभी अैसा अभिनय नहीं करेंगे? क्यों?"

"ओह! ....."

"फिर कभी नहीं करेंगे न?"

"अूँहूँ.....अूँहूँ.....छोड़ दो।"

* * *

८.

मृग-जल

—श्री के. सभा

तरुण पीढ़ीके कहानीकारोंमें आपका नाम आदरके साथ लिया जाता है। अध्यापकका काम करते हुअे आपने देहाती जीवनका पूर्ण अनुभव प्राप्त किया। किसान और अुनकी समस्याओंपर आपने सैकड़ों कहानियाँ लिखी हैं। तेलुगु लोक-साहित्यके क्षेत्रमें आपने प्रशंसनीय कार्य किया है। आपने तेलुगु लोक-गीतोंका बहुत बड़ा संग्रह तैयार किया है और अुन्हें पत्र-पत्रिकाओं तथा रेडियो द्वारा जनताके सामने रख रहे हैं। आपने यह सारा संग्रह देहातोंमें घूमकर अुन्हींके मुँहसे सुनकर किया है। आपके अुपन्यासोंमें 'भिक्षुकि' और 'देहांतकुडु' मुख्य हैं। बालकोपयोगी अुपन्यासोंमें 'चन्द्रम्', 'सूर्यम्' और 'राधाकृष्ण' अुल्लेखनीय हैं। निम्न वर्गके लोगोंका जीवन आपकी रचनाओंमें पढ़ते ही बनता है। 'नागेलु', 'वाहिनी' और 'प्रजा राज्यम्' नामक पत्रोंका आपने कुछ समय तक सम्पादन किया। अिस समय आप साप्ताहिक 'आन्ध्र प्रभा' में कार्य कर रहे हैं।

* * *

मृग - जल

सुदर्शन बड़ा सहृदय, अुच्च आदर्शोंवाला अेवं विश्व भ्रातृत्वका आकांक्षी था। आरंभमें अुसने जीवन-पर्यन्त ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहा, परन्तु परिस्थितियोंने अुसका साथ नहीं दिया। बन्धु-मित्र, माता-पिता—सभीकी अिच्छा थी कि सुदर्शन विवाहके सूत्रमें बँध जाअे। अुनका यह चाहना सहज अेवम् स्वाभाविक भी था। अिसके अलावा वांछित वधूके साथ विवाहकी स्वीकृति देना बड़ी विशेषता है।

कहावत प्रचलित है कि मित्रता, शत्रुता व रिश्तेदारीके लिअे समानता-का होना बहुत ही आवश्यक है। सुदर्शनके विवाहमें यह समानता सोलहों आने ठीक बैठी थी। सावित्री बहुत अंशोंमें सुदर्शनके लिअे योग्य पत्नी थी। सुदर्शनके भावोंमें और सावित्रीकी कल्पनाओंमें विशेष अन्तर नहीं था। यदि था भी तो बहुत ही कम।

सावित्री अपने विवाहके बादसे अपनेको सुदर्शनकी विचार-धाराके अनुकूल बनानेका भरसक प्रयत्न करती आ रही थी। वह सदाचारोंका पालन करनेवाली थी, परन्तु कुछ विषयोंमें वह स्त्रीत्वसे भिन्न दिखाअी देती थी। कालेजमें पढ़ते समय अुसके हृदयमें यह भावना बद्धमूल हो गअी थी। दशहरेके अुत्सवोंके अवसरोंपर कालेजमें वैज्ञानिक समारोह हुअे थे। अुनमें अुस समय अनेक विद्यार्थियोंके व्याख्यान भी हुअे थे। अुनमें "स्त्री-स्वातंत्र्य"

भी अेक चर्चाका विषय था। अुस संदर्भमें सावित्रीके भाषणके बाद जीवानंदम्ने अपने भाषणमे स्त्रियोंकी बड़ी अवहेलना की। महिलाअें बच्चोंको जन्म न देकर क्या पुरुषोसे जननेको कहेंगी ? यह प्रश्नकर वह अुपस्थित व्यक्तियों-की शाबाशी लेकर बैठ गया था। अुस दिनसे सावित्रीके हृदयमें सन्तानके प्रति अेक प्रकारकी घृणाकी भावना पैदा हो गअी थी। बच्चोंकी मल-शुद्धि करनेवाली स्त्रियोंको देखनेपर वह नाक-भौं सिकोड़ती।

घरमें भी भाअीके बच्चे थे। अुन्हें भी वह सदा अपने पास नहीं आने देती। यदि कभी अुन बच्चोंको अपने हाथोंमें लेती तो गोदमें तौलिया बिछाकर दो मिनट बिठाती फिर वापस कर देती।

पाँच-छह बच्चोंकी माताको देखनेपर सावित्रीका मन विचलित हो अुठता। अुन बच्चोसे झेलनेवाली यातनाओंके प्रति वह सहानुभूति दिखाती। विवाहके पहले वह सदा विचित्र भावनाओंकी भँवरोंमे लीन रहा करती। वह यही सोचा करती कि विवाह करना ही नही चाहिअे और यदि करना ही पड़े तो सन्तान न हों। आदि. . . . . आदि।

वह सुदर्शनसे बहुत कम मिला करती थी। सावित्रीके मनमें सुदर्शनके प्रति पहले आदरका भाव जगा और वही बादको प्रणय-रूपमे परिणत हुआ। अन्तमें दोनोंका विवाह होकर ही रहा।

सुदर्शन हमेशा संसारका सुधार करना चाहता था। अुसे अपने अतीत विषयोंके बारेमें चिन्ता करनेकी धुन सवार हो गअी थी। सावित्री अुसकी कल्पनाओंको और निकट खीचती। दोनोंकी भावनाअें अूंची थी, अिसमें कोअी सन्देह नही।

अुन दोनोंको अधिक आकर्षित कर सकनेवाली समस्या थी सन्तान-निरोध। देशमे यह समस्या अधिक सोचनेको बाध्य कर रही थी। जनसंख्या दिन-प्रति-दिन सीमासे ज्यादा बढ़ती जा रही थी। खाद्योत्पत्ति कम होती जा रही थी। बड़े-बड़े अर्थशास्त्रवेत्ता सन्तान-निरोधको कानून द्वारा अमल करनेकी सलाह व सूचनाअें दे रहे थे। ये भावनाअें जब सुदर्शनके दिमागमें आतीं, तो वह चिन्तित होकर बैठ जाता था। सावित्री अुसपर व्याख्यान देने लगती थी।

अिन दोनोंकी चर्चाओंको तमाशेकी भाँति सुननेवाली सुदर्शनकी माताकी अिच्छा क्या है, समझमें नही आती। अुसे पोता चाहिअे। भाग्यवान लोग पुत्रके पोतेको भी देख पाते हैं। अिसलिअे विवाहके समय "शीघ्रमेव सीमंत कल्याण प्राप्तिरस्तु" कहकर बड़े लोग आशीषोंकी वर्षा करते हैं। विवाहके अेक वर्ष बाद सीमंत विवाहका होना भाग्य माना जाता है। अिस आचारको बहुतसे लोगोंने छोड भी दिया हो, परन्तु कही-कहीं यह माना ही जाता है। सासने अपनी बहूको गर्भवती बनानेके लिअे कुल देवताओंकी पूजा की थी। अुसका विचार था कि परिवारमें सीमंत, नामकरण, केशमुँडन, अुपनयन आदि संस्कार क्रमशः होते रहें तो जीवनमे आनन्द रहेगा।

सावित्री तो ठीक अिसके विरुद्ध जीवन बिताना चाहती थी, सुदर्शनने भी मान लिया। दोनोने अेक प्रसिद्ध डाक्टरकी सलाह लेकर अपनी अिच्छा पूरी कर ली। अिस विषयको गुप्त रखनेका अुन दोनोंने बहुत प्रयत्न किया। अन्तमे अुन्हें कहना ही पड़ा।

जब बूढ़ीको ये समाचार मालूम हुअे तो वह चौक पड़ी। अुसने स्वप्नमें भी नही सोचा था कि अुसके परिवारमें अिस प्रकारकी दुर्घटना हो जाअेगी। वह तो यह मान बैठी थी कि अीश्वर-प्रदत्त सहज वरदानको ठुकराना महान पाप है। स्त्रीके सहज सिद्ध भाग्यको ठोकर मारना कठोर कृत्य है। बूढ़ीने कहा "आपत्तिसे पहले ही सन्तानकी गर्भमें ही बैठे हुअे वृक्षकी शाखाकी स्वयं हत्या कर देना, अपने वंश-वृक्षको जड़ सहित निकालकर नष्ट करने के समान महान अपराध है।" सावित्रीने अिस कथनका कोअी अुत्तर नहीं दिया। सुदर्शन भी चुपचाप बैठा रहा।

अुस दिनसे बूढीने चारपाअी पकड़ ली। वह अपने पोतेको न तो देख ही सकेगी और न अब अिस जीवनमे वह अुसका चुम्बन ही कर पाअेगी। अुसकी अिन स्वर्णिम कपल्नाओपर पानी फिर गया है। अुसे अब जीवन निस्सार मालूम होने लगा था।

जीवानंदम् सुदर्शनके परिचितोंमेसे अेक है। अुसे जब यह समाचार मिला, तो वह चकित रह गया। सुदर्शनने अपनी करनीका समर्थन करनेका प्रयत्न किया। परन्तु जीवानंदम् यों ही माननेवाला नही था। अुसने कहा—

"संतानवान और संतानहीन व्यक्तिके बीचमें खाअी जितना अंतर है। गौतम वुद्धकी भूतदया और गाँधीजीके करुणा-स्रोतके लिअे अुनमें पितृ हृदयका होना ही मूल कारण है।"

"संतानवान पितामें सहन-शक्ति होती है। अुसके वक्षपर छोटे-छोटे पैरोंका नृत्य होता है। वह अपना माँस देकर कलेजेकी सृष्टि करता है, अपनी आहुति देकर बच्चोंका पालन-पोषण करता है। अतः वह सहज रूपसे शिवि तथा कर्ण है और जन्मसे ही पुरुरवा......।"

"यही नही, वल्कि अिससे विरुद्ध संतानहीन मातामें अैसा माना जाता है कि अुसके नेत्रोंमे ठंडक नही होती। अुसके हृदयमें अनुराग नहीं होता। अुससे प्राणामृतकी धारा फूट निकले, अैसा अवकाश ही अुसे कहाँ? अुसे अैसा लगने लगता है कि यदि मधुर अेवम् अति मधुरमयी माताके स्थानको न प्राप्त कर सकी, तो अिस संसारमे अुसका जन्म ही क्यों हुआ?"—अैसा कहते-कहते जीवानंदम् कुपित होकर वहाँसे चला गया।

अुसका लंबा-चौड़ा भाषण सुदर्शनके लिअे असहनीय था। सावित्रीको भी क्रोध आया, परन्तु दोनो चुप ही रह गअे।

बूढ़ी कराहती जा रही था। अुसकी दयनीय दशा देख सुदर्शनका हृदय टूक-टूक होता जा रहा था। सावित्री अुसकी सेवा-शुश्रूषामे लगी हुअी थी। सावित्रीकी सास तो अपने पोते-पोतियोका स्वप्न देख रही थी, अुसकी पीठपर पोते झूले झूल रहे है।

अुसे रातमें निद्रा नही आती। दोपहरके समय थोड़ी देर सो जाती है। स्वप्न देख रही है—वह किसी तालाबके किनारेपर खड़ी है। पाँच सालकी बच्ची, जो अपनी बहूकी प्रतिछाया मालूम हो रही है—अुसकी अुँगली थामे खींचे लिअे जा रही है। खिल-खिलाकर वह हँस पड़ती है। बीच-बीचमें वह अुस बूढ़ीकी आँखोंमे देखती है।

वह छोटी लड़की अुस बूढ़ीको तालाबके किनारे ले जाकर बिठाती है। वह जलमे ध्यानपूर्वक देख रही है। अुसका मुखमंडल जलमें दर्पणकी तरह प्रतिबिंबित हो रहा है। वह न मालूम क्यों, हठात पानीमे कूद पड़ी। बूढ़ी जोरसे चिल्लाअी। सावित्रीने अुसे पकड़ना चाहा। सुदर्शन भी

दौड़ता आया। बूढ़ी कुछ बोली नही और तालाबमें गिरी हुअी लडकीको लाने चली गअी।

बेचारे! सुदर्शनका सिर झुक गया। सावित्री अपने अतिशय दु:खको न रोक सकी। वह जोर-जोरसे रो पड़ी।

माता तो चली गअी। अुन्हें बाल-बच्चे भी नहीं। पति-पत्नी दोनों रह गअे है। अुन्हें कोअी अज्ञात अभाव खटकने लगा है। सुदर्शन प्रति दिन सोचता रहा है। अुसे यह सोचकर अत्यंत दुख होता है कि अुसने कोअी बड़ा अपराध किया है, वह मानो अक्षम्य है।

वास्तवमे सन्तान-निरोधके अमल करनेकी अिच्छा बहुतसे लोग प्रकट कर रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओंमे भी अिस विषयके अनेक लेख छप रहे हैं। अिसी आशयको लेकर सुदर्शनने संतान-निरोधका अमल किया, परिणामस्वरूप अुसकी माता चली गअी।

आत्मा कहता है--प्रेम क्या है? वह कहाँसे अुत्पन्न होता है? मातृत्वसे ही अुसका जन्म होता है। छोटे-छोटे शिशुओकी नेत्र-काँतियाँ, अिनके पतले ओठोकी रागारुणिमा, ज्योत्स्नाकी कांतियोंसी बिखरनेवाली मुस्कुराहटें, हृदयकी आकर्षित कलियाँ--ये सब प्रेमामृतसे पलनेवाली सरल रेखाअें है।

सावित्रीने अुसका ध्यान-भंग करते हुअे कहा--"सदा अिस प्रकार चिता करते रहनेसे स्वास्थ्य खराब हो जाअेगा।" सुदर्शनने सावित्रीकी ओर देखा। अुसकी आत्मा जता रही है कि सावित्रीमें स्त्रीत्व नहीं है, यौवन हो सकता है--परन्तु अुसमें स्वभावजनित प्रेमामृत नहीं है।

सामने अेक गाय जा रही है। अुसके पीछे "अंबा-अंबा" करता दौड़ता आ रहा है बछड़ा। गाय खड़ी हो जाती है, बछड़ा अत्यंत आनंदके साथ अमृतमय पेयका पान कर रहा है। बगलमें ही मुर्गी बोल रही है--अेक मूंगफलीको टुकड़े करके बच्चोंको दे रही है। बच्चे अुन्हें खा रहे हैं।

अितनेमें स्कूलकी घंटी बजी। छोटे-छोटे सुन्दर बालक, जो बहुत ही प्यारे मालूम हो रहे हैं, घरकी ओर छलाँगें मारते जा रहे हैं।

सुदर्शन अुठ खड़ा हुआ। अुसे बाजारकी तरफ जाते देख सावित्री खड़ी-खड़ी अुसकी ओर देखती रही, लेकिन अुससे कुछ कहे बिना ही सुदर्शन

चला गया। वह अुसी ओर खड़ी देखती रही। गलियोंमें गायोंके झुण्ड जा रहे हैं। अुनके बछडे छलाँगे मारते हुअे आकर अपनी माताओसे मिल रहे हैं।

सावित्री अुन्हें देख-देखकर अतिशय दुखित होने लगी। अुसके हृदयके किस कोनेमे अभी मातृत्वकी कामना जीवित है। वह समयकी प्रतीक्षामें है। वह शीघ्रतासे भीतर चली गअी। अुसके पैरके नीचे बिल्लीका बच्चा "म्याअुँ-म्याअुँ" कहकर चिल्लाने लगा। बेचारा! अुसको कैसी पीड़ा हुअी होगी। अुसे अपने हाथमें लेकर देखा कि अुसका पैर तो नही दब गया है? दीवारपर छिपकली रेंग रही है। बरामदेमें गिलहरी "किच-किच" कर रही है। क्या अिन सबके भी बच्चे है?

सावित्रीको अब संसार मालूम होने लगा है। सारा संसार "माता" मे व्याप्त हैं। सारी प्रकृति मातामे घिरी हुअी है। सारा प्रेम मातामें मूर्तिभूत है। मातृत्वहीन वह विवाह ही क्यों? सतान-कामना रहित प्रणय ही क्यों?

काम-वासनाके माने क्या है? अब अुसकी समझमें आया। संतान नही होनी चाहिअे। अच्छी बात है, परन्तु कामनाअें तथा प्रणय-वांछाअें पूरी हों? अिससे बढ़कर अन्याय क्या है? संतान न चाहनेवाले ब्रह्मचारी बनकर रहते क्यों नही? जब अिंद्रियोंपर दमन करनेकी शक्ति नहीं हो तो संतान होनेसे क्या नुकसान?

अुसे गाँधीजीका स्मरण हो आया। प्रत्येक व्यक्तिके जीवनमें बापूजीका स्मरण न आनेवाली घटना नहीं होगी।

अुन्होंने क्या किया था? पाँच बच्चोंके पिता बननेके बाद भी अुनकी शारीरिक शक्ति कम नही हुअी। यौवन कम नहीं हुआ, फिर भी अुन्होंने ब्रह्मचर्यका पालन किया था।

गौतमके विकासमें भी यही हुआ है। अुनको अेक ही पुत्र था; विशाल राज्यके वे राजाधिराज थे। सुख-भोगोकी अुन्हें कोअी कमी नहीं थी। लेकिन विश्वकी पीड़ाको बरदाश्त न कर सकनेके कारण ही वे विरागी हुअे थे।

संतान-निरोधपर लेक्चर देनेवाले ब्रह्मचर्यका पालन क्यों नही करते ? ये औषधियाँ क्यों ? ये अिंजेक्शन और आपरेशन क्यों ? दोनों हाथोंमें लड्डू चाहेंगे तो कैसे संभव होगा।

सावित्री शिक्षिता थी। अतः अुसे सारी बाते जल्दी ही स्मरणमें आ गअी। वह पछताने लगी—"ओह ! मैं कैसी पागल हूँ ! किस वस्तुमें अैसी महान शक्ति है, कौन जाने ? यदि माया देवी मेरी ही तरह सोचतीं तो गौतमका पता कहाँ रहता ? बापूजीकी माता मेरी तरह स्वार्थिनी होतीं तो गाँधीजीका जन्म हुआ होता ? शिवाजी, विवेकानन्द आदिकी सृष्टि अुन मातृ. . . . .मूर्तियोंके प्रसादके फलस्वरूप ही तो है। मुझे कैसी संतान हुअी होती ? मेरे बच्चे क्यो नहीं महात्मा हुअे होते ? कवि, गायक, पंडित, चित्रकार . . . ."

ओह ! स्मरण मात्रसे सारा शरीर काँप अठा। अुसकी वेदना असीम हो अठी। अिस बीच दरवाजा खटखटाअे जानेकी आवाज हुअी और सावित्रीने जाकर दरवाजा खोला। अुसने देखा कि सुदर्शन अेक बहुत बड़ा खिलौना ले आया है। अुस रबड़के खिलौनेको गाअुन पहनाया हुआ है। सावित्रीने अुस खिलौनेको अपने हाथमें लिया। सुदर्शनने सावित्रीको देख गहरी साँस ली और अन्दर चला गया।

अेक वर्ष बीत गया। सावित्री अपने भाअी और भाभीको समझाकर भतीजेको घर लाअी है। अुसे पालते हुअे वह अपनी पीड़ाको भूल जानेका प्रयत्न करने लगी। सावित्री अुस लडकेमें अपने पुत्रको देखना चाहती थी, परन्तु वह शिशु सावित्रीमें अपनी माताको नही देख पाया। सावित्रीको "फूफी" "अम्मा" कहकर बुलाना तो लड़केसे बन नहीं पड़ रहा है।

सावित्रीके पालन-पोषणसे सारगम बड़ा होता जा रहा है, लेकिन अपनी माता और पितासे अुसकी ममता घटी नही। वह बढ़ती ही जा रही है।

अेक दिन किसी अपराधपर सारंगमको सुदर्शनने डाँटा। अुसी रातकी गाड़ीसे वह (सारंगम) किसीसे कहे विना चला गया।

वह यदि अपना ही पुत्र होता तो डाँटे-डपटे, मारे-पीटे जानेपर भी पैरोंसे लिपटे घरमें ही पड़ा रहता। परन्तु सारंगम तो औरस पुत्र नहीं,

पालित शिशु है। अुसपर क्या भरोसा है, कभी भी वह अिस कल्पित संबंधको सदाके लिअे तोड़ सकता है।

सगे पुत्र भी जब अिस जमानेमें माता-पितासे रूठकर अलग हो जाते है' तो पराअे बच्चे अपने कैसे हो सकते है ?

सावित्रीकी आशाओंपर पानी फिर गया। सुदर्शनने भी दो-तीन सप्ताह मौन धारणकर बिताअे। अुसे अैसा मालूम होने लगा कि सारा संसार अुसे घृणाकी दृष्टिसे देख रहा है। जिन्हें सन्तानें है, अैसे पिता मानो अुसका अुपहास कर रहे हैं। सभी घर बाल-बच्चोंसे शोभायमान हैं। अुसे अपना घर अन्धकारमय दिखाअी दे रहा था। जो टिमटिमानेवाला धुँधला-सा दीप अुसके घरमें रोशनी किअे हुअे था, वह भी बुझ गया है। अुसकी वासनाअे और आकांक्षाअे कभीकी मर चुकी हैं। अब वह मानवता-की प्राप्तिके लिअे प्रयास करने लगा है। अिस प्रयत्नमे अुसे दो ही मार्ग दिखाअी देने लगे हैं। अेकांतवास अथवा तीर्थाटन। वह यदि तीर्थयात्रा भी करे तो अुसे शान्ति नही मिलेगी। जहाँ भी जाअेगे, मानव संतति प्रत्यक्ष होगी। किसी निर्जन काननमे अुसने अपना शेष जीवन अेकाकी ही व्यतीत करना चाहा। अिस दृष्टिसे किसी दंडकारण्यमें जानेका विचार किया; किन्तु फिर अेक विचार अुसके मनमें आया कि यदि यह विचार वह सावित्रीको बता देगा तो वह जाने नही देगी। बल्कि वह पैरोकी जंजीर बन जाअेगी। बिना कहे चला जाअे तो यह करना अुसका पत्नीघात करना होगा। यदि दोनों ही साथ जाअे तो कैसा रहेगा? यह विचार अुसे पसन्द आया। अुसने सावित्रीसे सलाह ली।

प्रस्तावपर सावित्रीने बिना किसी हिचकिचाहटके अपनी स्वीकृति दे दी।

दोनोने गेरुअे वस्त्र तो नही पहने, लेकिन सन्यास अवश्य धारण किया। अपना घर-द्वार अेवं सारी जायदाद अुन्होंने स्थानीय अस्पतालके नाम लिख दी। सावित्रीने आँखोंमे आँसू भरकर अस्पतालके अध्यक्षसे निवेदन किया कि अुसका घर प्रसव-मंदिर बनाया जाअे और अुसे महिला वार्डके रूपमें अिस्तेमाल किया जाअे।

डाक्टरने भी आनंदपूर्वक अिस सुझावको अंगीकार कर लिया।

अितना कर चुकनेके पश्चात यह दंपति किसी अज्ञात प्रदेशके लिअे रवाना हो गया। अुसका गम्य स्थान कहाँ है, अुसे स्वयं नहीं मालूम था। मध्य मार्गमें फूल-फलोंसे लदे वृक्षों तथा छोटे-छोटे पक्षियोंको देखनेपर सावित्रीका हृदय भर आता। वह विचलित होकर रो पड़ती।

अेक स्थानपर दोनों अेक निर्मल सरोवरके पास बैठे हुअे थे। अुस सरोवरमें अुन्होंने देखा कि माता मछली अपने बच्चोंसे खेल रही है। अितने ही में अेक बड़ी मछलीने आकर अकस्मात ४–५ बच्चोंको निगल लिया। माता मछली अपने शत्रुका सामना करनेमें असमर्थ थी। अतः वह भी अपने बच्चोंको खाने लगी। जब सावित्रीने यह देखा कि अिस प्रकृतिमें अपने बच्चोंको निगलनेवाली माताअें भी हैं, तो सावित्रीका कलेजा टूक-टूक हो गया। अुस दृश्यको वह और अधिक न देख सकी और अुस मछलीपर कूद पड़ी। सुदर्शन भी अुसे पकड़नेके लिअे तुरन्त अुस सरोवरमें कूद पड़ा।

* * *

१.

चतुराअी

—श्री नार्ल वेंकटेश्वर राव

आप आन्ध्र प्रदेशमें विशेष रूपसे प्रचारित दैनिक-पत्र 'आन्ध्र-प्रभा' के सम्पादक हैं। २०–२५ सालोंसे पत्रिका-जगतमें कार्य करते हुअे भाषा-पत्रिकाओंके प्रचारकी वृद्धि करनेमें आपने विशेष योगदान दिया और पत्रिका रचना-को अेक प्रचण्ड शक्तिके रूपमें परिवर्तित करके आपने अपनी तीक्ष्ण बुद्धिका परिचय दिया है। अवकाशके समयमें आप कहानी, गीत, कविता और नाटक लिखा करते हैं। 'कोत्तगड्ड' (नयी धरती) नामक आपका १६ अेकांकियोंके संग्रहका हाल ही में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ है। देहात और किसानों-की समस्याओंके चित्रणमें आप सिद्धहस्त हैं। लेख-रचनामें आप अत्यन्त पटु हैं। आपके सम्पादकीय स्थाअी मूल्य रखते हैं। 'माटा-मन्ती' और 'पिच्चा-पाटी' आपके निबन्ध-संग्रह हैं। 'नार्लवारि माट' और 'जगन्नाटकम्' आपके कविता व गीत-संग्रह हैं। 'आन्ध्र ज्योति', 'प्रजा मित्र', 'विनोदिनी' अित्यादि पत्र-पत्रिकाओंका सम्पादन करते समय आपने अुत्तम कहानी-रचनाको प्रोत्साहन दिया है। आप बहुमुखी प्रतिभाके धनी हैं।

* * *

चतुराओ

"पिताजी! अगले महीने चन्द्रहार बनवा देंगे न?" नओ वधू श्यामलाने अपने पिताजीसे स्नेहपूर्वक पूछा।

"हाँ, वैसा ही बनवाअेंगे, बेटी!" कुटुंबरावने आश्वासन देते हुअे कहा।

चन्द्रहारको गलेमें पहननेका अनुभवकर श्यामला अुछल पड़ी और अिस शुभ समाचारको मातासे कहनेके लिअे भीतर दौड़ गओ।

अपनी पुत्रीके विवाहके समयपर कुटुंबरावपर जो ऋण हो गया था, अुसकी चिंतामें लीन हो गअे।

रसोओघरसे मुस्कुराती हुओ शेषमांबा आओ और आनंदित हृदयसे अुसने पतिसे पूछा--"क्यों जी! अगले महीने क्या आप अपनी बेटीके लिअे चन्द्रहार बनानेवाले हैं?"

"हाँ, सोचा तो अैसा ही है, पर अगले महीनेकी बातसे अभी क्या चिंता है? बनवाअें न भी तो भी अुसके हृदयको क्यों तोड़ें? यही सोचकर मैंने 'हाँ' कह दिया है। हार कोओ अितनी जल्दी थोड़े ही बनेगा!"

"यों ही अुसे आश्वासन दिलाना क्या पाप न होगा?"—कहते हुअे शेषमांबाने अपने पतिको टोका। अपनी बेटियोंको अच्छी साड़ियाँ और अच्छे आभूषण पहने देख अुसे अपना ही शृंगार व अपना ही भाग्य समझकर आनंदित होनेवाली माताओंमें शेषमांबाका स्थान प्रथम कहा जा सकता है।

"अूँह, जाओ भी तो! अगले महीनेमें भी टाला जा सकता है। किन्तु अभीसे ही अैसा कहकर अुसे दुखी क्यों बनाअें?"—कुटुम्बरावने तिरस्कारपूर्ण भाषामें अुत्तर दिया।

"बेटीके काममे भी पिड छुड़ानेकी ही बात करते रहते है। सच ही तो है, स्वभावमे आखिर परिवर्तन कैसे हो पाअेगा!"—यह कहकर शेषमांबा जल्दी-जल्दी घरके भीतर चली गअी।

दोपहरके समय पासके कमरेमें आराम करनेवाले प्रसादरावने दोनोंके वार्तालापको ध्यानसे सुना। नाश्ता करते समय प्रसादरावने अपने ससुरसे पूछा—"मुझे अगले महीनेमे अेक घडी खरीद देगे?" कुटुम्बरावने निस्संकोच भावसे अुत्तर दिया—"हॉ, हॉ! अवश्य ही खरीद दूँगा।"

प्रसादरावके अधरोपर मुस्कुराहट दौड़ गअी। अुसके नेत्र कांतिपूर्ण होकर दमकने लगे।

कुटुबरावने निश्चय कर लिया कि अुनके "हॉ, हाँ!" कहने मात्रसे लोगोंको अैसा अपूर्व आनद प्राप्त होता है, तो अुसे अैसा कहते रहनेमे कोअी सकोच नही होना चाहिअे।

अुसी दिन रातको भोजनके समय प्रसादराव बाजारसे अेक कलाअी घड़ी लेता आया और अुसे अपने ससुरको दिखाते हुअे अुसने पूछा—"कहिअे जी, यह घड़ी अच्छी है न?" दामादकी कलाअीपर बँधी हुअी घड़ीको देखकर कुटुबरावका चेहरा पीला पड़ गया। फिर भी प्रकट रूपसे साहसका अभिनय करते हुअे पूछा—"अच्छी तो है। पर यह किसकी घड़ी है?"

प्रसादरावने अपनी हँसीको प्रयत्नपूर्वक रोकते हुअे कहा—"मेरी ही है। आपने खरीदकर देनेका वचन दिया था न? असलिअे असी शहरमें मैंने अपने अेक मित्रकी दूकानसे असे खरीद लिया है।"

कुटुंबराव गंभीर हो गअे और लापरवाहीसे कहने लगे––" मैंने अगले महीनेमें. . . . . "

बीचमें ही अुनकी बातको काटते हुअे प्रसादरावने कहा––" कोअी परवाह नहीं, दूकानदार मेरे मित्र ही हैं। वह अगले महीनेमें ही रुपये लेगा। "

दामादकी अिस युक्तिके प्रहारसे कुटुंबराव तिलमिला अुठे और दूसरे दिन तक अुनके मुँहसे फिर कोअी बात तक नहीं निकली।

* * *

१०.

देवताकी मृत्यु

—श्री गिड्डुतूरि सूर्यम्

श्री सूर्यम् तेलंगानेके युवक-कहानीकारोंके अग्रणी कहे जा सकते हैं। बुनाअी आन्दोलनमें आपने अच्छा काम किया है। आपकी कअी कहानियाँ पुरस्कृत हो चुकी हैं। 'प्रजा नाटय मण्डली' की ओरसे अनेक नाटकोंका प्रदर्शनकर आपने विशेष ख्याति प्राप्त की है। आपकी कहानियोंमें वर्तमान समाजकी विषमताओंका सुन्दर चित्रण देखा जा सकता है। अिस समय आप रूसमें हैं।

* * *

देवताकी मृत्यु

नारायणराव अपने कमरेमें बैठे हुअे हैं। कलकी डाकके दो पत्र सामने चटाअीपर पड़े हैं। नारायणरावने अुनका अुत्तर देना चाहा। अितनेमें ही अुन्हें खाँसी आअी। थोड़ी देर तक आनेके बाद रुक गअी। अुन पत्रोंको फिर अेक वार सावधानीसे पढ़कर अुत्तर देना चाहा। अेक पत्र अपने छोटे भाअी लक्ष्मणरावसे और दूसरा पत्र पत्नी विमलाके यहाँसे आया था। भाअीके पत्रको हाथमें लेकर वे पढ़ने लगे—

"भाअी साहब! आप पत्रोंका अुत्तर ही नहीं देते। यहाँ मैं कैसी-कैसी कठिनाअियाँ झेल रहा हूँ, भगवान ही जानता है। पिताजी होते तो वे मुझे अितना कष्ट होते कदापि नहीं देख सकते। अुन्होंने आपका पालन-पोषण किस तरहसे किया है, अिसे कृपया अेक बार याद कर लीजिअे। मुझे अिस मेडिकल कालेजमें क्यों भर्ती कराया? भर्ती किया भी है तो अुस ओहदेके अनुकूल मेरे लिअे आपने पोशाक क्यों नहीं बनवाअी? कालेज-फीस चुकाने आदिके लिअे समयपर मुझे रुपये क्यों नहीं भेजते? अब तक कष्ट अुठा करके पढ़ाया। मेरा कोर्स भी पूरा हो गया है। अब केवल १५ दिन रह गअे हैं। मैंने कर्ज लेकर परीक्षाकी फीस चुका दी है। होस्टलका बिल अभीतक नहीं चुकाया है। कर्ज चुकाअे बिना मैं यहाँसे निकल नहीं सकता हूँ। आपने मुझे कभी अितना कष्ट नहीं पहुँचाया। अिस वर्ष ही मुझे बहुत

तकलीफ दी है। खैर, जो हुआ, सो हुआ। अब आप शीघ्र ही रुपये भेजनेका कष्ट करें। आपकी खाँसी कम हो गअी है, यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुअी। फिर भी पिताजीका स्मरण आते ही आपके सम्बन्धमें डर लगने लगता है। स्वास्थ्यको ठीक रखनेकी पूरी सावधानी रखेंगे। मेरे डिग्री लेनेके बाद तो आपको कोअी डर न होगा। आपने लिखा था कि भाभी मायके गअी हैं, क्या फिर आ गअी है ? देखनेमे भाभी क्रोधी स्वभावकी मालूम होनेपर भी हृदयमे बहुत अच्छी है। अुन्हें मेरा सादर नमस्कार कहिअेगा। नमस्ते !"

पत्र पढनेपर नारायणरावको मृत्युशय्यापर पडे हुअे पिताजीका स्मरण हो आया। छोटे भाअीकी जिम्मेदारी सौपते समय पिताजीने जो बातें कही थी, वे सब याद हो आअी—"बेटा! अिसे तुम्हारे हाथोंमे सौप रहा हूँ। जितने लाड-प्यारसे तुम्हें पाला-पोसा, अुतने ही लाड़-प्यारसे अिसका पालन नही कर सका, यही मनमे दुःख है। अिसके माँ और बाप तुम्ही लोग हो। अिसे पढा-लिखाकर योग्य बनाओ। जब तक यह अपने पैरोंपर खड़े होनेकी शक्ति न पावे, तब तक अिसकी पूरी तरह देखभाल करो। अुसके बाद जैसा अुचित समझो वैसा करना।"

रावजीके नेत्र सजल हो गअे। पिताजीकी मृत्युके दिन ही अुसे नौकरी मिली। अपनी कमाअीसे पिताजीको संतुष्ट न कर सकनेका अुसे बडा दुःख हुआ। अुसने जो-जो सुख पाया है, अुसका सौवाँ हिस्सा भी अुसका भाअी नही पा सका। क्योंकि अुसका जन्म ही तब हुआ, जब पिताजीकी आर्थिक स्थिति अुतनी अच्छी नही रह गअी थी जितनी अुसके खुदके जन्मके समय थी और दूसरे वह सम्हल भी नही पाया था कि माताकी मृत्यु हो गअी। सोनेके व्यापारमें पिताजीको बड़ा नुकसान हुआ। गरीबीके कड़ुवे घूँट पीते हुअे भी अुन्होंने बड़े परिश्रमके साथ अुसे बी. अेल. तक पढाया था।

बचपनसे लेकर कालेजकी अुच्च शिक्षातक—अच्छी पोशाक, खिलौने, मित्र, सिनेमा, होटल, देशाटन अित्यादि मनोरंजनों द्वारा अुसका जीवन अच्छा बीत गया है। अुस समय अुसे जरा भी चिता व दुःख न था। अिन सबका कारण था—सिरपर पिताजीकी छत्रछायाका होना।

पिताजीकी मृत्युके समय अुसका भाअी नवीं क्लासमें पढ़ रहा था। अुसे अूँची-से-अूँची शिक्षा दिलानेका रावने निश्चय किया। अिसीलिअे वह अपनी अंतरात्माके विरुद्ध घूस लेने लगा। अुस धनको गुप्त रूपसे बैंकमे जमा करता गया। यहाँ तक कि अुसकी पत्नी विमलाको भी यह बात मालूम न हो पाअी। वह भाअीको पढ़ाता ही गया। लक्ष्मणरावने अिंटर पास करनेके बाद अेम. बी. बी. अेस. करनेकी अिच्छा प्रकट की। भाअीने मान लिया, पर भाभीको आश्चर्य हुआ। वह अपने पतिसे पूछ बैठी—"क्यों जी, आपकी कमाअी परिवारके खर्चके लिअे काफी न होनेपर भी आप लालाजी-को पढाअीका खर्च कैसे अुठा पाअेंगे ? अभीकी स्थितिमे ही तो हम सब अेक जून खाते है तो दूसरे जूनके लिअे काफी नही होता। क्या अैसा नही हो सकता कि वे कही नौकरी भी करते रहे और अपनी पढाअी भी कर सकें ?"

आजतक गुप्त रखे जानेवाले रहस्यका अुद्घाटन करते हुअे पत्नीको बैंककी पास-बुक दिखाकर अुन्होने कहा कि बैंकमे और भी चार हजार रुपये जमा है। विमला अिस तथ्यपर अेक बार तो विश्वास नही कर सकी। वह अिस बातपर चकित हुअी कि अुसे प्राण-सम समझनेवाले पति अुससे कहे बिना बैंकमे अितनी रकम कैसे जमा कर सके ? अुसे अिस बातका भी दुःख हुआ कि अितनी रकमके होते हुअे भी खाने व पहननेके खर्चके लिअे अितनी तकलीफ भुगतनी पड़ी।

अिस घटनाके बादसे रावकी प्रत्येक बात व कार्यपर विमला प्रबल संदेह करने लगी। रावपर विश्वास करना अुसे असंभव-सा जान पड़ा। तबसे अुन दोनोंके जीवनमे वाद-विवाद शुरू हुआ। हर बातमे झगड़ा होना शुरू हो गया।

रावने बी. अेल. पास किया है। किन्तु घूस लेनेकी आदत होनेके परिणामस्वरूप अुनकी तरक्की नही हो पाअी। अधिकारियोके पास अिनके सम्बन्धमे काफी शिकायतें पहुँची। अिसलिअे अुन लोगोने भी रावको सचेत किया। राव भी अिस बातको भली भाँति जानते है कि अबकी बार यदि घूस-खोरीके अपराधमे वे पकड़े गअे तो अुन्हें नौकरीसे ही निकाल दिया जाअेगा। तबसे रावने घूस लेना बन्द कर दिया है। विशेषतः अिस डरसे भी कि यदि अैसा न होगा तो अुनकी जीविका मारी जाअेगी। यही कारण है कि वे अपने छोटे भाअीको समयपर रुपये नही भेज पा रहे है।

सरला नारायणरावके मित्रकी पत्नी है। अुसे रावने अपने दफ्तरमें टायपिस्टका काम दिला दिया है। वह अपने कामसे काम रखती है। कार्यालयमे अनावश्यक रूपसे किसीसे नही बोलती-चालती। अुसके हृदयकी अगाध दुःख-गाथा अकेले रावको ही विदित थी। अिसलिअे रावने अुसे नौकरी दिलाअी। सरलाका छह सालका लड़का स्कूलके बन्द होते ही माताके दफ्तरके बाहर खडा रहता है। माँके बाहर आते ही दोनों मिलकर घर पहुँचते है। राव भी अुस लडकेको बहुत चाहता है। अुसे अपने पुत्रकी भाँति देखता है। अतिशय प्रेमके साथ अुसे अपने हृदयसे लगा लेता है। कभी-कभी अुसे अपने घर भी ले जाया करता था। विमला भी अुस लडकेको प्रेमसे देखती और मिठाअियाँ अित्यादि खिलाती है। वह सोचती कि अुसका भी यदि अैसा ही लड़का होता तो वह कितना आनन्द मनाती। विमला कभी-कभी यह भी सोचती कि अपने पतिका अुस लड़केपर अितनी ममताका कारण कुछ दूसरा ही हो सकता है। रावने अेक बार सरलाकी दशाको अुससे कहा भी था––

"सरलाने अिटर तक शिक्षा पाअी है। अुसने मेरे अेक दोस्तसे प्रेम किया था। यह समाचार सरलाने अपने माता-पिताको बताया। अिस अतर्जातीय विवाहके लिअे वे तैयार नही हुअे। सरला घर छोड़कर चली गअी। अुस युवकके साथ अुसका विवाह हुआ। अुस युवकको कही नौकरी नही मिली। अिसलिअे सरलाको ही नौकरी करके अपने परिवारका पोषण करना पडा। अंतमे अेक कपनीमें अुसने टायपिस्टके रूपमें कार्य करना आरंभ कर दिया। अुन्हे अेक पुत्र भी हुआ। दोनों बहुत प्रसन्न हुअे। सरलाने सोचा कि अुनके सतोषको कोअी तोड़ नही सकता है। मै अुसके विचारोको सुनकर हँस पडा। अेक दिन सरला आफिसमें देरीसे आअी, मरजियाकी भाँति। वह अपने पतिके मुँहको देख नही सकी। शेरको देखकर भयभीत होनेवाली हिरणीकी भाँति वह घबरा अुठी। सरलाके व्यवहारमे अुसके पतिको सन्देह हुआ। सरलाकी चोली फटी हुअी है और अुसके गालपर नख और दाँतोंके निशान दिखाअी दे रहे थे। अुसके पतिको अत्यधिक क्रोध आया और अुसने सरलाको खूब कोसा ही नही, बल्कि मारा-पीटा भी। पर सरलाको दुःख नही हुआ। लेकिन अुसका पति आखिर घर छोड़कर चला

गया। वह जड़ कटे वृक्षकी भाँति गिर पड़ी। अपने पुत्रको हृदयसे लगाकर वह खूब रोओी। अिस संसारमे अपनेको अकेली पाकर अुसने आत्महत्या करना चाहा। लेकिन बच्चेको देखकर अुसे अैसा करनेका साहस नही हुआ। बच्चेके लिअे ही वह जीवित रही। पहले जब वह मेरे आफिसमे नौकरीकी खोजमे आओी थी, तब मै अुसे सरलतासे पहचान नही सका था। अुसने ही मुझे पहचानकर सारी बाते बता दी थी। मैने अुसे नौकरी दिलाओी। विमला! क्या तुम्हें यह मालूम है कि सरलाके स्त्रीत्वका हरण किसने किया? सरला जिस कंपनीमे काम करती थी, अुस कपनीके अुस मैनेजरने सरलाके ग्राहृस्थ जीवनमे आग लगाओी है, जो शरीफकी भाँति कारमें अिधर-अुधर घूमता-फिरता है, किन्तु वास्तवमे मीठी छुरी है। अिसलिअे मै कभी-कभी अुसकी सहायता करता रहता हूँ।"

विमलाने अुस कहानीको सुनकर अुसपर विश्वास किया। लेकिन अपने पतिके कहनेपर वह विश्वास नही कर सकी। सरलापर अपने पतिका दिन-प्रति-दिन बढ़ता हुआ अनुराग वह सह नही सकी। अिसके अतिरिक्त राव प्रति दिन आठ बजे रातको घर छोड़कर चला जाता और सबेरे कोओी तीन बजे वापस लौटता। अिससे विमलाका सदेह और भी बढ़ गया। अुसने निश्चय किया कि राव सरलाके ही घर जाता है। अिस बातको वह बहुत दिनो तक सहन करती रही। आखिर अेक दिन रावको रोककर अुसने कहा कि वह अपने परिवारके साथ बड़ा अन्याय कर रहे है। अितना ही नही, बल्कि रावके सामने अुसने सरलाको काफी भला-बुरा कहा। अिसपर रावको बहुत गुस्सा आया और अुसने विमलाके गालपर दो-चार थप्पड लगा दिअे। राव बाहर चला गया। अुस दिन रावकी आँखोमे आँसू आ गअे। रावके वैवाहिक जीवनमे विमला-पर हाथ अुठानेका यह पहला ही अवसर था। अिस घटनासे अुसका मन व्याकुल हो गया। अुसके मनमें अिच्छा रहते हुअे भी वास्तविकताको वह प्रकट नही कर सका। अुसके मनमें आया कि पत्नी-हृदयपर सर रखकर बालक की भाँति थोड़ी देर रोकर अपने मनको हलका कर ले। पर खाँसी बढ़ती गओी। रातके दो बजे घर लौटा। घरपर ताला लगा था। अुसका कलेजा धक्-धक् करने लगा। वह सोचने लगा—विमला आखिर

गअी कहाँ होगी ? कही वह आत्महत्या करने तो नहीं गअी ? अिस कल्पना-मात्रसे अुसका हृदय काँप अुठा। पर अेक विचार अुसके मनमें यह भी आया कि वह अैसा कभी नही करेगी। तरह-तरहके अन्य विचारोंके साथ कल्पना-ओंका यह द्वंद्व अुसके मस्तिष्कमें अुठता रहा। विमलाकी खोजमें अुसने सारी सडकें छान डाली। आखिर वह सरलाके घर पहुँचा और अुसके घरका दरवाजा खटखटाया। सरलाने दरवाजा खोला और कहा--"ओह, आप हैं ? आपकी अैसी हालत क्यों! अन्दर आअिअे।" सरलाने रावको बिठाया। रावने अिसके पहले अधिक खाँसा हो। अुसके मुँह व ओंठोंपर खून बहा था। खून देखकर सरला भयसे काँप अुठी। अपने आँचलसे थोड़ा टुकडा फाडकर खूनको पोंछते हुअे अुसने पूछा--"क्या किसीने मारा है ?" अिसके बाद चिबुक अुठाकर देखनेपर शरीरके स्पर्शसे पता चला कि बुखार अत्यंत तीव्र है। रावने मानों किसी व्यक्तिको पानेके लिअे सारे घरमे अपनी निगाह दौडाअी। कोअी नही दिखाअी दिया। अिसलिअे वह वहाँसे अुठ खड़ा हुआ और बोला--"हाँ सरला! जीवनपर बड़ी चोट लगी है।" राव जाने लगा, पर सरलाने अुससे रातभर वहींपर ठहरनेकी प्रार्थना की। रावने कोअी अुत्तर नही दिया, बल्कि वह मुस्करा दिया। अुसने लड़केको देखा और अुसका चुबन लिया। वहाँसे वह सीधा घर लौटा। अुसने सोचा था कि विमला अबतक अवश्य ही लौट आअी होगी। लेकिन अुसने देखा कि वह न आअी थी। पड़ोसिनने चाबी देते हुअे रावसे कहा--"विमलाके मायकेसे कोअी तार आया है। अिसलिअे रातको ही वह वहाँ चली गअी। जाते समय केवल यह चाबी आपको देनेके लिअे कह गअी है।" रावने जल्दी-जल्दी दरवाजा खोला। अुसे अेक पत्र पड़ा हुआ मिला। अुसमें लिखा था--"मेरा मन अुदास है। मै कुछ दिन मायके-मे रहकर लौटूँगी।" पत्रको पढ़कर रावका मन कुछ शाँत हुआ। वह तुरंत विमलाको पत्र लिखना चाहता था, पर अुसने अैसा नही किया। दस दिन बीतनेपर अुसने अेक पत्र लिखा। अुसे अुसका अुत्तर भी मिला। पत्रसे अुसे अिस बातका पता चल गया कि विमलाका गुस्सा कम नही हुआ है। अिधर रावकी खाँसी बढ़ती गअी। वह ठीक तरह खा-पी नहीं सकता था। अिस तरह दो महीने बीत गअे। अिस अवधिमें राव सूखकर काँटा हो गया

था। दफ्तरके सभी लोग रावको देख आश्चर्य करते थे। सरलाने प्रार्थना की कि विमलाके आने तक राव अुसीके घरमें रहे। लेकिन रावने नही माना। अडोस-पड़ोसवाले यह कहते कि–राव किसी वेश्याके घर जाता है, वह कभी घरपर नही रहता। अिसलिअे अुसकी पत्नी मायके गअी है। अिन सारी बातोंको सुनकर राव मनमे हॅसकर रह जाता। अुसने फिर पत्नीको पत्र लिखा।

विमलासे अुत्तर आया। वही पत्र आज सामनेकी चटाअीपर पड़ा हुआ है। अुस पत्रको लेकर पुनः राव पढ़ने लगा––"मै समझती हूँ कि आप कुशल होंगे। मुझे ही आपको क्षमा करना होगा। पति चाहे जैसा ही क्यो न हो, अुसके व्यवहारपर सहनशीलता कायम रखकर गृहस्थी चलानेमे ही नारीका बड़प्पन है। मै स्वभावसे कमजोर हूॅ। अिसी कारण अुस सत्यको ग्रहण नही कर पाअी। अिस संसारमे मेरे जैसी दुर्बल नारियोंको जन्म नही लेना चाहिअे था। मै जब कभी ऑखे खोलती हूँ या बन्द करती हूँ, तो सदा आपकी ही मूर्ति ऑखोंके सामने रहती है। आपकी खांसी कैसी है? दवा लेनेका मैने कअी बार आपसे अनुरोध किया, पर आप मेरी बात सुनते ही नही। देवरकी पढ़ाअी समाप्त हो गअी है। अिस महीनेके अन्तमे वे आ जाअेगे और जबर्दस्ती आपके मुंहमें दवा डालेंगे। वे तो डाक्टर है न? तब तक आप हमारी बात नही सुनेगे। मै अेक सप्ताहके अन्दर वहॉ आ रही हूॅ। कष्ट न हो तो २५) रुपये भेज दीजिअे।"

आपकी चरणदासी,
विमला

विमलाके भोलेपनपर रावजीको हॅसी आ गअी। पहले अपने छोटे भाअीको पत्र लिखा :––

"मेरे छोटे भाअी! अिस बातका मुझे बड़ा संतोष है कि तुम जल्दी आ रहे हो! मै तुम्हें तकलीफ दे रहा हूॅ। यह तो सत्य है। अिसे पिताजी कदापि क्षमा नही करेंगे। अुनसे जल्दी क्षमा-प्रार्थना करना चाहता हूॅ। दो दिनके भीतर तुम्हें रुपये भेज रहा हूॅ। मै समझता हूॅ कि मैंने तुम्हारी पढ़ाअी पूरी कर दी है और अिसलिअे पिताजी मुझे क्षमा करेंगे

तुमने अपनी भाभीके सम्बन्धमे जो लिखा, वह सोलह आने सत्य है। वह तो अधिक भावुक स्वभावकी है। अेक सप्ताहके अन्दर आनेवाली है। मेरी खाँसी अब अच्छी हो गअी है।"

तुम्हारा भाअी,
नारायणराव।

अिसके पश्चात रावको अैसी खाँसी आअी कि अुसमे खून भी गिरा। वे थोडी देर आँखें बन्द कर पीडाको सहते रहे। फिर अुन्होने विमलाको अेक पत्र लिखा :—

"प्रिय विमला,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मै बिलकुल असमर्थ हूँ। पता नहीं मैंने अपने पूर्व जन्ममे कौनसा अपराध किया था, अैसा लगता है कि अब अुसीका फल भोग रहा हूँ। मुझे तुमने अपने हृदयमें स्थान दिया, अतः मै धन्य हूँ। मै दुर्बल अवश्य हूँ। वरना भोले स्वभावकी तुमपर जिस दिन अपना हाथ अुठाया था, अुसी दिन अुसे काटकर फेंक देना चाहिअे था। मै कायर था, अिसलिअे वह काम नही कर सका। जब तुम यहाँ आओगी, अुस समय तुम्हें सरलाका समाचार दूँगा। कल मै तुम्हारे नामपर ५०) रुपये भेज रहा हूँ।"

तुम्हारा,
नारायणराव।

पत्र पूरा करते ही रावको फिर खाँसी आअी। खाँसते हुअे बाहर जाकर अुन्होंने दोनो पत्र डाकमे डाल दिअे।

लक्ष्मणरावको भाअीका पत्र व मनीऑर्डर मिले। भाअीकी खाँसी ठीक हो जानेका समाचार पढ़कर अुसे सन्देह मिश्रित आनंद हुआ। अिस-लिअे अुसने पत्रको दुबारा पढा। पत्रको पढ़ जानेपर अुसकी शंका और भी बढ गअी। अुस दिन कोअी रोगी आपरेशन-टेबिलपर मृत्यु-दशामे पडा था। अुस रोगीके चेहरेमे लक्ष्मणरावको अपने भाअीका चेहरा दिखाअी दिया। अुसका शरीर पसीनेसे तर हो गया। अेक बार आँखे बन्द कर अुसने फिर आँखें खोलकर देखा। दूसरी बार भी अुसे भाअीका ही चेहरा दिखाअी दिया। अुसे अैसा क्यो दिखाअी दे रहा है? अिसकी वह कल्पना

भी नही कर सका। अुसने अपने मनको दृढ बनाया। भाअीको शीघ्र ही देखनेकी प्रबल अिच्छा अुसके मनमे हुअी। अुसी दिन वह गाड़ीसे रवाना हो गया।

रावने जो पत्र व रुपये विमलाको भेजे थे, वे अुसे मिल गअे। पत्र पाते ही अुसने अुसे अपने हृदयसे लगा लिया। तीन महीनोंका हृदय-भार अेक साथ हलका हो गया। अुस रात्रिको वह निश्चित हो आरामकी नीद सो गअी। अुसने अेक अच्छा स्वप्न देखा। सावित्री और सत्यवानकी भॉति दोनो सुदर वनमे विहार कर रहे है। दोनों अेक वृक्षके नीचे बैठे हुअे है। वह वृक्ष फल व फूलोसे लदा हुआ है और स्वर्गीय छायासे सुशोभित है। अुस वृक्षपर घोसले बनाकर पक्षी निवास कर रहे है। विमला वृक्षकी ओर देख रही है। अुस वृक्षका पीला रग मानो अुसके चरणोमे पोता जा रहा था। अुतनेमे ही जोरकी आँधी आअी। फूल व फल अेक साथ झड़ गअे। पत्ते भी झडने लगे। पतझड़के पत्तेहीन वृक्षकी-सी अुस वृक्षकी स्थिति हो गअी। अेक शाखा टूटकर विमलाके पतिपर गिर पड़ी, जिससे विमलाको अैसा अनुभव हुआ कि अुसके गलेके मगल-सूत्रको कोअी बलात् तोड रहा हो।

विमला चौंककर अुठ बैठी। अुसे डर लगा। दूसरे ही दिन वह गाडीमे पतिके यहॉ पहुँची। राव आफिसमे था। शामको जब वह घर लौटा तो विमला अपने पतिको पहचान नही सकी। वह पतिसे गले लगकर फूट-फूटकर रोने लगी। रावने अुसे सांत्वना दी। अुसने भीतरसे अुठनेवाली अपनी खाँसीको बलात् रोक लिया।

"विमला! तुम आ गअी हो। अब मुझे कोअी डर नही है। होटलका भोजन रुचिकर नही लगता था। अिसलिअे कमजोर हो गया हूँ। खाँसीकी दवा ले रहा हूँ। मुझे अैसा लगता है कि भाअीके आकर दवा देनेके पहले ही मेरी खाँसी ठीक हो जाअेगी। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जाअेगा। मै भी प्रोफेसर राममूर्ति (पहलवान) जैसा हो जाअूँगा।.....
विमला। अेक बात! मुझे आज जरा बाहर जाने दो। यही आखरी दिन है। मै कलसे बाहर नही जाअूँगा।" यह कहकर राव बाहर चला गया। विमलाका दाँया नेत्र फड़कने लगा। अुसके दुःखकी सीमा न रही।

अितने दिनोके ग्रार्हस्थ जीवनके बाद भी वह पतिको पूरी तरह समझ नहीं पाअी, अिस बातका अुसे अतिशय दु.ख हुआ। पतिके स्वास्थ्यके गिर जानेका कारण वही थी। अुसी दिन अेक्सप्रेससे लक्ष्मणराव भी आया। देवरको देख विमलाका दुख फूट पडा। भाअीकी बीमारीकी बात जानकर लक्ष्मणराव भी घबरा अुठा। आते ही अुसने पूछा--

"भाभी, भाअी साहब कहाँ गअे है ?"

विमलाने कोअी अुत्तर नही दिया।

अिसपर लक्ष्मणरावने पुनः पूछा। अिसपर विमला बोली--

"मुझे पता नही। जल्दी ही आअेगे !"

लक्षमणरावने विमलाके कंठमे किसी अज्ञात वेदनाका अनुभव किया। अिसपर अुसके मनमे अेक विशेष प्रकारका सन्देह भी अुठा। तब तक वह चुप नही रहा, जब तक अुसकी भाभीने सारा समाचार अुसे नही सुनाया।

"लक्ष्मण ! तुम्हारे भाअीमे यही अेक कमजोरी है। यदि यह बात अुन्हे मालूम हो जाअेगी कि अुनका समाचार तुमको मालूम हो गया तो वे बहुत दुखी होगे।"

"भाभी ! आप जाकर भाअीको ले आअिअे। सरलासे भी बात कीजिअे। अुन्हे समझा दीजिअे।"

विमला कुछ देर तक सोचती रही। वह लक्ष्मणरावको लेकर सरलाके घर पहुँची। लक्ष्मण कुछ दूरपर खडा रहा। विमलाने दरवाजा खट-खटाया। सरलाने दरवाजा खोला।

"आप कौन है जी, क्या चाहिअे ?"

विमलाने भीतर झाँककर देखा। खाटपर कोअी ओढकर लेटा पडा था। विमलाने सोचा--'वह व्यक्ति अुसका पति ही होगा।'

"मै अेक अभागिन हूँ। पति-भिक्षाकी याचना करने आअी हूँ। मेरा नाम विमला है। मै नारायणरावकी पत्नी हूँ।" ये बाते सुन सरलाको आश्चर्य हुआ।

"ओह, आप है। आपकी बाते मेरी समझमें नही आ रही है। भीतर आअिअे। बैठिअे।"

खांसी रुक गअी और दिलकी धडकन बढ़ गअी।

"भाअी ! तुम भी रो रहे हो. . . . . डाक्टर. . . . रोता है कही ? भाभीको ढाँढस नही बँधाओगे ?" ये बाते राव कह ही रहे थे कि मृत्यु-देवताने नारायणरावके फेफड़ोंपर अेक लात मारी। वह मानव छटपटाने लगा।

"भाअी ! अब मै जीवित नही रहूँगा. . . .पिताजीने मुझे क्षमा किया है। भाभीको तुम्हें सौप रहा हूँ. . . . . सरलाकी देखभालका भी ख्याल रखो. . . . .। विमला ! . . . मुझसे कोअी अपराध हुआ हो तो क्षमा करो।"

सब अेक साथ रो पडे। लक्ष्मणरावका मुख-मण्डल विवर्ण हो गया। अुसका दिल टूट चुका था। भाअीके परिश्रमके रहस्यको अुसने अपने पेटमे ही छिपाया, लेकिन वह अुसकी अँतड़ियोमे छिद्र बनाने लगा--"हत्यारा है ! भाअीकी हत्या करनेवाला हत्यारा है !" कह रहा था अुसका हृदय !

भाअी साअिकिल-रिक्शा चला रहे है। छोटे भाअीकी पढ़ाअीके वास्ते बड़े भाअी साअिकिल-रिक्शा चला रहे है। मुँहसे खून गिर रहा है, पर रिक्शेको रोके बिना चला रहे है। बिना विरामके, साँस लिअे बिना खाँस रहे है। रिक्शेका पहिया जोरसे घूम रहा है। भाअीके जीवन रूपी शंकटकी धुरी चक्रसे अलग हो गअी है। जोरसे घूम रहा है। अकेला सडकपर दौड़ रहा है। वेग कम हुआ। रुक गया। नीचे गिरकर छटपटा रहा है।

"भाअी !" कहकर जोरसे लक्ष्मणराव अैसा चिल्लाया कि अुससे पृथ्वी और आकाश गूँज अुठे। मानो अुस चिल्लाहटका रहस्य अुसे और अुसके भाअीको ही मालूम हो ! ❀

* * *

❀ ऑल अिंडिया रेडियो, हैदराबाद-केन्द्र द्वारा सन् १९५६ में चलाअी गअी कहानी-प्रतियोगितामें अिस कहानीको प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

लक्ष्मणरावकी गोदमें नारायणरावका सिर है। कमीजपर खूनके दाग हैं॥ भाओीको दोनों हाथोंसे अुठाअे हुअे लक्ष्मणराव सरलाके द्वारपर पहुँचे।

रिक्शावालोंने कहा--"बाबू! हम अिनके रिक्शेको ले जाकर मालिकको सौप देंगे। आप अिन्हें घर ले जाअिअे।" सरलाने रावको देख जोरसे चिल्लाया। रावको चारपाओीपर लिटाया गया। सरला डाक्टर-की खोजमे दौड पड़ी। विमलाने आँख खोलकर पतिकी ओर देखा। लक्ष्मणरावने भाभीको ढाँढस बँधाते हुअे कहा--"भाभी, जरा धैर्य धारण करो। जोरसे रोओगी तो भाओीका बचना मुश्किल है।......" लक्ष्मणरावने ये बातें कह तो दीं, लेकिन अिस समय अुनके दिलमे जितनी जोरसे धड़कन हो रही है अुसे कोओी भी स्टेतस्कोप नही गिन सकता। विमला काँप रही है। अुसके दुखका सागर बाँध तोड़कर अुमड़ रहा है। आँचलके छोरको मुँहमे रखे रो रही है। अिधर सरला डाक्टरको ले आओी। डाक्टरने सुओी लगाओी। सबेरे अस्पतालमे भर्ती करनेकी सलाह देकर डाक्टर चले गअे। विमलाने सरलाको गले लगाया। अुस ओर गलीमें कुत्ता 'भौ-भौं' करते जोरसे रो रहा था।

नारायणरावने धीरेसे आँखें खोली। विमला पासमें ही बैठी थी। रावने पत्नीको संबोधितकर अुसका हाथ पकड़ लिया। विमलाने मजबूतीके साथ पतिका हाथ अैसे पकड़ लिया, मानों वह यह कह रही है कि मुझे कभी छोड़कर न जाना। नारायणरावने विमलाके भावको समझ लिया। अुसकी आँखोकी कोरोसे दो गरम आँसू निकल पडे। अुसने छोटे भाओीकी ओर ताककर देखा।

"भाओी! आ गअे हो! अब मुझे कोओी डर नही है। विमला! भाओी आ गअे है। अब मैं मरूँगा नही।" विमलाने पतिके मुँहपर अँगुली रखते हुअे मंगल-सूत्रको आँखोसे लगा भगवानसे प्रार्थना की। भाओीकी बातें सुनकर लक्ष्मणराव अपने दुखको रोक नही सका और "भाओी!" कहकर जोरसे चिल्लाया और गले लगकर रोने लगा। विमला भी चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी। सरलाके नेत्रोसे आँसुओंकी धारा बह चली। लडका चौंककर अुठ बैठा। रावजी खाँसने लगे। लड़का रोनी सूरत बनाकर माँके पास खड़ा हो गया और पूछने लगा--"माँ! नानाजी क्यों अैसा खाँस रहे है?"

खांसी रुक गअी और दिलकी धडकन बढ़ गअी।

"भाअी ! तुम भी रो रहे हो. . . . . डाक्टर. . . . रोता है कही ? भाभीको ढाँढस नही बँधाओगे ?" ये बाते राव कह ही रहे थे कि मृत्यु-देवताने नारायणरावके फेफड़ोंपर अेक लात मारी। वह मानव छटपटाने लगा।

"भाअी ! अब मै जीवित नही रहूँगा. . . . .पिताजीने मुझे क्षमा किया है। भाभीको तुम्हें सौप रहा हूँ. . . . . सरलाकी देखभालका भी ख्याल रखो. . . . . । त्रिमला ! . . . मुझसे कोअी अपराध हुआ हो तो क्षमा करो।"

सब अेक साथ रो पडे। लक्ष्मणरावका मुख-मण्डल विवर्ण हो गया। अुसका दिल टूट चुका था। भाअीके परिश्रमके रहस्यको अुसने अपने पेटमे ही छिपाया, लेकिन वह अुसकी अँतड़ियोमे छिद्र बनाने लगा--"हत्यारा है ! भाअीकी हत्या करनेवाला हत्यारा है !" कह रहा था अुसका हृदय !

भाअी साअिकिल-रिक्शा चला रहे है। छोटे भाअीकी पढ़ाअीके वास्ते बड़े भाअी साअिकिल-रिक्शा चला रहे है। मुँहसे खून गिर रहा है, पर रिक्शेको रोके बिना चला रहे है। बिना विरामके, साँस लिअे बिना खाँस रहे है। रिक्शेका पहिया जोरसे घूम रहा है। भाअीके जीवन रूपी शंकटकी धुरी चक्रसे अलग हो गअी है। जोरसे घूम रहा है। अकेला सडकपर दौड़ रहा है। वेग कम हुआ। रुक गया। नीचे गिरकर छटपटा रहा है।

"भाअी !" कहकर जोरसे लक्ष्मणराव अैसा चिल्लाया कि अुससे पृथ्वी और आकाश गूँज अुठे। मानो अुस चिल्लाहटका रहस्य अुसे और अुसके भाअीको ही मालूम हो ! ⌘

* * *

⌘ ऑल अिडिया रेडियो, हैदराबाद-केन्द्र द्वारा सन् १९५६ में चलाअी गअी कहानी-प्रतियोगितामें अिस कहानीको प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

११.

फायदेका सौदा

—श्री मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री

आप भी 'साहित्य-समिति' के सदस्योंमेंसे अेक हैं। विलायतमें शिक्षा प्राप्तकर भारत लौटनेके अुपरान्त आपने विलायतमें शिक्षा प्राप्त करनेके लिअे गअे हुअे अेक छांदस (सनकी) की जीवनीको कथावस्तु बनाकर अेक हास्यरस-प्रधान अुपन्यासकी सृष्टि की। अिस कृतिका नाम 'बैरिस्टर पार्वतीशम्' है। तबसे आपका दूसरा नाम बैरिस्टर पार्वतीशम् पड़ गया है। आपकी कहानियोंमें कोमल हास्यके साथ हृदय-विदारक शोक-रसका सम्मिश्रण है। "अेकोदसलु" नामक अुपन्यास द्वितीय पद्धतिका अुदाहरण है। "प्रति बिम्बालु" 'साहित्य-समिति' का प्रकाशन है। यही अिनका प्रथम कहानी-संग्रह है। हाल ही में अिनकी शेष कहानियाँ "कन्नवी-विन्नवी" (जो देखा और सुना) दो संग्रहोंमें प्रकाशित हुअी हैं। अिन्होंने अनेक हास्य-प्रधान अेकांकियोंकी भी रचना की है। बैरिस्टर बननेकी अिच्छासे आपने अध्ययन किया, लेकिन अपने जीवनमें वकील भी नहीं बन पाअे।

* * *

फायदेका सौदा

हम चारों आदमी रोजकी भाँति होटलमें बिल चुकाकर पान चबाते और सिगरेट सुलगाते हुअे क्लबमें पहुँचे। वहाँके दक्षिण दिशाके दालानमें चार बढ़िया कुर्सियाँ मँगवाकर हमने आपसमें चर्चा करनी शुरू की। यह हमारा प्रति दिनका कार्यक्रम है। हम सब बेकार और देशोद्धारक हैं। अिसलिअे सबसे पहले हम लोग प्रति दिन क्लबमें हाजिरी देते थे। सबसे पहले वहाँ पहुँच जाते थे। सबसे पहले पहुँच जानेका लाभ यह होता था कि बढ़िया कुर्सियाँ मँगवाकर हवादार स्थानमें बैठकर वार्तालाप करनेकी सुविधा मिल जाती थी। बादमें आनेवाले भद्रपुरुष वकील, मुंसिफ अित्यादि लोगोंको हमारी यह सुविधा बहुत खटकती थी। लेकिन वे हमारा क्या कर सकते थे? हम भी तो क्लबके मेंबर थे। चन्दा तो समयपर वे भी नहीं देते, और हम भी नहीं देते। अैसी हालतमें वे किस बातमें हमसे बड़े हैं। अिन कुर्सियोंके लिअे बेचारे समयसे पहले अदालत छोड़कर आ नहीं सकते थे। अिसलिअे अुन लोगोंने देरीसे क्लब खुलवानेका प्रयत्न किया। लेकिन कुछ बुद्धिमान लोगोंने अुनके प्रयत्नको विफल बना दिया। क्योंकि ताश खेलने तथा बिलियडर्स खेलनेके हेतु कुछ अुत्साही युवकोंने क्लबमें ही रहना शुरू कर दिया। अुनके वास्ते देरतक क्लब खोले न रखें तो आमदनी कम हो जाअेगी। जो भी हो, पैसेका मामला जो ठहरा!

हमारे क्लबमे संन्यासी राजु अेक मेंबर है। वह अेक बहुत बड़े पॉलिटीसियन याने देवातक* है। वह किसलिअे देवातक है, किसमे देवांतक है, अिसका निर्णय नही हुआ। पर देवांतक नामक ख्याति अुन्हें प्राप्त हो गअी है। वे सदा साफ-सुथरी पोशाक पहनकर क्लबमे अुपस्थित होते थे। अुनसे सबंधित कहने व सुनने योग्य अनेक कथाअे है। अुन सब कथाओंको नही, बल्कि यहाँ तो अेक ही विशेषता कहूँगा। अुनकी मूँछे अेक विशेष प्रकारकी है। मूँछवाले तो कअी मिलेगे। लेकिन अुनकी मूँछे कुछ विचित्र प्रकारकी है। अिनकी शैली ही अलग है और घनी भी अधिक है। अुसे अेक किस्मकी कलात्मक कारीगरी कहूँ तो विश्वास कीजिअे। मै समझता हूँ कि अुन मूँछोके कारण ही अुन्हे देवांतक नामक यश या अपयश प्राप्त हुआ है। जो भी हो, राजमहेन्द्रीके आचारीजीकी जुल्फे और सन्यासी राजुकी मूँछोसे अपरिचित लोग आसपासके तीन-चार जिलोंमे नही है।

संन्यासी राजुकी मूँछे देखनेमे कुछ गंभीरता-द्योतक और आदर-सूचक होनेपर भी स्वभावसे वे कुछ खुलासा प्रकृतिके ही है। वार्तालापके समय हममें मिल जाते थे। हम सबके मनमे अुनके और अुनकी मूँछोके विषयमे आदर-भाव है। लेकिन कभी-कभी कुछ सदर्भोमे अुनकी मूँछोको देख हम जलते थे। अुसका कारण हम स्वय नही जानते। हम सबने कभी यह नही सोचा कि किसी बहाने अुन मूँछोंको निकलवा लेगे तो कितना अच्छा होगा, पर कभी-कभी अैसा लगता कि अुन्हें निकलवानेपर अुस व्यक्तिकी हालत क्या होगी? न जाने क्यों ही कभी-कभी हमारे मनमे अैसी अकारण ही कामनाअे क्यों पैदा होती रहती थी। आप लोगोंकी बात मै नही कह सकता, किंतु हम लोगोकी आपसकी बात समझे। मुझमे कभी-कभी अैसी कल्पनाअे अुठती रहती है कि टैगोरजीकी दाढी और जुल्फे न होती तो कैसा होता? अुस्मान साहबके तोंद न होती तो क्या अितना बड़ा आदमी हुआ होता? अिस प्रकार वे कअी विचार मेरे मस्तिश्कमे पैदा होते रहते है। खैर!

---

* जो हदसे ज्यादा चालाक, धूर्त और कपटी होते है; आन्ध्रमे अुन्हें देवांतक कहते है।

अुस दिन भी हमेशाकी ही तरह हम क्लबमें पहुँचे—गपशप चलने लगी। अिधर-अुधरकी बाते चल रही थी। हमारे चारो तरफ कअी लोग अिकट्ठे हो गअे। हम अपनी बातोमे अितने तन्मय थे कि हमें पता ही न चल पाया। कुछ देर राजनीतिक स्थितिपर वाद-विवाद होता रहा। अिसके बाद वाणिज्य और व्यापारपर चर्चा चलने लगी।

चर्चा क्रमश. गंभीर होती गअी। विदेशी विनिमय मुद्राके सम्बन्धमे, Stock Market पर हमारे विशेषज्ञो (Specialists) ने बहस की। अिसके अुपरान्त सोने और अनाजके दरोपर चर्चा होती रही। अुस समय तक सन्यासी राजु भी आ गअे थे। अेक बार अपने दोनो हाथोसे क्राफ सँभाला और दूसरे ही क्षण दोनो हथेलियोसे मूँछोपर ताव दिया और अेक कुर्सीपर आरामसे बैठ गअे। अितनेमे सुब्बय्या बोल अुठे—"आजकल भावमें अुतार-चढाव भले ही हो, पर व्यापारमे जो फायदा है, वह किसीमें नहीं है।" अुनके कहनेके ढगसे अैसा लग रहा था, मानो अिस सत्यकी अुसने ही पहले-पहल खोज की हो। यह व्यक्ति देखनेमे मूर्खकी तरह लगता है और बीच-बीचमे अिस प्रकारके महत्वपूर्ण विषय सूत्र रूपमे प्रकटकर कुछ समय तक मौन मुद्रा धारण कर लेता है।

रामरावने जोरसे चिल्लाकर कहना शुरू किया—"सुनिअे, सुनिअे!" अुसकी समझमे सभामे शोर, यह बहुत बडी मजाक थी। वेकटरावने गंभीर होकर कहा—"आपका कहना ठीक है, लेकिन यह अेक बड़ा कठिन कार्य है। कितनी पूँजी चाहिअे। कितनी मेहनत करनी पडेगी। व्यापारके माने हँसी-मजाक थोड़े ही है!" अिस आदमीका स्वभाव ही कुछ अैसा है। "दालमे कुछ नमक ज्यादा है" यह कहना हो तो चेम्बरलेन जैसी गंभीर धारणा कैसे कहता है। अेक सेवानिवृत्त अफसरने कहा—"जो भी हो, प्रत्येक व्यक्तिको नौकरीकी खोज करना छोड़कर अब व्यापारमें ही लग जाना चाहिअे।"

अेक व्यक्तिने कहा—"सब कोअी पालकीपर चढ़े तो ढोनेवाला कौन हो? यदि सभी बेचनेवाले बन जाअेंगे तो खरीदनेवाला कौन बच रहेगा?"

अेक अुत्साही युवकने कहा—"सभी थोड़े ही चावल और कपड़े बेचनें-वाले बनेगे; व्यापार तो अनेक प्रकारके होते हैं। हर आदमी अेक ही प्रकार-का व्यापार थोड़े ही करेगा।"

अिसपर अेक समाजवादीने कहा—“ये सब कहनेकी बातें हैं। गरीब व्यक्ति व्यापार कर ही कैसे सकेगा? यह सब धनिकोंके लिअे ही संभव है।”

काँग्रेसी वक्ता महोदय बोल अुठे—“क्या कहा? व्यापार करनेकी अिच्छा रखनेवाला क्या-क्या नही बेच सकता है? जिस व्यापारमें लाभ दिखाअी दे, वही व्यापार किया जा सकता है। फिर चाहे वह भला हो या बुरा। मिट्टी बेचकर लाभ कमाया जा सकता है। यहाँ तक कि बालोंको बेचकर भी व्यापारी फायदा अुठा सकते है।”

संन्यासी राजुने हँसते और मूँछोंपर ताव देते हुअे कहा–“बालोंका व्यापार बालाजी (वेंकटेश्वरस्वामी) के लिअे ही संभव है। वह सबके लिअे कहाँ संभव है?” कभी वादोपवादोंमें भाग न लेनेवाले सन्यासी राजुको बोलते देख सभी गंभीर मुख-मुद्रामें चुप हो गअे। अकस्मात हवा ठण्डी-सी जान पडी।

शास्त्रीजीने कहा—“बाल बेचनेके लिअे भगवान बालाजीकी ही जरूरत नहीं है। यह काम तो कोअी मूर्ख भी कर सकता है।” शास्त्रीजीकी बातोंके फलस्वरूप वातावरण अेकदम ही बदल गया। संन्यासी राजुने शास्त्रीजीके कथनका खण्डन करते हुअे कहा—“आप कैसी विचित्र बात बता रहे है? तब तो हरअेक नाअी यह व्यापार कर सकता है।”

शास्त्रीजीने कहा—“मेरा विश्वास है कि अुसके लिअे नाअीकी भी जरूरत नही। यह व्यापार तो हर व्यक्ति कर सकता है।”

मूँछोंपर वैसे ही हाथ रखे हुअे संन्यासी राजुने कहा—

“बाल तो प्रत्येक व्यक्तिके पास हैं। हर कोअी अुन्हें बेचना चाहे तो खरीदनेवाला कौन होगा?”

शास्त्रीजीने शाँत चित्त होकर कहा—

“हाँ, आपने जो कहा, वह ठीक है! मैं भी जल्दबाजीमें अधिक व्यापक कह गया। लेकिन अिस बातको आपको अवश्य मानना पडेगा कि प्रत्येक वस्तुकी समयपर आवश्यकता और अुसका अप्रत्याशित मूल्य भी होता है। प्रत्येक वस्तुको अवसर देखकर बेचना होता है; तब लाभ अवश्य होता है और यही व्यापारका लक्षण है।”

वार्तालापका रंग बदलते देख हम सब सिगरेटका धुआँ छोड़ते हुअे चुपचाप बैठे रहे।

"कभी-कभी अनेक अनावश्यक वस्तुओकी आवश्यकता हो सकती है और अुनका मूल्य भी बढ़ सकता है। लेकिन मेरा विश्वास है कि बालोंका मूल्य कभी नही बढता है।"

शास्त्रीजीने हँसते हुअे कहा—"जल्दबाजीमे अैसी बात न कहिअे। संदर्भको देखकर ही मै कह रहा हूँ। आप अन्यथा न समझिअेगा। कल आपकी मूँछोका भाव बढ सकता है।"

हमने सोचा कि शास्त्रीजीकी योजना यही है। संन्यासी राजुका मुँह विवर्ण हो गया। अैसा प्रतीत हो रहा था कि मारे गगन-मण्डलमे अंधकार छा गया है और मेघोका गर्जन व बिजलीकी कडकडाहट होनेवाली है।

"आपने प्रसगवश कहा है! पर मेरी मूँछोको चाहनेवाला ही कौन है?"

"कोअी चाहे भी तो आप बेचनेवाले थोडे ही है?"

शास्त्रीजीकी कल्पना सन्यामी राजुकी समझमे नही आअी। अुन्होंने मूँछोंको मरोड़ते कुछ आवेशके साथ कहा—"यदि कोअी अैसा भोला आदमी मिल जाअे जो मेरी मूँछोको खरीदना चाहता हो, तो मै क्यों न बेचूँगा?"

"आप कहते तो हैं पर समय आनेपर कही पीछे तो न हट जाअेंगे?"

अेक बार फिर मूछोपर ताव देते हुअे राजुजीने अुत्तर दिया—"आप क्या कहते है! जन्म भरमे भी हमने कभी पीछे हटना नही सीखा।"

"तो क्या सचमुच आप अपनी मूँछोंको बेचनेवाले है?"

"कहता तो हूँ! यह सोलह आने सत्य है।"

"लो, कितना मूल्य दूँ?"

"खरीदनेवालेको आने दीजिअे।"

"मुझे ही चाहिअे। भाव तो बताअिअे!"

हम सभीको अिस सौदेमे बडा मजा आ रहा था। लेकिन अब संन्यासी राजुके चेहरेपर हवाअियाँ अुडने लगी। बनावटी मुस्कुराहटको प्रयत्नपूर्वक प्रकट करते हुअे संन्यासी राजुने कहा—"सौ रुपये दीजिअे तो!"

"निश्चय ही ! बातके पक्के है न ?"

"हॉ ; राजु कभी अपने वादेको तोड़ता नही। यकीन रखें।"

शास्त्रीजीने तुरन्त चेक लिखकर दे दिया। हमने सोचा था कि राजु बेहोश हो जाअेगे। पर साहस बटोरकर अुन्होने कहा—"नाअीको बुला लीजिअे।"

शास्त्रीजीने धीरताके साथ कहा—"अभी कोअी जल्दी नही। मूँछें मै बादमे ले लूँगा। पहले अिस रसीदपर दस्तखत कीजिअे।" रसीदमें लिखा था—"अी. सन १८–४–१९४० मे . . . . . . निवासी. . . . श्री शास्त्रीजीको मैने अपनी मूँछे सौ रुपयेमे बेच दी है। अिन मूँछोंको जब शास्त्रीजी चाहेंगे, तब बिना किसी अुज्रके ले सकेगे। अिनके मूल्य-स्वरूप १०० रु. प्राप्त हो गअे है।"

अिस रसीदपर संन्यासी राजुने हस्ताक्षर कर दिअे। संन्यासी राजुने बिना कुछ कहे चेकको जेबके हवाले किया, मानो किसी निकटके रिश्तेदारकी मृत्युका समाचार मिला हो। अिस तरह कुछ किसीसे बिना कहे, वे वहाँसे चल दिअे।

क्षणभर सब निःशब्द रहे। अिसके अुपरात सबने आश्चर्य प्रकट किया और हँस पड़े। शास्त्रीजी अकेले अपनी दृष्टि कही केन्द्रितकर सिगरेटकी कश खीचनेमे मग्न रहे।

हमने शास्त्रीजीसे पूछा—"क्यो जी, तुम पागल तो नहीं हो गअे।"

शास्त्रीजीने कहा—"चुप भी रहो ! अच्छा सौदा हाथ लगा है !"

मैने कहा—"तुम्हारा सिर ! अिसमे लाभ ही क्या है !"

शर्माजीने कहा—"बेचारे राजुकी मूँछें मुँडवानेके लिअे सौ रुपये व्यर्थ ही क्यों बरबाद करते हो ?"

अेक दूसरे व्यक्तिने कहा—"अिसमे न पुण्य है और न पुरुषार्थ ही ! ये सब बेकारकी बाते है।"

शास्त्रीजीने गंभीर होकर जवाब दिया—"व्यापारमें पुण्यकी बात ही कहाँ अुठती है ! अिसमें तो लाभ अुठानेकी आशासे सौदा खरीदा जाता है ! यदि तुम्हें विश्वास न हो तो बाजी लगाकर देख लो।"

शर्माजीने कहा—" बाजी लगानेकी बात कहते हो ? लोग सुनेंगे तो हँसेंगे ? "

" पागल लोग योही हँसा करते है ! हँसने दो। मुझे शरमानेकी जरूरत ही क्या ? किसी महाकविने ठीक ही कहा है ! "

शर्माजीने हँसते हुअे कहा—" बेचारे संन्यासी राजु रूपांतरित होकर सन्यासी राव न बन जाअें ! "

किसीने कहा—" देखेगे न, अस. फायदेके सौदेको। "

दूसरेने कहा—" बड़ा अच्छा सौदा हाथ लगा है। "

तीसरे व्यक्तिने कहा—" शास्त्रीजी बेवकूफ थोड़े ही है ? "

चौथेने कहा—" राजुकी मूंछे निकालनेके लिअे बैठे-बैठे अिन लोगोकी बनाअी हुअी योजना है यह ! "

पाँचवेंने कहा—" राजुकी मूँछोंने अिन लोगोंका आखिर क्या बिगाडा ? बैठे-बैठे अिन्हें हजम नही होता है, अिसीलिअे कुछ-न-कुछ खुराफात सोचते रहते है। "

अिस प्रकार तरह-तरहकी बातें करते रहनेके पश्चात सभी अपने-अपने घर चले गअे।

लगभग अेक महीना हुआ है कि क्लबका वातावरण अिधर बिलकुल बदल गया है। सभी लोग अिसे अपनी व्यक्तिगत हानिकी भाँति अनुभव करने लगे है। संन्यासी राजु दिन-प्रति-दिन अिसी चितासे घुलने लगे। अुन सबमें शास्त्रीजी ही अकेले निश्चित रहे।

संन्यासी राजु प्रति दिन क्लबमें आते और पूछते—" क्यों शास्त्रीजी, मूँछें कब मुँड़वाअेगे ? " शास्त्रीजी अुत्तर देते—" राजुजी ! अभी कोअी जल्दी नही है। यह सब तो हँसी-मजाकके लिअे किया गया था। किन्तु यह भी सत्य है कि मौका आनेपर मूँछे भी ली अवश्य जाअेंगी। "

अेक दिन राजुने मूँछें जरा कटवा ली थी। शास्त्रीजीने अुनकी ओर लाल-लाल आँखोंसे घूरकर देखते हुअे पूछा—" क्यों जी, मेरी खरीदी हुअी मूँछोको आपने अपनी अिच्छाके अनुसार कटवा डाला ? "

राजुके मनमें अेक धक्का-सा लगा। अुन्होंने अत्यन्त नम्रतासे कहा—"मूँछें जरा अधिक घनी हो गअी थी। भद्दी मालूम हो रही थीं, अिसलिअे थोड़ी-सी कैंची चलाअी गअी। देखनेवालोको बुरा न लगे, अिसलिअे अैसा कर लिया गया है।"

शास्त्रीजीने तैशमे आकर कहा—"रहने भी दीजिअे ये अूल-जलूल बातें! मैंने आपके पास मूँछोंको अिसलिअे रख छोड़ा था कि जरा बड़ी और घनी हो जानेपर अिन्हें कटवाअूँगा। आगेके लिअे जरा ध्यान रखें अन्यथा अच्छा न होगा। पहले ही से मै आपसे कह रखता हूँ।"

अपनेको दोष देते हुअे राजुने मनमे कहा— अिस प्रकार मूँछोंका सौदा करनेमें मैंने भारी भूल की।

अतः अुन्होंने आग्रहपूर्वक शास्त्रीजीसे कहा—"लीजिअे, मेरी मूँछे ले लीजिअे, जिससे अिस प्रकारके बंधनोंसे अेक बारगी ही पिंड छूट जाअे।"

हम दिन-प्रति-दिन शास्त्रीजीकी हँसी अुड़ाते हुअे पूछते—"क्यो शास्त्रीजी, तुम्हारे मूँछोके सौदेमे कितना फायदा हुआ है?"

शास्त्रीजी भी अुसी प्रकार हँसते हुअे प्रत्युत्तर देते—"हाँ, हँसिअे! खूब हँसिअे!! मुझे कोअी चिता नही। मुझे तो अिसमे शत-प्रति-शत फायदा होनेकी ही संभावना है।"

दिन बीतते गअे। अेक दिन दावत हुअी। अुस दिन अेक सुदर सिनेमाकी अभिनेत्रीका संगीत व अेक नर्तकीके नृत्यका प्रबंध भी था। संन्यासी राजुको नृत्य और संगीतसे अपार प्रेम है। अुनका नाम सुनते ही अुनकी बाँछे खिल अुठती है। नृत्य-संगीत भी न रहें, पर जहाँ दस औरतें अेकत्रित हो आनंद मनाती है, वहाँपर राजु अवश्य हाजिरी देते है। अुस दिन हमने निश्चय किया कि पहले हम सब लोग क्लबमे मिलें। अुसके बाद सभी अेक साथ वहाँसे संगीत-सभामे चलें। सब-के-सब समयपर आअे। संन्यासी राजुने राजा-जैसा वेष बना लिया। अपनी मूँछोंकी सजावटमें आज अुन्होंने आवश्यकतासे अधिक दिलचस्पी ली। अुनपर अित्र भी लगाया। रेशमी वस्त्रोंसे अपनेको खूब अलंकृत किया।

अपनी पूर्व चिंताको भूलकर अधिक अुत्साह दिखाते हुअे राजुजीने कहा—“ कहिअे, क्या हरअेक सज्जन तैयार हैं ! अभी चले या थोड़ी देर आराम करके जाया जाय ?”

शास्त्रीजीने राजुको आपाद-मस्तक अेक बार ध्यानसे देखा और कहा— ‘यह राजुका वेष ही कैसा है ? क्या मेरी मूँछोंके आधारपर ये महायश वहाँपर अपनी धाक जमाना चाहते है ? ओफ् ! यह अिनका कैसा दुस्साहस है ? कहाँतक चुप रहा जाअे ! गरजन-भरी आवाजमें वे बोल अुठे— “ अै संन्यासी राजा ! मुझे अभी सख्त आवश्यकता आ पड़ी है। मेरी अुन मूँछोंको निकलवा करके दे दीजिअे।”

हम सब चकित रह गअे। हमने सोचा कि राजुके दिलकी धड़कन बंद हो जाअेगी। अिसलिअे अेक आदमी दौड़कर पानी लाया। राजुने चुपचाप अुसे पी लिया। कुछ देरके बाद वे होशमें आअे और दीन स्वरमें बोले—“ कल अवश्य ही दे दूँगा।”

“ नही ! मुझे आज ही चाहिअे।”

“ तो ठीक है। दावतके होते ही दूँगा। अभी समय भी नही है।”

“ क्षमा कीजिअे। मुझे अभी ही और जल्दी ही चाहिअे। नहीं तो मुझे बड़ा घाटा होगा। अरे, दो मिनटमें हो जाअेगा दरबान ! जरा नाअीको तो बुला लाओ।” शास्त्रीजीने ये बातें गंभीर होकर कही थीं। अिधर राजुकी आँखे सजल हो अुठी। अुस हालतपर किसीको भी दया आ जाना स्वाभाविक ही था।

नाअी आया। संन्यासी राजुको यज्ञ-पशुकी भाँति ले जाकर अेक कुर्सीपर बिठाया गया। नाअी मूँछोंपर साबुन लगाने लगा, लेकिन शास्त्रीजीने मना करते हुअे कहा कि बहुत सावधानीके साथ मूँछोंको कैंचीसे काटा जाअे। शास्त्रीजी बगलमें खड़े होकर अेक कागज लिअे अेक तरफकी मूँछके सभी बालोंको अुसमें अेकत्रित करने लगे। दूसरी ओरकी मूँछोंपर नाअी पानी लगाने लगा। शास्त्रीजीने नाअीको धमकी देते हुअे कहा—“ बस करो, दूसरी मूँछ दो-चार दिनोंके बाद निकलवाअी जाअेगी।” क्लबके सभी मेम्बर आश्चर्यचकित होकर शास्त्रीजीकी ओर देखने लगे। राजुने अैसा अनुभव

किया कि मानों वह पक्षाघातसे पीडित हों! अुनकी स्थिति अैसी हो गअी कि काटो तो खून नही।

शर्माजीने कहा—"शास्त्रीजी! आप यह बहुत बडा अन्याय कर रहे है? थोड़ा तो रहम कीजिअे।"

राजू थोड़ी देरके बाद होशमे आअे। वे अपने जीवनमें अैसे कभी नहीं पछताअे होंगे जैसे आज पछताअे हैं। अुन्होंने अत्यन्त दीनता-भरे स्वरमें पूछा—"शास्त्रीजी, अैसा करना ठीक नही! ......"

शास्त्रीजीने बातको काटते हुअे अत्यन्त रोष-भरे शब्दोंमें कहा—"मै कृपा करूँ? आप ही लोग अिन्साफ कीजिअे। सारा माल अेक साथ लूँ तो क्या वह खराव नही हो जाअेगा? आजकी माँग अितनी ही है। फिर माँग आनेपर शेष आधी मूँछ ले लूँगा।"

राजूकी आँखें डबडबा आअी। वे भर्राअे हुअे स्वरमें बोले—"बाबू शास्त्रीजी! मुझे अिस तरह मत मारो। यह सौदा तय करते समय मेरी बुद्धि नष्ट हो गअी थी। अिससे तो यही अच्छा है कि मेरी पूरी हजामत कराकर भेज दो। मै तुम्हारे रुपये तुम्हें वापस लौटाअूँगा। तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजोंको मै कोटिश. धन्यवाद दूँगा।"

शास्त्रीजी यमराजकी तरह गरजते हुअे अैसे बोले, मानो अुन्होंने अपने जीवनमे कभी अपराध ही नही किया हो—"नही, अैसा कभी नही हो सकता। मेरा तो यह सिद्धान्त ही है कि बिना लाभका मै कोअी सौदा ही नही करता।"

हम सबको राजूकी हालतपर दया आअी। पर करे क्या? राजूने सँभलते हुअे पूछा—"तो बताओ, कितना दूँ?"

"दो-सौ रुपये दो। अेक सौ रुपयेका मुझे मुनाफा होगा।"

"यह तो बडा अन्याय है।"

"तो छोड दो। मांग दो सौ तक है। दूसरेको देनेके बदले तुम्हीको देना चाहा। अब तुम्हारी मर्जी! मेरे पास आपकी मूँछोकी माँग दो सौ तककी है। किन्तु चूँकि आप ही लेना चाहते है, अतः आपको प्राथमिकता दी जा रही है। यदि आप दो सौ रुपये नही देना चाहते हैं तो आपकी मर्जी!"

क्षण-भर सारा वातावरण निःशब्द रहा। अुस सन्नाटेको तोड़ते हुअे प्राण-त्यागके समय आत्म-समर्पण करनेवाले व्यक्तिकी भाँति राजु बोल अुठे--" ठीक है, तुम्हारी मर्जीके मुताबिक ही होगा।"

शास्त्रीजीने कहा--" बहुत अच्छा।"

राजुने जल्दी-जल्दी दो सौ रुपयेका चेक लिखकर दे दिया। शास्त्रीजीने अुसे अपनी जेबके हवाले किया और मूँछके बालोंकी पुड़िया राजुके हाथोंमें दे दी। राजू आगबबूला हो अुठे। अुस पुड़ियाको दूर फेंक दिया। मानो अुसमें अुनका सारा रोष अेकत्रित हो। अिसके बाद अुन्होंने अपनी दूसरी मूँछ भी निकलवा डाली। बहुत अधिक समय हो जानेके कारण हम सब वहाँसे चले गअे।

बेचारे राजु श्मशान-वाटिकासे लौटनेवाले व्यक्तिकी भाँति मुँह लटकाकर वहाँसे चल दिअे।

शास्त्रीजीने गर्वका अनुभव करते हुअे कहा--"मैंने कहा था न, अिस सौदेमें मैं शत-प्रति-शत फायदा अुठाअूँगा।"

शर्माजीने क्रोध-भरे शब्दोंमें ललकारा--" हाँ, किया है कोअी बड़ा काम!" मानो अुनका दिवाला निकल गया हो, अैसा अनुभव किया शर्माजीने।

संन्यासी राजु अुस दिनसे लेकर आजतक फिर क्लबमें दिखाअी नहीं दिअे।

* * *

१२.

सुधार

—श्री गुरजाड अप्पाराव

आप हैं आधुनिक तेलुगु-साहित्यके युग-निर्माता और जनसाधारणकी समझमें आनेवाली व्यावहारिक भाषाको साहित्यिक रूप देनेके लिअे लड़नेवाले महापुरुष। समाज-सुधारक, क्रान्तिकारी कविके रूपमें भी आपकी पर्याप्त ख्याति है। भाषा, रीति भावना व शैलीमें नअे प्रयोगकर अेक ही साथ कवि, नाटककार और कहानीकारके रूपमें आपने भावी पीढ़ीका मार्गदर्शन किया है। आपकी दृष्टिमें साहित्यका अुद्देश्य कोअी प्रयोजन अवश्य होना चाहिअे; अिसी अभिप्रायसे आपने समकालीन समाजके दुराचारोंको दूर करनेके लिअे साहित्यको अेक प्रबल साधन बना लिया है। अध्यापक, दीवान, शिक्षावेत्ता तथा सुधारकके रूपमें आपने अपनी प्रखर प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया है।

आपके "मुत्याल सरालु" (कविता-संग्रह), "कन्या शुलकम" (नाटक) विशेष प्रसिद्ध हैं। "कन्या शुलकम" अेक सामाजिक नाटक है। अिसकी रचनाके द्वारा अप्पारावजीकी कीर्ति देशव्यापिनी हो गअी। गीत-रचनामें भी आप सिद्धहस्त हैं।

* * *

सुधार

"दरवाजा खोलो! दरवाजा......!"

दरवाजा नहीं खुला। अेक मिनट तक वह खड़ा रहा। कमरेकी घड़ीने अेक बजा दिया।

"कितनी देर की मैंने। मेरी बुद्धि घास चरने गअी थी। कलसे सावधान रहूँगा। अपनी पत्नीको छोड़कर मेरा मन वेश्याके गानमें मग्न हो गया है। अेक गीत भी मनको लुभा नहीं सका। औरतोंके हाव-भावोंपर दिल दौड़ा करता है! नहीं तो गीतके समाप्त होने तक खुटचालीकी भाँति वहाँपर बैठना कैसी आदत है? कोअी अवसर प्राप्त कर अुससे दिलकी कसर निकालनेकी लालसा क्यों है? देखो, अभी तमाचे लगवा रहा हूँ। कलसे अुसका गीत सुनने नहीं जाअूँगा। यह निश्चित है। यही मेरा दृढ़ निश्चय है।......जोरसे पुकारूँ तो सम्भवतः कमलिनी जाग अुठेगी। धीरेसे दरवाजा खटखटाकर नौकर रामको जगाअूँगा तो बिना किसी आहटके अुसकी बगलमें पहुँचकर शरीफ बन सकता हूँ।"

मनमें अैसा निश्चय करके गोपाल रावने दरवाजेपर हाथ रखा ही था कि वह खुल गया। कमरेमें कोअी नहीं था। दरवाजा खोलकर देखा दालानमें दीप भी नहीं है। दालान पारकर शयन-गृहमें प्रवेश कर देखा तो वहाँपर भी चिराग जलता नजर नहीं आया। बिना आहटके कदम रखते

हुअे खाटके पास पहुँचकर पता लगाना चाहा कि कमलिनी जाग रही है या सो रही है ? किन्तु अुस अन्धकारमे कुछ भी पता नही चल पाया। जेबसे दियासलाअी निकालकर अुसने सलाअी जलाअी। दियासलाअीके प्रकाशमें गोपाल रावने देखा कि खाटपर कमलिनी नही है। गोपाल रावका चेहरा फक् हो गया और हाथसे सलाअी नीचे गिर पड़ी। कमरेके घने अन्धकारके साथ-साथ अुसके हृदयमे भी घना अन्धकार फैल गया। अुसके मनमे तरह-तरहकी शंकाअे पैदा होने लगी और वे अुसे और भी व्याकुल बनाने लगी। यह तो नही कहा जा सकता कि अुसे अपनी बेवकूफीपर क्रोध आ रहा था, अथवा कमलिनीकी अनुपस्थितिपर, पर असह्य क्रोधावेशके कारण अुसका मन अधिक विचलित हो गया था। अुसने देहलीपर कदम रखकर देखा। तारोंकी चमकमे कोअी दास या दासी दिखाअी नही दी। गोपाल रावने निश्चय किया कि अुन्हें फाँसीकी सजा ही अुचित होगी।

गोपाल रावने पुनः कमरेमें प्रवेश करके दीपक जलाया और कमरेमें चारों ओर ध्यानपूर्वक देखा। किन्तु फिर भी कमलिनी कही दिखाअी नही दी। सडककी तरफके दरवाजेके पास पहुँचकर अुसने अुसे खोलकर देखा। वह नौकर राम मुँहमें चुरुट दबाअे सिर अुठाकर तारोंको अेकटक देख रहा है। गुस्सेके मारे गोपाल रावने जोरसे अुसे पुकारा—"हे राम ! अिधर आओ !" नौकर राम चुरुट फेंककर तेजीसे दौड़ता हुआ वहाँ आया।

गोपाल रावने पूछा—"तुम्हारी माँ कहाँपर है ?"

राम—"मेरी माँ, घरपर है।"

"बेवकूफ कहीका ! तुम्हारी माँ नही, मालकिन कहाँपर है ?"

"ओह ! माताजी ! और कहाँ रहेगी। घरमें सोती ही होंगी।"

"वे घरमें नही है।"

अिसपर राम भी घबरा गया। दरवाजेमे कदम रखते ही रामकी पीठपर दो घूँसे जम गअे।—"बाबू ! मार दिया !" चिल्लाकर राम जमीनपर गिर पड़ा।

गोपाल राव वैसे हृदयसे कठोर नही थे, अतः तुरन्त अुन्हें अपनी भूल मालूम हो गअी। वे अपनी भूलपर पश्चात्ताप करने लगे। अुन्होंने रामको

हाथका सहारा देकर अुठाया। अुसकी पीठपर हाथ फेरते हुअे मनमें सोचने लगे कि मैंने आज पशु-जैसा व्यवहार किया है। वे नौकरको घरके भीतर ले गअे।

गोपाल राव कुर्सीपर बैठे और दीनताके साथ नौकरसे पूछने लगे--"राम! मेरी स्त्री आखिर कहाँ चली गअी है?"

"बाबू! यह सब किस्सा जादू जैसा मालूम होता है।"

"कही मायके तो नही गअी है?"

"यह भी हो सकता है, बाबू! औरते नाराज हो जानेपर अक्सर बिना कहे अपने मायके ही चली जाया करती है, और शिक्षिता होनेपर क्या हो सकता है, यह तो आप ही जानें।"

"शिक्षाका मूल्य तुम्हें क्या मालूम?" अैसा कहते हुअे गोपाल राव अपनी कुहनियोंको मेजपर टिकाकर कुहनियोके बीच सिर रखे कुछ सोच ही रहे थे कि अुन्हे मेजपर कमलिनीकी लिखावटकी अेक चिट्ठी दिखाअी दी। गोपाल राव अुद्विग्नताके साथ अुसे पढने लगे। अुसमें लिखा था--

"महाशय!"

अिस शब्दको पढकर गोपाल राव जरा चौके और अुनके मुँहसे निकल पड़ा--हाँ, 'प्राणनाथ!' के स्थानपर 'महाशय' आ गया है।

राम--"हाँ, क्या बाबू! प्राण चला गया?"

"मूर्ख! चुप रहा।"

पत्रमे आगे लिखा था--

"महाशय! दस दिन हुअे, रातमें आप घर ही नही आते थे। आप कहा करते थे कि मीटिंगोंमे जा रहा हूँ, या जनताके कल्याणार्थ आन्दोलनमें निद्राहार छोड़कर सेवा करने जा रहा हूँ। लेकिन मैंने अपनी सहेलियों द्वारा वास्तविक समाचार जान लिया है। मेरे घरपर रहनेसे आपको बराबर झूठ बोलना पड़ रहा है। मैं यदि अपने मायके जाअूँ तो आपको पूर्ण स्वतन्त्रता मिल जाअेगी और असत्य भाषण करनेकी आवश्यकता ही न रह जाअेगी। आपसे प्रति दिन असत्य भाषण करानेकी अपेक्षा आपके मार्गमें रोड़ा न

बनना ही अेक सतीका पतिके प्रति कर्तव्य है। मैं आजकी रातको मायके जा रही हूँ। खुश रहिअेगा। खर्चके अतिरिक्त कुछ भी बचे, भेजनेकी कृपा कीजिअेगा।"

पत्र पढ़ना समाप्तकर गोपाल रावने कहा—

"मै पशु हूँ, आदमी नही हूँ।"

"क्यों बाबू! आप अैसी बात करते हैं?"

"मै निरा पशु हूँ!"

गोपाल रावके अिस वाक्यको सुनकर नौकर राम बड़ी ही प्रयत्नपूर्वक अपनी हँसीको रोक सका।

"मेरी पत्नी गुणवती, विधानिधि, विनयशीला है। अुसने मेरी दुर्बुद्धिका मुझे अुचित दण्ड दिया है।"

"क्या किया है, बाबूजी!"

"वे मायके गअी है—लेकिन तुम्हें मालूम हुअे बिना कैसे गअी?"

राम दो डग पीछे हटते हुअे कहने लगा—"बाबूजी, शायद मै अुस समय सोता हूँगा। आहट होनेसे मै जाग पड़ता और आपको बताता। अिसलिअे माताजी चुपचाप चली गअी है। बाबू! आखिर वह तो औरत ठहरी। यदि औरत बिना पतिसे कहे मायके जानेका नाम ले, तो दो-चार चपत लगाकर अुसे ठीक कर दिया जाना चाहिअे। नही तो पुरुषोकी भाँति चिट्ठी-विट्ठी लिखकर क्यों न जाना चाहिअे?

"अरे मूर्ख! अीश्वरकी सृष्टिमे अुत्कृष्ट वस्तु शिक्षित स्त्री रत्न ही है। शिवजीने पार्वतीको आधी देह बाँटकर दे दिया था—अँग्रेज पत्नीको 'बेटर हाफ' (Better Half) कहते है। अिन सबका यही अर्थ है कि पत्नी पतिसे भी अुत्तम है। आ गया समझमे?"

"मेरी समझमे ये बाते कैसे आअेंगी, बाबूजी!" राम अपनी हँसीको रोक नही सका।

"तुम्हारी लड़की स्कूल जा रही है न? शिक्षाका मूल्य तुम्हें भी मालूम हो जाअेगा। अिसे रहने भी दो, लेकिन तुम्हें या मुझे अभी चन्द्रवरम् जाना होगा! मै चार दिनतक यहाँसे हिल-डुल नहीं सकता हूँ। तुम तो बाप-दादोके समयके नौकर हो। तुरन्त कमलिनीको लेते आओ। अुनसे क्या कहना है, मालूम है?"

"हाँ, कहूँगा कि बाबूजीने मेरी पीठकी मरम्मत की है, माताजी, अब आ जाअिअे।"

"पीटनेकी बात भूल जाओ। अुसके लिअे पुरस्कार-स्वरूप दो रुपये दूँगा। लो, फिर कभी यह बात न निकालना। भूलसे भी कमलिनीसे न कहना। समझा!"

"कभी नही कहूँगा, बाबूजी!"

"तुम्हें जो कुछ कहना है, वह मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। तुम अुनसे जाकर कहना कि पडितजीकी अक्ल अब ठिकानेपर आ गअी है। वे अब कभी वेश्याओंकी बातोंमे न आअेंगे। रात्रिके समय घर छोड़कर कही नही जाअेंगे। अुनका यही अन्तिम निश्चय है। समझा। तुमसे अुन्होंने क्षमा माँगी है। कृपा करके अुनकी भूलोंको कही प्रकट न करके दो-तीन दिनमे लौटनेके लिअे भी कहा है। तुम्हारे बिना अुन्हे अेक-अेक दिन अेक युगके समान मालूम हो रहा है। ये सब बाते बड़ी सावधानीके साथ अुनसे कहना समझा?"

"हाँ, बाबूजी! समझमें आ गया!"

"तुम वहाँपर जाकर क्या कहोगे, जरा अभी मुझसे कहो तो!"

राम सिर खुजलाते हुअे....."हाँ.....क्या.....कहूँगा..... बाबूजी! वह सब मुझे मालूम नही। बाकी अितना अवश्य मैं कहूँगा—मालिकिन! मेरी बात सुनिअे। बड़ा अनुभवी हूँ। औरतोंको मालिककी आज्ञाओंका पालन करना ही चाहिअे! नही तो हमारे पंडितजी भी अेक रखेलीको घरपर ही बुलानेवाले हैं। यह बात मैं आपके कानमे डाल देता हूँ। नगरमे स्वर्ण प्रतिमा-सी अेक वेश्या आअी है। पंडितजीका मन अुससे मिलनेको छटपटा रहा है। फिर आगे आपकी अिच्छा!"

"अरे मूर्ख!" कहते हुअे गोपाल राव क्रोधित होकर खड़े हो गअे।

नौकर राम चुपचाप चोरकी भाँति कमरेसे बाहर भाग गया और अितने ही मे खाटके नीचेसे अमृत निष्यदिनी हँसी तथा कर-ककणोंकी मधुर ध्वनि गूँज अुठी।

* * *

१३.

औरतका मूल्य

—श्रीमती कनुर्पात वरलक्ष्मम्मा

आप बहुत समयसे कहानियोंकी रचना करनेवालोंमेंसे अेक हैं। आपकी 'ओह' (शपथ) नामक कहानी हिन्दीमें अनूदित होकर विशेष प्रशंसा प्राप्त कर चुकी है। नारी-जीवनको यथार्थ रूपमें समझकर सुन्दर शिल्पके साथ नारीकी समस्याओंपर कहानियाँ लिखनेमें आपको जो कुशलता प्राप्त है, वह बहुत कम लोगोंको प्राप्त हुअी है। आज भी महिलाओंकी सेवा करते हुअे आप नारी-समाजकी अुन्नतिकी शुभाकांक्षिणी हैं। आपकी अन्य कहानियोंमें "पिचनुपुच्चुकुन्न मरुनाडु", "मूडु तीमीनालु" और "वरद राजेश्वरी" अुत्तमोत्तम हैं।

* * *

औरतका मूल्य

जहाँगीर बादशाहके राज्य-कालके दिन हैं। दिल्ली नगरके बाहर मजदूरोंकी बस्तीमें अेक मुस्लिम नौजवान कासिम, अुसकी पत्नी और माता निवास कर रहे हैं। वह अेक गरीब परिवार है। दिनभर कड़ी मेहनत करनेसे ही अुनकी रातकी रोटी मिलती है। कासिमकी माँ बूढ़ी है। वह ठीक तरहसे चल-फिर भी नहीं सकती। तो फिर क्या खाके काम कर सकेगी। कासिमकी औरत नव-यौवना है। मुस्लिम सम्प्रदायके अनुसार वह बाहर कदम नहीं रख सकती। अर्थात अुसे परदेमें ही रहना होता है। कासिमकी कमाअी ही अुस खानदानके निर्वाहका अेकमात्र आधार है। अेक जूनका खाना भी अुन्हें मुश्किलसे मिल पाता है। लेकिन अुस युवा-दम्पत्तिका अेक दूसरेपर अगाध प्रेम है। कासिम जबतक घरपर रहता है, तबतक वे दोनों तोता-मैनाकी भाँति हँसते-मुस्कुराते आनन्दके साथ समय बिताते हैं।

फातिमा अपूर्व सुन्दरी है और गुणवती भी। वह पतिको पंच-प्राणोंसे अधिक मानती है। अुसके हाथोंमें चाँदीके कड़े हैं। कानोंमें पीतलके कर्ण-कुण्डल हैं। फटी-पुरानी साड़ी पहनकर भी वह पतिसे कभी असंतुष्ट नहीं रहती। दूसरोंको अैश्वर्यपूर्ण जीवन बिताते देखकर अुनपर वह अीर्ष्या नहीं करती। अुनके अभावमें दुखी नहीं दिखाअी देती। अुनकी चिन्ता तक नहीं करती। सुखका आधार व मूल कारण भोग-विलास नहीं, वरन् तृप्ति है!

अुस तृप्ति और संतुष्टि द्वारा वह अैसा अनुभव करती है, मानो वह समस्त प्रकारके सुखोका भोग कर रही है। कामपर गअे हुअे पतिके लौटनेमें यदि देर हो जाती है तो वह देहलीपर बैठकर पतिके आनेकी बाट जोहती रहती है। कासिम भी कामके पूरा होते ही अेक मिनट भी वहां ठहरे विना घर पहुँच जाता है। अपने बेटे और बहूका परस्पर अनुराग देखकर बूढ़ी अपनेको भाग्यशालिनी मानकर गर्वसे फूली नही समाती।

[२]

दिल्ली नगरके कोतवालका नाम सादुल्ला खाँ है। जनताके समस्त अपराधोका अुचित रीतिसे फैसलाकर दण्ड देनेवाला वह अेक अधिकारी है! ओहदेकी दृष्टिसे वह न्यायाधीश है, लेकिन स्वभावसे नाममात्रके लिअे भी अुसके पास न्याय-प्रियता नही है। वह कठोर, क्रूर, जुआँखोर, और वेश्या-लोलुप है। कही कोअी भी सुंदर नारी यदि अुसकी दृष्टिमे पड़ गअी, तो फिर अुसके स्त्रीत्वकी रक्षा नही होती! तुरत ही वह अुसके जनानखानेमें पहुँचा दी जाती है। दुष्ट अधिकारीके अनुचर भी अकसर दुष्ट ही हुआ करते है। अिसी सिलसिलेके अनुसार गुप्तचर दलके सदस्योका भी यह पेशा ही हो गया था कि वे चारो तरफ घूम-घूमकर खूबसूरत औरतोका पता लगावे और अुन्हे अपने अधिकारीके हाथो सौपे। अेक दिन जासूस दलके अेक आदमीने फातिमाको देखा। अुस सौंदर्यवतीको देखकर वह मुग्ध हो गया और अुसने अपने अधिकारीको अिसका पता दिया। कासिमने अिस कार्यसे प्रसन्न होकर अिस जासूसकी गिनती अपने प्रिय पात्रोंमे करनी आरम्भ कर दी। अुस दिनसे कासिमकी पत्नी फातिमाको फँसानेका प्रयत्न किया जाने लगा। दूतोने कासिमके घर पहुँचकर तरह-तरहका लालच दिखाकर फातिमाको फँसाना चाहा। वे कासिमको समझाने लगे—"अुन्नीस-बीस वर्षकी अुस नवयौवना रूपसीको कोतवाल साहबको सौपकर वह अपार धन-संपत्ति प्राप्त करे। अुसे ये लालच बताअे जाते कि अैसा करनेसे तुम लोगोंकी गरीबी दूर होगी। आरामसे दिन कटने लगेंगे। पैसा मिलनेपर जिंदगीका लुत्फ अुठाया जा सकता है।" जासूस पहले प्रलोभन देकर जब अुन्हें राजी नहीं

कर सके तो अुन्होंने कासिमको धमकाना शुरू किया-- "तुम मान जाओगे तो तुम्हें कम-से-कम धन तो मिल जाअेगा, नही मानोगे तो धन भी नही मिलेगा और न औरत ही।" अुन लोगोंकी बाते सुनकर फातिमाका पारा चढ़ गया। वह फटकारने लगी--"छिः! मैं अुसका चेहरा तक देखना नही चाहती। अुसके धनकी हमे जरूरत नही।" कासिमने भी डॉटते हुअे कहा "हमे अुसके सुख-भोगोंकी जरूरत नही है। हम अितने तुच्छ नही कि पैसेके पीछे अपनी आबरू-अिज्जतको बेचे। मजदूरी करनेमे ही हमें आराम है।" कासिमकी बूढ़ी मॉने आग बरसानेवाली ऑखोसे देखते हुअे फटकार बताअी और कहा--"अबे दोजखके कुत्ते! निकल हमारे यहाँसे, हम तुम लोगोके चेहरे तक देखना नही चाहती। तुम लोगोके चेहरे जल जाअें! अल्लाहसे जरा डरो!" गालियाँ देने लगी। जब साम-दाम-भेद आदिके अुपायोसे काम नही चला तो सादुल्ला खाँ के दूत अपना-सा मुँह लेकर वापस लौटे।

अुस दिनसे कासिमका खानदान सदा चिंतित ही रहने लगा। अुस खानदानमे वह पहलेकी-सी आनंदपूर्वक चहल-पहल अब नही रह गअी थी। वे हमेशा यही अनुभव करते कि अुनके अूपर काल मँडरा रहा है और यह पूरा खानदान जल्दी ही अेक गहरे गर्तमें गिरने जा रहा है। अुनकी मुहब्बतके स्थानपर विषादने डेरा डाला। वे हँसी-खुशियाँ और मुस्कुराहटें गायब हो गअी। किसीको भी अब खाना नही रुचने लगा। फातिमा हमेशा रोती रहती, कासिम यही सोचा करता कि अिस नर-राक्षससे कैसे अपनी पत्नीकी रक्षा करे? बूढ़ी अपने बेटे-बहूकी अिस विपत्तिपर आठ-आठ आँसू बहाती! कासिमने फातिमाको समझाया। पर वह अुसकी गोदमें सिर रखकर घंटों रोया करती। कासिम अुसके दुखको देख नहीं पाता। लेकिन विवश होकर चुप बैठनेके सिवा वह कर भी क्या सकता था। कोतवालका सामना करनेकी ताकत अुस गरीब मजदूरमें कहाँ? वह अेक पलको अेक युगके समान बिताते हुआ सदा व्याकुल रहता कि न मालूम कब आ करके अुसकी औरतको सादुल्लाखाँके नौकर अुठा ले जाअेंगे। अेक दिन कासिम कही मजदूरी करने गया। बूढ़ी बाजार गअी थी। अुस समय सादुल्ला-का अेक नौकर अशर्फियोंसे भरी अेक थैली लेकर आया और फातिमाके

सामने रखते हुअे अुसने कहा––"अशर्फियोंसे भरी अिस थैलीको तो जरा देखो! तुमने अपने जीवन भरमें अिससे पहले कभी भी अितनी अशर्फियाँ न देखी होंगी! अिस अभागे मजदूरके साथ रहनेसे तुम्हें सुख ही कहाँ मिलेगा! कोतवाल साहबके पास आ जाओगी तो शहजादीकी तरह रहोगी और सुख भोगोगी। अुन्होने तुम्हें बुलाया भी है! मेरी बात सुनो!" फातिमाका चेहरा क्रोधके मारे लाल हो गया। वह अेकदम डपटकर बोली––"बदमाश कहींका! तुम्हारी अशर्फियाँ यहाँ किसे चाहिअे? मेरे शौहरका दारिद्रय तुम्हारे आकाकी दौलतसे मुझे अधिक ज्यादा पसन्द है। तुम्हारा आका नीच, बदमाश और नर-राक्षस है! आँखोंमें पडनेवाली हरेक स्त्रीका सतीत्व नष्ट करनेवाला चाण्डाल है। मेरे शौहरकी लियाकतके सामने तुम्हारे कोतवालके अधिकार और अुसका अैश्वर्य तृणके समान है।" अितनेमें फातिमाकी सास आअी। वह आगबबूला हो अुठी। अुसने अशर्फियोंको बाजारमें फेंकते हुअे दुतकारा––"तुम आदमी नही, जानवर हो, तुम्हें क्या माँ-बहनका विचार नही होता! पराअी औरतोंके पीछे क्यों पडते हो! जा यहाँसे वरना खैर नही!" नौकरने वहाँसे जानेकी तैयारी करते हुअे धमकाया––"मैंने लाख तरहसे समझाया, तुम सुनती ही नही हो! कोतवालसे दुश्मनी मोल लेना शेरसे शत्रुता करनेके समान है। कोतवाल साहबने निश्चय कर लिया है कि सुबह होनेसे पहले ही वह आ करके खुद तुम्हें ले जाअेंगे! तब यह देखना है कि तुम्हारी मदद कौन करता है!"

कासिमके घर आनेपर अुसकी माँ और औरतने अुसे सारी घटना सुनाअीं। कासिम और फातिमाने निश्चय कर लिया कि अुनके दांपत्यकी अंतिम घडियाँ आ गअी हैं। सूर्यास्त होनेके पहले ही अुस महानगरीको छोड़ अुन्होंने अन्यत्र चला जाना चाहा। लेकिन पासमें अेक कौड़ी भी नहीं है। बिना पैसेके गाड़ी या कोअी सवारी भी नही मिल सकती। पैदल चले तो सादुल्लाके नौकरोंकी आँखोंसे बचना मुश्किल है। अुसका कोअी भी नौकर देख लेगा तो कासिम और अुसकी माँको कतल कर देगा और फातिमाको सादुल्लाके जनानखानेमें पहुँचा देगा! कासिमकी माँने अपने कुलके मौलवीके पास जाकर आरजू-मिन्नत भी की कि वह अुनकी रक्षा करें। लेकिन अुसने बताया कि सादुल्लाका सामना कोअी नही कर सकता है। कोतवालके

मामलेमे तो बादशाहके द्वारा ही न्याय मिल सकता है। किलेके वाहर लगी घंटीकी जंजीर खीचकर बजाओ तो तुम्हारी प्रार्थना सुननेके लिअे बादशाह खुद आअेगे। अुस बूढीने किलेके द्वारपर पहुँचकर घटी बजानेका निश्चय किया। मजदूरोकी बस्तीसे बादशाहका किला दूर है। फिर भी वह पैदल ही वहाँ पहुँची। अुसे भूख सताने लगी थी। वह बुढिया प्यासके मारे परेशान थी, लेकिन सामने वडा कर्तव्य था! फिर भी समस्याका हल निकालना ही था।

[३]

मुगल चक्रवर्तियोमें न्याय-प्रियताके लिअे विख्यात जहाँगीर बादशाह अपनी प्रेयसी नूरजहाँसे विनोद-वार्तालाप कर रहे थे। अिसी बीच दुर्गके बाहरकी घंटी बज अुठी। न्याय-प्रिय बादशाह चौंक अुठे। अपनी बेगमसे विना कुछ कहे वे किलेके दरवाजेपर आ खड़े हुअे। घटीके पास अेक बूढ़ी खडी हुअी थी। अुसने बादशाहको सामने देख झुककर सलाम किया। बादशाहने अुस औरतसे पूछा—"तुम्हारी क्या शिकायत है?" बूढ़ीने निर्भीकतासे जवाव दिया—"आप जैसे अिन्साफ-पसन्द बादशाहोंके राज्यमें भी हम जैसे गरीबोकी तकलीफोका अन्त नही दिखाअी देता।" बादशाहने पूछा—"तुम्हारी तकलीफे क्या है?"

बूढ़ीने कहा—"औरतोकी आबरूकी रक्षा करना भी मुश्किल हो रहा है! हमारी आबरू अुतारनेके लिअे बदमाश तैयार हो गअे है!"

बादशाहने अुद्विग्न होकर पूछा—"कौन है वह नीच?"

"आप हमारी रक्षा नही करेगे तो हम जिन्दा नहीं रह सकते। आपने लोगोकी शिकायत सुननेके लिअे घंटी लगवाअी। लेकिन अन्याय और अत्याचार हो ही रहे है।"

बादशाहने कड़ककर पूछा—"वह अन्याय क्या है?"

बूढ़ी—"जहाँपनाह! मेरे अेकमात्र पुत्र है।"

बादशाह—"हाँ!"

बूढी—"मेरी बहू रूपवती है।"

बादशाह—"अँ!"

बूढी--"वह पतिव्रता है।"

बादशाह--"तो तुम भाग्यशालिनी हो!"

बूढी--"भाग्यशालिनी होनेसे फायदा क्या है! मै अुसकी रक्षा नहीं कर पा रही हूँ। आज अेक दिनके लिअे आप अुसकी रक्षा करेंगे तो बडी कृपा होगी। कल शामसे पहले ही अुसके चाँदीके कडे बेचकर हम किसी दूसरे गॉव चले जाअेगे। जहॉपनाह! अुस दुष्टके हाथोमे पड़नेसे मेरी बहूकी रक्षा कीजिअे। सवेरे होते-होते हम अिस बेअिन्साफ शहरको छोडकर कही और चले जाअेगे।" यह कहकर बूढी फूट-फूटकर रोने लगी।

बादशाहने पूछा--"वह दुष्ट कौन है? साफ-साफ क्यो नही बताती?"

बूढीने जवाब दिया--"और कोअी नही, वही कोतवाल सादुल्ला खाँ! आजकी रात यदि हम अपनी बहूको अुसके घर नही भेजते तो वही खुद रात्रिको आ करके जबरदस्ती अुसे अपने घर ले जानेवाला है। मेरी बहू भयभीत हो अन्न-जल छोडकर छटपटा रही है। मेरा बेटा पागल-सा हो गया है।'

बादशाहने बूढीको ढाढस बँधाया और कहा--"तुम्हारी वहूकी अिच्छा न हो तो वह कैसे ले जाअेगा।"

बूढीने कहा--"वह ले जानेपर तुला हुआ है। अशर्फियोका लोभ दिखाकर वह मेरी बहूका सतीत्व लूटना चाहता है। लेकिन मेरी वहू साहसी और पतिव्रता है। वह अुस दुष्टके हाथोमे पड़नेके पहले ही आत्महत्या करना चाहती है। मेरा पुत्र अुसे छोडकर जीवित नही रह सकता है। वही मेरा अेकमात्र लड़का है। जहॉपनाह! मुझपर दया कीजिअे। अिस विपत्तिसे मुझे अुबारिअे! जिन्दगीभर मै आपकी अेहसानमद रहूँगी!"

बूढीकी बाते सुनकर बादशाहका दिल पिघल गया। अुसकी आँखोसे आँसू बहने लगे। बादशाहने रूमालसे अपने आँसू पोछे। बादशाह सोचने लगे--लोगोके अपराधोका फैसलाकर अुन्हे दण्ड देनेवाले कोतवाल ही यदि अिस तरहसे नीच कामोपर अुतर आअें तो बस हो चुका! अिन्साफ-पसन्द बादशाहके नामसे मशहूर मेरे राज्यके अधिकारी ही यह पाप-कार्य कर रहे है। अेक साध्वी तथा पतिव्रता नारीकी तकलीफको दूर न कर सकनेवाला मेरा चक्रवर्तीत्व ही फिर किस कामका? अिसी अुधेड़बुनमे बादशाह बहुत

देर तक वहीं विचारमग्न मुद्रामें खड़े रहे। विचारोंकी गहनताके कारण महान विपत्तिमें पड़ी छटपटानेवाली अुस बूढ़ीके मनको सान्त्वना देनेके लिअे थोड़ी देरतक बादशाहके मुँहसे अेक शब्द भी नही निकल सका। अिसपर बुढ़ियाको गुस्सा आ गया। बादशाहको कोअी जवाब न देते देख वह बोल अुठी––"गरीबोंकी शिकायते अल्लाह तक नहीं सुनता है। मनुष्योंकी फिर बात ही क्या? अैसे लोग जनताकी शिकायत सुननेका दम्भ भरकर घंटियाँ बँधवाते हैं। लेकिन अुससे फायदा क्या!" यह कहकर बुढ़िया जाने लगी। बादशाहकी विचार-समाधि भंग हुअी। वे बोले–– "नानी! तुम्हारा घर कहाँपर है?" बूढीने जवाब दिया––"शहरके अंतिम छोरपर मजदूरोंकी बस्तीमे!" यह कहकर वह चली गअी। बादशाह अेक गंभीर साँस लेकर महलमे गअे।

[४]

रातके नौ बजेका समय है। दिनभर काम करके मजदूर थके-माँदे घर लौटे और जहाँ-तहाँ थकान मिटानेके लिअे लेटे पड़े हैं। लेकिन कासिम, अुसकी पत्नी और माता जागते हुअे अिस आशंकासे परेशान हैं कि बादशाहसे आरजू करनेपर भी अुन्होने कोअी हामी नही भरी। अब सादुल्लाखाँके आनेके भयसे बिना खाअे-पिअे वे चौकन्ने होकर बैठे हैं। प्रति क्षण अुनके मनमें यह आशंका बनी हुअी है कि न जाने वे कब कालरूपी सादुल्लाखाँके शिकार बन जाअेंगे।

अितने ही मे घोड़ेकी टापोकी आवाज आअी। अेक आदमी घोडेपरसे अुतरकर बुढियाके घरका दरवाजा खटखटाने लगा। भीतर बैठे हुअे कासिम-परिवारके सभी सदस्य परिस्थितिकी गंभीरताकी आशंकासे अेक दूसरेसे लिपटे हुअे है। अिधर सादुल्ला खाँने कडककर द्वार खोलनेका आदेश दिया। अब कोअी अुपाय न पाकर रोती हुअी बुढिया आअी और अुसने दरवाजा खोला। नशेमे चूर सादुल्लाने बुढियाके गालोपर चार-पॉच चपतें लगाअीं और कासिमके पास पहुँचकर अुसे जूतेसे लात मारी। कासिम जब दूर जा गिरा तो सादुल्ला खाँ फातिमाको पकडनेके लिअे अुसकी ओर लपका। फातिमा दहाड़ें मार-मारकर रोने लगी। अितने ही में कासिम अपने सारे साहसको बटोरकर सादुल्ला और फातिमाके बीच आकर खड़ा हो गया।

सादुल्ला क्रोधके मारे अुन्मत्त हो रहा था। अुसने कासिमको बुरी तरह पीटना शुरू किया। किन्तु कासिमने सादुल्लाका हाथ अपनी पत्नीके शरीरपर नही पड़ने दिया। फातिमा अपने पतिके शरीरसे लिपटी रही। सादुल्लाका गर्जन पास-पड़ोसवाले घरोंके लोग सुनते रहे। लेकिन कोतवाल साहबका सामना करनेकी ताकत अुस गरीब जनतामें कहाँ? सामना करे भी तो कल अुनपर अत्याचार और हमला शुरू होगा। असलिअे सब लोग भयभीत हो चुप रहे। झोपड़ीके भीतरसे आनेवाले करुण क्रंदनकी आवाज बाहरवाले सभी लोगोंके कानोंमें आती रही। बाहर सादुल्लाका नौकर घोड़ेको सँभाले खड़ा था, अिसी बीच कोअी अज्ञात व्यक्ति जल्दीसे आया और अुस झोपड़ीके चारों तरफ घूमने लगा। सादुल्लाके नौकरने अुस आगंतुक व्यक्तिको देखा और डराते हुअे कहा—"तुम कौन हो और कहाँसे अिधर टपक पड़े हो? भीतर कौन है, मालूम है तुम्हें? कोतवाल साहब सादुल्ला खाँ है। भीतर जाओगे तो तुम्हारे प्राणोंकी खैर नही। तुरंत यहाँसे चले जाओ।" अुस अज्ञात व्यक्तिने बिना कुछ बोले सादुल्लाके नौकरके गालपर जोरसे अेक चाँटा मारा और घोड़ेको झोपड़ीके पास ले जाकर खड़ा किया। अुसपर चढ़कर वह छतपर जा पहुँचा। छतके अुड़े हुअे पत्तोंके कारण बन जानेवाली दरारसे वह अुतरा और कासिमको हटाकर फातिमाके हाथको खीचनेवाले सादुल्ला खाँके सामने वह डटकर खड़ा हो गया और गभीर वाणीमें बोला—"क्यों रे बदमाश सादुल्ला, अिस तरहके नीच काम करनेका साहस तुम्हें कैसे हुआ?" यह कहता हुआ वह सादुल्लापर टूट पडा। अपने सामने प्रत्यक्ष बादशाहको देखकर सादुल्लापर बिजली गिर पडी। अुसके सभी अंग ढीले पड़ गअे और वह जडसहित कटकर गिरनेवाले वृक्षकी भाँति जमीनपर आ रहा। अुसका मुँह बद हो गया। आँखे विवर्ण हो गअी। शरीरके भीतर दिल अभी धडक रहा था। बादशाहको बहुत अधिक क्रोध आ रहा था। वे मारे क्रोधके दाँत पीस रहे थे। अुन्होंने सादुल्लाको अेक लात मारी। अुसकी बाँहको अपने मजबूत हाथोंसे कसकर पकड़ा और अपने साथ चलनेका आदेश दिया। सादुल्ला अपनी शक्तिको बटोरकर अुठ खडा हुआ और काँपती हुअी मुद्रामें बादशाहके पीछे आकर खड़ा हो गया। बादशाह अुसे झोपड़ीसे बाहर खीच लाअे और

और अुन्होंने अेक लम्बी रस्सी अुसकी कमरसे बाँध दी तथा अुस रस्सीके दूसरे छोरको घोडेकी पिछली टाँगसे बाँध दी। घोडेपर बादशाह खुद सवार हुअे और चाबुक लेकर घोड़ेको सकेत किया। बादशाह घोडेपर सवार होकर जा रहे है और अुनके पीछे घोडेकी टाँगसे बँधा सादुल्ला तेजीसे दौडता जा रहा है। पल-भरमे घोडा आँखोंसे ओझल हो गया।

[५]

प्रात.कालका समय था। अिन्साफ-पसन्द जहाँगीर बादशाहने नियत समयसे पहले ही दरबार भरवाया। मंत्री, सामत, सेनापति, अन्य सरकारी अफसर, सिपाही अपने-अपने स्थानपर बैठे बादशाहकी आज्ञाकी प्रतीक्षामे थे। बादशाह गद्दीपर बैठे। अितनी जल्दी दरबार क्यों बुलाया गया है, कोअी नही समझ पाया। बादशाह भी प्रसन्नमुख नही है। शायद रातकी वह भयकर घटना बादशाहके मनको विकल बना रही है। अुनके चेहेरेकी आभा रक्तिम है। आँखे रोषसे भरी किसी भयंकर परिणामकी सूचना दे रही है। चक्रवर्तीकी अप्रसन्न मुखमुद्राको देख सभी शंकित अेव भय-विह्वल हो बैठे रहे। बादशाहने अेक बार सारी सभाको निहारा और सेनापतिको आदेश दिया कि वह अपराधीको अुपस्थित करे। अिस बीच बादशाहकी आज्ञासे फातिमाकी बड़ी सास आदरके साथ अन्दर आ गअी और अुचित आसनपर बिठा दी गअी थी। अिन दृश्यो व आदेशोंको देखकर सभासद आश्चर्यचकित हो अपराधीके बारेमे मनमे तरह-तरहकी बाते सोच रहे थे। अुसी समय घोडेके पीछे दौड़नेके कारण घिसटनेसे जिसके सारे शरीरसे खून चू रहा हो और बेड़ियोंसे जिसके हाथ बँधे हुअे हो अैसे अश्रुसिक्त नेत्रोंसे नतमस्तक सादुल्ला खाँको बादशाहके सम्मुख अुपस्थित किया गया। लोग चकित हो अपने मनमे प्रश्न करने लगे——"प्रति दिन सैकडो अपराधियोंको दण्ड देनेवाला सादुल्ला ही आज अपराधी है!" यह तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात है। सारा दरबार कुछ देर तक स्तम्भित हो मौन रहा। कुछ निमिष तक सभामे गभीरताका वातावरण फैला रहा। सभी सदस्य बादशाहकी तरफ अपनी दृष्टिको केन्द्रित करके अुनके आदेशकी प्रतीक्षा करने लगे। अितनेमे दिल दहलानेवाली गंभीर ध्वनिमें

जनताको संबोधितकर बादशाह बोल अुठे—"अुस कोतवाल सादुल्लाको कल रात्रिमें अेक पतिव्रताका सतीत्व लूटनेका प्रयत्न करते हुअे मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। अुसके बलात्कारसे सारा परिवार त्रस्त था। मैंने अिसे बन्दी बनाकर घोड़ेकी टाँगोंसे रस्सी बाँध दी और अिसे अपने साथ ले आया। अिसलिअे अिस अपराधीके लिअे पैरवी करनेकी जरूरत नहीं। जनताकी तकलीफोंको दूर करनेके लिअे ही मैंने दुर्गके बाहर घंटी बँधवाअी है। मेरे राज्यमें जनताके अपराधोंका पता लगाकर अुन्हें अुचित दण्ड देनेके लिअे मैंने जिस अफसरको नियुक्त किया, अुसीने अेक पतिव्रता व साध्वी नारीके साथ बलात्कार करनेका दुस्साहस किया है। अिससे बढ़कर मेरे लिअे अपमानकी बात और कोअी नहीं हो सकती। अैसे चरित्रहीन राजकर्मचारीके पदोंपर बने रहनेसे प्रजाके धन, मान और प्राणोंकी रक्षा संभव नहीं है। पतिपरायणा साध्वी स्त्रियाँ मेरे राज्यमें कैसे सुखी रह सकती हैं? मेरे राज्य-शासनके प्रति जनताका गौरवपूर्ण भाव बना रह सकना कैसे संभव है? अैसे बलात्कार करनेका साहस करनेवाले अिस सादुल्लाके लिअे मृत्युदंड ही अुचित है। लेकिन अिसने नारी जातिके प्रति जो अपराध व अन्याय किया है, अुसे बार-बार स्मरणकर रोते रहना मृत्यु-दण्डसे भी भयंकर है। अिसलिअे मैं अिसे आजीवन कारावासकी सजा देता हूँ।" जनता बादशाहके मुँह द्वारा सादुल्लाका अपराध और दण्ड सुनकर भौंचक हो चक्रवर्तीके मुँहकी ओर अेकटक देखती रही। दण्डका आदेश देकर बादशाह गद्दीपरसे अुतरकर फतिमाकी बूढ़ी सासके पास आअे और नवरत्न खचित अपने राजमुकुटको सिरसे निकालकर बूढ़ीके चरणोंपर रखकर घुटने टेककर विनम्र होकर बोले—"माँ! तुम्हारी बहूका पातिव्रत धर्म मेरे राजमुकुटसे भी महान है!"

* * *

१४.

महल और झोपड़ी

—श्री चिंता दीक्षितुलु

आपका हृदय अत्यन्त मृदु, मनोहर और भावनाअें कोमल हैं; अिसीलिअे आप बच्चोंसे अधिक स्नेह रखते हैं। बाल-मनोविज्ञानके ज्ञाता होनेके कारण

आपने शिशु-साहित्यकी रचनामें अेक परम्पराकी सृष्टि की है। अुत्तम कथा-शिल्पके साथ अुदात्त भावनाओंका प्रतिपादन करनेमें आपकी बुद्धि बड़ी तीव्र है। साधारण प्रजाके कल्याणके लिअे सन्तप्त होनेवाले अुद्विग्न हृदयके साथ करुणा अेवं सहानुभूतिपूर्वक जीवनके लक्ष्य अेवं अुद्देश्योंको भली-भाँति समझकर अुसकी गहराअियों तथा कठिनाअियोंका रसपूर्ण शैलीमें विवेचन करनेवाले आप अेक कुशल कलाकार हैं। जीवनका अधिकांश समय अध्यापन-कार्यमें व्यतीत करते हुअे भी आपने अनेक बालोपयोगी रचनाअें प्रस्तुत की हैं। आपके शिशु-पात्रोंमें—'सूरी-सीती वेंकी' को आन्ध्रवासी कभी भूल नहीं सकते। वर्तमान समाजकी शिक्षिता नारीपर आपकी लिखी हास्यरसपूर्ण "वटीरावु कथलु" आधुनिक नारी-जीवनकी अद्भुत व्याख्याअें हैं। "अेकादशी" अिनका प्रथम कहानी-संग्रह है। यह 'साहित्य-समिति'की तरफसे प्रकाशित हुअी है। "गोदावरी नव्विंदि" (गोदावरी हँस पड़ी) आपकी प्रसिद्ध कहानी है। पंडित नेहरूकी 'विश्व-अितिहासकी झलक' का आपने तेलुगु-रूपान्तर किया है। श्री दीक्षितुलुजी अपने भावोद्रेकको भगवानके चरणोंमें अर्पितकर भगवद्भक्तके रूपमें परिवर्तित होनेवाले सम्वेदनशील व्यक्ति हैं। आपका कहानी-साहित्यमें अच्छा स्थान है। आजकल आप पाठशाला-निरीक्षकके पदसे अवकाश लेकर विश्राम कर रहे हैं।

* * *

महल और झोपड़ी

अुस गलीमें अेक बहुत बड़ा महल है! अुस रास्तेसे जानेवाले लोग सिर अुठाकर महलकी ओर देखने लगते हैं तो फिर झुकानेका नाम नहीं लेते। चकित होकर ही रह जाते हैं।

वे सब अुस महलके सौन्दर्यको देखते हैं, या अिसमें बसनेवाले धन-देवताको देखते हैं, अथवा अिसमें रहनेवालोंकी कल्पनामें लीन हो जाते हैं— यह कहना कठिन है।

अुस महलके चारों ओर अिसीका आसरा लेकर और कअी मकान बने हुअे हैं। अुनमें दुतल्ले मकान भी हैं, झोपड़ियाँ और पर्णशालाअें भी हैं! अुस भवनकी बगलमें अेक रामचन्द्रजीका मन्दिर है। वह अूँची अट्टालिका गगन-मण्डलसे मन्दिरकी ओर गुस्ताखीसे देखती हुअी दिखाअी देती है। अैसा मालूम होता है कि अुस अट्टालिकाकी दृष्टिको देख संकोचवश रामचन्द्रजी अेक कोनेमें दुबककर बैठे हुअे हैं।

अुस महलका निर्माण धन-सम्पत्तिने किया। पर झोपड़ियों और पर्णशालाओं आदिका निर्माण आन और अिज्जतसे हुआ। मन्दिरका निर्माण भक्तिके परिणामस्वरूप हुआ।

अुस महलके आश्रयमे अनेक लोग है, जो सदा रुपयोकी झनझनाहटमें मग्न दिखाअी देते है। अुन रुपयोकी झनझनाहटमे अुन्हे बगलके रामचन्द्रजीके मन्दिरमे होनेवाला घण्टा-घडियालो, शख तथा तुरियोका नाद सुनाअी नही देता। बगलके कुटीरोमे रहनेवाले शुभ्र हृदयोके परिमलकी तो वे सुगन्ध भी नही ले पाते है।

अुस अट्टालिकामे घोसला बनानेके लिअे अेक भी गोरैया नही आती। अुस महलकी छतपर आराम करनेके लिअे अेक कबूतर तक नही फटकता। गाय भी अुस भवनके सामने नही ठहरती।

किन्तु अिधर अुन झोपडियोमें कुछ मानव निवास कर रहे है। अुन झोपडियोके छज्जोमे कुछ गोरैये अपनी नीड बनाअे हुअे है। अुन झोपड़ियोके पार्श्वमे अुगे हुअे पेडोपर तोते वार्तालाप करते है। नीचे मेमने शौकसे खेलते है।

वहाँपर मनुष्य, पशु-पक्षी सभी बिना भेद-भावके निवास कर रहे है।

मन्दिरमे जबसे श्री रामचन्द्रकी मूर्ति प्रतिष्ठित हुअी है, तबसे प्रति दिन रामचन्द्रकी चरण-सेवा करने अुन झोपड़ियोके मनुष्य अुस मन्दिरमे अिकट्ठे होते है।

रामचन्द्रजीके दर्शनके माध्यमसे धनदेवी लक्ष्मीकी अुपासना करने और वरदान-स्वरूप लक्ष्मीजीकी प्रसन्नता प्राप्त करनेके हेतु महलके लोग फूल-फल, वस्त्र अित्यादि रिश्वते भगवानको भेट करने प्रति दिन प्रातःकाल वहांपर पहुँच जाते है।

मन्दिरके आलोको कबूतरोने अपने नीड बनाअे। मन्दिरके सामने स्थित धानके बालोका गोरैये स्वेच्छापूर्वक अुपभोग कर रहे है। मन्दिरके गोपुरोपर तोते विश्राम करने बैठ जाते है और आत्मबोध पाते है। अुस रास्तेसे जानेवाली गाअे मन्दिरके सामने रुककर पलकोसे नमस्कार कर आगे बढ़ती है। मन्दिरकी छत्रछायामे गोरैया सुख-शान्तिका असीम अनुभव करती है।

रामचन्द्रजीके स्वरका अनुकरणकर असमर्थ पानेवाले तोतोको देख वे मुस्कुरा अुठते है। अुनके वसन्तोत्सवके अवसरपर तूर्यनादोके साथ अपने स्वर मिलाकर कोयल अुस अुत्सवमे अपूर्व शोभाका वातावरण पैदा करती है।

भवनके लोग बाजारसे देवताकी अर्चनाके लिअे जो फूल खरीदकर लाते है, अुन्हें अपनी शिखाअोमे धारण करते है, झोपडियोके आगे खिले हुअे फूल रामचन्द्रजीकी देहका सम्पर्क प्राप्तकर पवित्र हो जाते है और फिर झोपड़ियोंके लोगोंकी चोटियोमे गूँथे जाते है।

अिसी भाँति समय वीतता जा रहा है। कुछ दिनोंके बाद सक्रान्ति-पर्व आया। लोग प्रति दिन रामचन्द्रजीके अुत्सव मनाने लगे। अुन अुत्सवोंको देख पशु-पक्षी, मनुष्य–– सभी वर्गोके लोग सन्तोष पा रहे थे। सक्रान्ति-पर्वके दिन सभी झोपडियाँ सजाअी गअी। झोपडियोंके सामने तरह-तरहके चौक पूरे गअे, जो अुस स्थानकी शोभा बढानेमे सहायक सिद्ध हुअे। महल भी अलंकृत हुआ। लेकिन मन्दिरकी तुलनामे महलका अलकार अस्वाभाविक व नकली जँचता था।

मन्दिर दिव्य प्रकाशसे दमक अुठा। रामचन्द्रजीका हृदय भक्तोंकी प्रार्थनाअोंके परिणामस्वरूप महा समुद्रकी अुत्ताल तरगोकी तरह आनन्दसे आन्दोलित हो अुठा। अुनके फैलाअे हुअे हाथोमे असख्य लोग जाकर दिव्य-सुखका अनुभव कर सकते है। अुस भगवानके आलिगनमें समस्त लोक सिमट सकते है। अुस आलिगनकी परिधि अनन्त है। कल्पनातीत आनन्द अुस आलिगनमे समाया हुआ है और वह आनन्द नया जीवन प्रदान कर सकता है। वैसा भव्य आलिगन अुस दिन रामचन्द्रजीकी अपार कृपाके कारण ही प्राप्त हुआ है।

झोपड़ियोंके लोग अुस आलिगनमे फँस गअे। तोते, गाय अित्यादि सभी भक्त आलिगनका भोज पाकर सुखका अनुभव कर रहे हैं। लेकिन महलके लोग रामचन्द्रके आलिगनके सुखका तनिक भी अनुभव नही कर पाअे। रामचन्द्रके अलंकार मात्रको देख वे मुग्ध हुअे।

मन्दिरके सामने भी संक्रान्तिके निमित्त चौक पूरा गया था। अिस पूरे हुअे चौकमे मन्दिरके सामने विशाल रथ, घण्टियोसे सजे रथ तथा झंडियोंसे सजाअे हुअे रथ सभी कलाओसे प्रकाशमान है। रथ फूलोसे सजाअे जानेके कारण अमित शोभाको प्राप्त हो रहा है। हल्दी और कुंकुम अुन रथोंकी पावनताका परिचय दे रहे है। अैसा लगता है मानो अुसपर रामचन्द्रजी

आसन लगाकर बैठे हुअे हों। अुस अूँची अट्टालिकाके सामने भी चौकापूरन हैं। रथ, सरोवर, कछुअे, साँप, कुम्हडे अित्यादि तरह-तरहके रंगीले चौके पूरे हुअे हैं। अुन पूरे हुअे चौकोंपर फूल हैं। वे सब अैसे दिखाअी दे रहे हैं, मानो अूंघ रहे हो।

अत्यन्त वैभवके साथ अलंकृत हुअे अपने अलंकारको देख बगलकी झोंपड़ियोंकी सजावटको भी अुन्ही आँखोंसे देखकर महल हँस पड़ा। झोपड़ियाँ भी अपनी सजावटको देख अूंचे महलके अलंकारको न देख सकनेकी हालतमें मन्दिरकी तरफ झुककर प्रतिकार-स्वरूप हँस पड़ीं। अिसपर क्रोधित हो महलने पूछा—"मुझे देख तुम क्यों हँस रही हो?"

झोपड़ियोंने जवाब दिया—"तुम्हारी हँसीके प्रतिकारमें हम हँस पड़ी हैं।"

महलने छाती फैलाकर गर्वसे कहा—"मेरी मंजिलें विशाल हैं। अुनमें सुन्दर कलासे पूर्ण स्तम्भ हैं। महलकी दीवारोंपरके चित्र-विभिन्न रंगोंसे पुलकित होते दिखाअी पड़ते हैं। महलके शिखरपरके गोपुर, लता अित्यादि अलंकारोंसे किरीट-सी शोभा पा रहे हैं। समस्त सौन्दर्य मुझमें समाया हुआ है। अिन सबसे अधिक मेरी अुंचाअी है जिसे तुम लोग आँख अुठाकर भी देख नहीं पाओगी। अब मेरी हँसीका कारण तुम लोगोंकी समझमें आ गया?"

झोपड़ियोंने जवाब दिया—"ओह, तुम अपनी अुस अुन्नतिको देखकर शायद हँस रहे हो। किन्तु अुन मंजिलोंका मिलान हमारे साहसके कारण ही हो सका है। कलासे शोभित वे स्तम्भ हमारे कौशलको ही प्रकट कर रहे हैं। प्राचीरोंपरके वे चित्र हमारी सहनशीलताके अुदाहरण हैं। तुम्हारे मुकुटको हमने ही प्रदान किया। तुम्हारी अुन्नति हमारे द्वारा ही हुअी है।"

"तुम्हारे साहस, कौशल व सहनशीलताको मैंने अुचित मूल्य देकर खरीदा है। अिसलिअे अब अुसकी बड़ाअी तुम्हें नहीं करनी चाहिअे।"

"हमारे कौशल, तुच्छ धनसे नहीं तुल सकते!"

अिस वार्तालापको सुन मन्दिर हँस पड़ा। अुस हँसीको सुन झोपड़ियोंने शर्मके मारे सिर झुकाअे।

अुस हँसीको सुन महल अपार आनन्दित हुआ।

बहुत समय बीत गया।

झोपड़ियोंके स्थानपर अेक जंगल अुगा। अुस वनमें फल, फूल, घास और पौधे फैल गअे। सदाबहार फूलोंके पेड़ोंपर अब तितलियाँ और भ्रमर मँडराते और खेलते रहते हैं। फलके वृक्षोंपर अपने नीड़ बनाकर तरह-तरहके पक्षी अुनके फल खाकर गान करते रहते हैं। घास-फूसमें छोटे-छोटे कीड़े-पक्षी निवास कर रहे हैं। वह समस्त जंगल सदा कलरव व कोलाहल द्वारा शोभायमान रहता है।

मन्दिरकी जगह अेक पीपलका पेड़ अुग आया है। वह वृक्ष आस-पासके समस्त प्राणियोंको ठण्डी छाया प्रदान करता रहता है। अुस पेड़के तनेपर, शाखाओं और पत्तोंपर पक्षी तथा अन्य प्राणी रहते हैं। अुस वृक्षके पत्तोंकी ध्वनि समस्त प्राणियोंको थपकियाँ-सी देती रहती है।

बड़े महलके स्थानपर अब पत्थरके टीले हैं। अुन टीलोंके चारों तरफ कँटीली झाड़ियाँ अुगी हैं। अुनमें साँपोंकी बाँबियाँ हैं। रात्रिके समय अुन टीलोंपर अुल्लू बोलते दिखाअी देते हैं।

पीपलका पेड़ अुन टीलोंपर भी अपने फल गिराकर पेड़ अुगाना चाहता है, लेकिन वे जानवर अुन अंकुरोंको अुगने नहीं देते।

* * *

१५.

शुभ कामनाओं

—श्री श्रीवात्सव

'श्रीवात्सव' अिस अुपनामसे लिखनेवाले आप प्रसिद्ध लेखक हैं। अुत्तम आलोचकके रूपमें सारा आन्ध्र आपको जानता और मानता है।

आप अेक ही साथ कवि, कहानीकार, नाटककार और समालोचक हैं। अनेक भारतीय भाषाओंके जानकार होनेके कारण आपकी रचनाओंमें विशाल दृष्टिकोण और पूर्णताका भाव आ गया है। आपके सैकड़ों अेकांकी नाटक प्रसारित हुअे हैं। समय-समयपर पत्र-पत्रिकाओंमें प्रकाशित होनेवाली आपकी कहानियोंमें जीवनके ध्येयोंका वैविध्य विभिन्न रंगोंमें अभिव्यक्त होता है। आपकी अन्य रचनाओंमें "तीरनिकोरिकलु" अेक अुत्तम नाटक है। "रतनाल नव्यु", "पेल्लाडे बोम्म", "बुद्ध भगवानुडु" बालकोपयोगी रचनाअें हैं। "सैरंध्री" और "बंगारु पिच्चुकल" आपके अुपन्यास हैं।

* * *

शुभ कामनाअें

अुस दीपावलीके अवसरपर मुझे अपनी ससुराल जाना था। सदाकी भाँति बुलावा आया। पहले तो मैं अपने प्रान्तमें था। अिसलिअे अुनके बुलानेमें तथा मेरे जानेमें कोअी विशेषता न थी। लेकिन अपने प्रान्तको छोड़कर सुदूर प्रदेशमें नौकरी करना और अपना परिवार बसाना वह भी पहली बार। दिल्ली जैसे महानगरमें मकान मिलना बहुत मुश्किल है। अुसमें भी शरणार्थियोंकी संख्या बढ़ जानेके बाद तो थोड़ी-सी जगह भी मिले, वह राजभवन-सी हो जाती। मैंने भी बहुत प्रयत्न किये, पर घर नहीं मिला। होटलमें चार मास बितानेके बाद मुझे अेक घर मिल ही गया। दिल्लीमें घर मिलना असम्भव ही है। कअी वर्षोंसे प्रतीक्षा करनेपर ही सरकारी मकान मिलते हैं। प्रति वर्ष सरकारी अफसरोंके लिअे हजारों घर बनते जा रहे हैं तो भी यह कठिन समस्या सुलझनेका नाम ही नहीं लेती। चाहे अपने घरके नामपर जगह न मिल पाअे, पर दूसरोंके किराअेके घरोंको अपना बसेरा बना सकते हैं। बहुतसे दिल्लीमें रहनेवाले भाग्यशाली लोग यही करते हैं। जिन्हें गृहयोग प्राप्त है, वे अपने घरके थोड़ेसे हिस्सेको किराअेपर देकर गृहदान-पुण्यके भागी हो रहे हैं; रुपये लेकर भी, लेकिन अैसी सुविधासे पूर्ण घर देनेवाले कौन हैं? अिसलिअे अुन दिनोंमें (शायद वह आज भी सत्य हो।)

गृहदान, गोदान, भूदान अित्यादि समस्त प्रकारके पुण्योंसे वह पुण्य बडा बन गया था। असलमें बात यह है कि मेरे विषयमें वह पुण्य मणि अय्यरको प्राप्त हुआ।

अुस क्षण तक मैं अुनको नहीं जानता था और वे भी मुझे नहीं जानते थे। राजधानीके अुस नगरमें जीविकाके लिअे अपने गाँवको छोड़कर आअे हुअे अनन्त प्रवासियोंमें अेक वे हैं और मैं भी अेक हूँ। यही हम दोनोंका नाता है। लेकिन मणि दिल्लीका पुराना निवासी है और मैं नया। यद्यपि यहाँ रहते-रहते दस महीने बीत गअे थे, फिर भी मैं नअे लोगोंमें ही गिना जाता था। दस सालोंसे नौकरी करते हुअे घर न पा सकनेवाले मेरे जैसे यहाँ अनेक हैं।

सौभाग्यसे मणिसे मेरी मुलाकात हुअी। असलिअे हमारे पुरखे कहा करते थे कि सबके लिअे योग-बल चाहिअे। मैं होटलमें भोजन समाप्तकर बरामदेमें टहल रहा था। अप्पू दिखाअी पड़े। अुन्होंने मुझे वहीं आध घण्टे तक रोककर अेक लम्बासा लेक्चर दे डाला।

अप्पू असाधारण व्यक्ति हैं। किसी पत्रिका-कार्यालयमें काम करते हैं। लेकिन वह चलते-फिरते विश्वकोश (ज्ञानकोश) हैं। अैसा कोअी विषय नहीं दीखता, जिसपर अप्पूका अधिकाधिक ज्ञान न हो। प्रधान-मन्त्रीकी यात्राकी विशेषताओंसे लेकर पड़ोसी वृद्धकी तरुण पत्नी तक अुनके भाषणके विषय हैं। अेक बार प्रसंगवश अुन्होंने कहा कि वे चार महीनेकी छुट्टीपर जा रहे हैं। मैंने तुरन्त प्रार्थना की––"तो कम-से-कम यह जान लो कि वे अपना घर किसे देनेवाले हैं?" अप्पूने कहा––"अुनके पास घर भी तो हो देनेके लिअे!"

मैंने पुनः अपने आवेदनका समर्थन किया––"हाँ, आधा भाग ही सही।'

अप्पूने कहा––"वे खाली थोड़े ही कर रहे हैं? सामान आदि वहीं रखकर जा रहे हैं।"

मैंने पुनः निवेदन किया––"वे जैसे भी जाअें, अुनसे परिचय तो कराअिअे!"

दूसरे दिन सबेरे निश्चित कार्यक्रमके अनुसार अप्पू और मैं अय्या स्वामीके घर पहुँचे। वे मेरे परिचित भी है। कअी बार हमने पुस्तक और सिनेमाओंपर वाद-विवाद भी किअे थे। मेरे ज्योतिष-शास्त्र सम्बन्धी ज्ञानका भी अुन्हें परिचय है। मैंने कभी अुनकी जन्म-कुण्डली देखकर अुन्हें राशि-फल भी बताया था। मेरी ज्योतिषकी सच्चाअीपर प्रसन्न होकर अुस दिन मुझे नाश्ता आदि भी कराया था।

अुसी दिन अुस मकानके मालिक मणि अय्यरजीसे मेरा परिचय कराया गया। अन्तमें मेरी दरख्वास्तकी बात आअी तो अुन दोनोंने मुझसे सैकड़ो यक्ष-प्रश्न किअे, जिनका अुत्तर मुझे देना पडा। अुन प्रश्नोंकी परीक्षामें अुत्तीर्ण होनेके अुपरान्त अुनकी समस्त शर्तोंको भी मैंने मान लिया। फिलहाल अय्या स्वामी चार महीनेके लिअे ही बाहर जा रहे है। बादको सम्भवत: वापस लौट भी सकते है। अुस समय मुझे घर खाली करके कही जाना पड़ेगा। अुसने अुस अेक रूमके लिअे चालीस रुपये किरायेके माँगे हैं वे तो देने ही होंगे। अय्या स्वामीका असबाब तब तक अुस छोटेसे स्टोर-रूममे पडा रहेगा। अुसकी रक्षा करनेका भार तो है ही, अिसके अलावा जब वे चाहेंगे, अुस समय अपने निजी खर्चपर अुस सामानको सुरक्षित अुनके पास भेजना होगा। सपत्नीक न रहूँ तो अुस घरमे मुझे प्रवेश नही मिलेगा। पत्नीके सिवाय और कोअी मेरे साथ नही रह सकता। स्नानागारमें ही कोयलेके चूल्हेपर खाना बनाना होगा। अलग रसोअीघर नही मिलेगा। मुझे कही आश्रय नही मिला था, अिसलिअे वही घर मुझे अिन्द्र-भवन-सा लगने लगा। अुनकी सभी शर्तोंको मैंने सहर्ष मान लिया।

अय्या स्वामीने वहाँसे जाते हुअे मणि अय्यरको मुझे सौंपते हुअे कहा—"ये बडे साधु पुरुष है। अैसे-वैसे आन्ध्रवासी नही, तमिल भी खूब जानते है। मणि अय्यर मुझे अपने कमरेमें ले गअे। अुन्होंने मुझे काफी पीनेको दी। अिसी समय अय्या स्वामीने व्यंग करते हुअे कहा—"मणि अय्यरकी जन्म-कुण्डली देखकर बताओ, अुन्हे सन्तान-योग है कि नही?" तब मुझे मालूम हुआ कि मणिके सन्तान नही है। वे अधेड़ अुम्रके हैं। चालीस-से कम न होंगे। अुनकी पत्नी नव-यौवना-सी दिखाअी देती है। अुसकी

अुम्र ज्यादा-से-ज्यादा २५ वर्षकी होगी। सफेद गोल मुख-मण्डल। चमकते हुअे विस्फारित नेत्र, अुसके नेत्रोंकी भाँति कानोंके दमकते हुअे मणिमय कुण्डल देखनेवालोंको चकित करते हैं। प्रथम दृष्टिमें ही मैंने जान लिया कि वह अक्लमन्द व स्वभावकी तेज है।

अुसके साथ तुलना करके देखें तो मणि अय्यर तोतेकी नाकमें कुन्दरू फल जैसे लगते हैं। पिचके गाल, चोटी, मैली दाढ़ी, झुर्रीदार ललाट, अुनकी लम्बी व पतली नाक देखनेपर झट कहा जा सकता है कि वह गणितमें प्रवीण हैं। अिसीलिअे मणि अय्यर सेक्रेटरिअेटमें बड़े अकाअुण्टेटका पद सँभाल रहे हैं। अुनके और भी अधिक अुन्नति करनेकी सम्भावना है। अुनके कुतूहलको देख मुझे आश्चर्य हुआ। अुनकी जन्म-कुण्डली खोलकर मैंने अुनकी राशि-कुण्डलीको ध्यानसे देखा। पर कहीं भी सन्तान-योगके लक्षण नही दिखाअी दिअे। मैंने अुनके अयनांशका परिशीलन कर देखा, और अुनके जीवनकी समस्त विशेषताओको मैंने अुन्हें बता दिया। सभी बाते अक्षरशः सत्य मिल जानेके कारण वे बहुत प्रसन्न हुअे। अुसी समय मालूम हुआ कि मणि अय्यरका विवाह भी देरीसे हुआ है। अुनकी पत्नी रंगूनसे आअे हुअे अेक रेल्वे-अफसरकी पुत्री हैं। बहुत दिनों तक जब अुस लड़कीकी शादी नही हुअी तो अन्तमे अुसे अिनके गले मढ़ दिया गया।......लेकिन अितने समयमे अविवाहित रहनेके कुलक्षण अुसमें दिखाअी नही देते थे। मैंने अुसकी जन्म-कुण्डलीको मँगाकर देखा। अुसमें सन्तान-प्राप्तिके योगकी मेरी बाते सुनकर पति-पत्नी दोनों ही बहुत प्रसन्न हुअे। किवाड़की आडमें खडी मीनाक्षी मेरी ये सभी बाते सुन रही थी। अुस जन्म-कुण्डलीके प्रभावके कारण मुझे घर मिल गया। तुरन्त ही अपनी पत्नीको बुलाकर मैंने परिवार बसाया। अिस प्रकार लगभग अेक वर्ष बीत गया। मणि और मेरे बीच अच्छी दोस्ती हुअी। दोनों औरतें भी अेक ही घरकी बहुओंकी भाँति मिल-जुलकर रहने लगी। जब कभी सिनेमा या बाजार जाना हो, दोनों दम्पति मिलकर जाते। आपसमें गाढ़ी मैत्री पैदा हो गअी और अुसी तरह आनन्दपूर्वक दिन गुजरते गअे।

अिसी बीच दीपमालिकाका पर्व निकट आया। मेरी श्रीमतीका गर्भधारण होने व ससुरालसे बुलावा आनेसे अुसे अुसके मायके भेज दिया।

मैंने छुट्टीका आवेदन-पत्र दिया। लेकिन अुसे अधिकारीवर्गने यह कहकर टाल दिया कि मेरे स्थानपर दूसरेके आनेके बाद ही मेरी छुट्टी मंजूर हो सकती है। अिस बीच मेरे अेक साथी बीमार पड गअे। अुनका काम भी मुझे ही सँभालना पड़ा। परिणामतः दीपावलीके शुभ-अवसरपर ससुराल जानेकी अपनी यात्रा मुझे स्थगित करनी पडी।

दो महीनोंसे मैं होटलमें ही भोजन करता था। किसी-किसी दिन मणि अय्यर नाश्ता और काफी दिया करते थे। अुस समय हममें वार्तालाप होने लगता था, वे पूछते--"संतान-योग कब सम्पन्न होगा?" मैं जवाब देता--"जल्दी न कीजिअे। संतान-योग है ही।" वे बार-बार वही प्रश्न पूछते। मीनाक्षी पासके कमरेमेंसे ध्यानपूर्वक हमारा वार्तालाप सुनती मुस्कुराती दिखायी देती।

दीपावली सारे भारतका पर्व है--लेकिन तमिलवासियोंका तो यह बहुत बड़ा पर्व है। मणि अय्यरके लिअे तो पर्व-त्यौहारका दिन भी साधारण दिन जैसा ही है। क्योकि दफ्तरके कामसे अुन्हे छुट्टी नही मिलती। दफ्तर ही अनकी दुनिया है—सब कुछ है। दीपावली-पर्वके अवसरपर वे कभी छुट्टी लेकर ससुराल नही गअे। अुनके ससुर कलकत्तेमें रेल्वे विभागके अकाअुण्ट्स् डिपार्टमेंटमे काम करते हैं। मीनाक्षी अुनकी अेकमात्र पुत्री नही है। वह अुनकी पहली पत्नीकी सन्तान है। पहली पत्नीके मर जानेके बाद अुन्होने दूसरा विवाह भी किया। दूसरी पत्नीसे कअी बच्चे हुअे। मीनाक्षीके पिता प्रति वर्ष अुसे अेक रेशमी साड़ी भेजते है। किन्तु मीनाक्षीपर पिताका स्नेह अधिक न होनेके कारण वह दुखी दिखाअी देती है।

मीनाक्षीका विचार है कि अिस विशाल संसारमे अुसका अपना कोअी नही है। पर मणि अय्यर अुसे किसी बातकी कमी नही होने देते। खाना-कपड़ा, आभूषण सब देते है। घरके खर्चके पैसोसे लेकर सभी अन्य बातोंका हिसाब रखना अुस परिवारका नियम है। अिसलिअे यह मीनाक्षीके लिअे खटकनेवाली बात न थी। फिर भी वह सदा अपने जीवनमें किसी अभावका अनुभव करती दिखाअी देती है। अुसका दाम्पत्य-जीवन भी सुखमय नहीं

दिखाअी देता है। मीनाक्षी अपनी सारी स्थिति मेरी पत्नीसे कहा करती थी। मै अुसपर अितना ध्यान नही देता था। विवाह हुअे आठ साल बीत गअे, अभी तक संतान नही हुअी है। अिसलिअे वह कहा करती कि आठ सालके भीतर सतान नही हुअी तो क्या फिर बुढापेमे होगी। अिसके अलावा कभी-कभी मीनाक्षी हिस्टीरियाका शिकार भी हो जाती थी। हमारे परिवारके रहते समय भी अुसे यह दौरा तीन बार आया था। बादको मुझे मालूम हुआ कि अिसी बीमारीके कारण अुन लोगोने अपने घरके आधे हिस्सेको किराअेपर दिया है।

मेरी श्रीमतीके रहते समय मैने कभी मीनाक्षीकी ओर ध्यानपूर्वक नही देखा था। मेरी श्रीमतीके मायके जानेके बाद भी मैने अिस ओर कोअी विशेष ध्यान नही दिया। सवेरे जाता तो रातके दस बजे घर लौटता और किवाड बन्दकर सो जाता। कभी-कभी नाश्तेके समय मणि अय्यर बुलाते तो थोडी देर गपशप होती। अुनके लिअे दीपावली-पर्व और दूसरे लोगोकी अपेक्षा अेक दिन पहले ही शुरू होता है। अुस दिन वे अभ्यंगस्नान आदि करके तर्पण करते है। मुझसे पूछा तो मैने कह दिया कि हम अमावस्याके दिन तर्पण नही करते। अिसलिअे अुन्होने चतुर्दशीके दिन ही मुझे भोजनके लिअे आमत्रित किया। मैने भी तर्पणके दिन अन्य ब्राह्मणोंके साथ भोजन करना अच्छा नही समझा। मीनाक्षीने नौकरकी मददसे जो पानी गरम किया गया था, अुससे मीनाक्षीने अभ्यंगस्नान किया।

मीनाक्षीने अुस दिन अपने पिता द्वारा भेजी हुअी साडी पहन रखी थी। बडी लबी जरीके किनारेसे चमकनेवाली वह कोयम्बतूरी साडी मीनाक्षीके शरीरपर सुन्दर लग रही थी। मीनाक्षी सहज सुन्दरी है। पर अुसके सौदर्यका निरीक्षण कोअी नही करता। अुसका पति हमेशा हिसाब करनेमें ही समय विताता है। दफ्तरके कार्यकी अपेक्षा घरपर भी गाड़ीभर फाअिल्स आती है। अतः अुसके पतिको फाअिलोंकी ढेरीमें मीनाक्षीके सौदर्यको निहारनेका समय कहाँ? अिसलिअे मीनाक्षी भी अपनेको सुन्दर ढगसे अलंकृत करनेका प्रयत्न नही करती। साफ-सुथरे बाल सँवारना, पाअुडर लगाकर टीका लगाना, यह सब अुसे मालूम ही नही। अिसलिअे अुस दिन

रेशमी साडीसे अलंकृत हो जब वह बाहर आओी, तब अैसी दिखाओी दे रही थी, मानो मीनाक्षी अभी-अभी यौवनको पूर्णावस्थाकी देहरीपर ही है। वह अड़ोस-पड़ोसके तमिल भाअियोके घर हो आओी। मै भी सारे शहरमें चक्कर लगाकर चला आया। दूसरे दिन मणि अय्यरने मुझे अपने घरमें भोजनके लिअे निमंत्रण दिया। अुस दिन छोकाथात, चक्कर पोंगल, खीर, बडे आदि मैने जमकर खाअे। शामको हलवा-दूध और केलेसे मेरा स्वागत हुआ।

मैने मना किया और वहाँसे चला गया। मणि अय्यर आफिसके कार्यके सिवा दिल्लीमे ही अेक व्यापारीके घरमे हिसाब-किताब देखा करते हैं। कहा जाता है कि अिनकम टैक्सकी बचतके जितने अुपाय मणि अय्यर जानते हैं, अुतने और कोअी नही जानता। अिसीलिअे वे मणि अय्यरको अपने घर ले जाकर अुन्हें मुँहमाँगा पारिश्रमिक देकर अुनसे काम लेते है। अुस दिनकी शामको कअी पेटियोमे अन्य मिठाअियोंके साथ बत्रओका हलवा भी अुन्ही लोगोने भेजा था। अिसके अतिरिक्त अुन लोगोंने अपने घरपर मणि अय्यर और अुनकी पत्नीका भी स्वागत किया। लेकिन दीपावली पर्वके अवसरपर सुमंगली दूसरोके घरमे कैसे भोजन करने जाती। अिसलिअे वह नही गअी। अुसने अपने घरके चारो तरफ दीवारों व खिडकियोंपर दर्जनों दीप रखे। अुनमे बत्तियाँ रखकर तेल डालकर अुन्हे प्रज्वलित किया।

दीपावलीकी शोभाको देखनेके लिअे मै खास मुहल्लोमे हो आया। जब मैं घर वापस लौट रहा था, तब दस बज गअे थे। मीनाक्षी सामने दीवारपरके दीपोमे तेल डाल रही थी। मैंने पूछा—"क्यो जी, मणि अय्यर अभी तक घर नही लौटे?" मीनाक्षीने अुसी प्रकार दीपकोको सजाते हुअे कहा—"जी नही, वे अभी नही आअेगे। मालिकोंके यहाँकी पूजा व भोजनके समाप्त होते-होते आधी रात बीत जाअेगी।"

मैंने नौकरको पुकारा तो मीनाक्षीने जवाब दिया कि वह सिनेमा देखने गया है। मै अपने कमरेमे जाकर किवाड बन्द करने लगा। अितनेमे मीनाक्षीकी आवाज सुनाअी पडी—"नाश्ता आपके कमरेमें लाअूँ या बरामदेमें ही बैठकर नाश्ता करेंगे?" मैने जवाब दिया—"वैसे तो मुझे भूख नही है, तो भी कमरेमे क्यो, बरामदेमे ही बैठकर नाश्ता करूँगा।"

पूजामेसे आअे हुअे फल,हलवा अित्यादि परोसकर अुसने मुझे आवाज दी। कपड़े बदलकर मैं पीढ़ेपर बैठ गया। घरमें और कोअी न था। घरमे हम ही दोनोके रहनेके कारण मेरा शरीर पुलकित हो अुठा। मन-ही-मनमे अेक प्रकारके भयका अनुभव-सा कर रहा था। अुस नारीको अकेली देख मेरे मनमे वैसे कोअी विकार नही पैदा हुआ था। दीपकोमेसे अधिकाश बुझ गअे थे। मैंने कहा—"अब रहने दीजिअे, फिरसे जलानेकी क्या जरूरत है। अभी तो आधी रात होनेको है।"

बुझे हुअे दीपकोमे तेल डालते हुअे मीनाक्षीने कहा—"वर्षमें अेक ही बार दीपावली आती है। कम-से-कम आजकी रातभर तो दीपक पूरे जलने ही चाहिअे।" आसपास सभी घरोंमे यही अेक अैसा घर था, जो दीप-मालिकासे शोभायमान था। अुन दीपकों व केलेके वृक्षोके बीच मीनाक्षी लक्ष्मी जैसी दिखाअी दे रही है। आज वह नीली रेशमी साड़ी पहने हुअे है। मीनाक्षीको बरामदेमे अकेली रहते देख मैंने यह अुचित न समझा कि किवाड़ बन्दकर अपने कमरेके अन्दर पडा रहूँ। अिसलिअे मै बरामदेमें खड़ा रहा। मीनाक्षीने मेरे पास आकर पूछा—"आप भी पटाके जलाअिअे न?" अिसपर मैने अुत्तर दिया कि "पटाकोसे मुझे सिरदर्द होता है। अिन्हीसे बचनेके लिअे मै अिधर-अुधर घूमकर आया। लेकिन अुनकी ध्वनियाँ अभीतक कम नही हुअी।" मीनाक्षीने मेरे पास पटाके, अॅटम बम आदि लाकर रख दिअे।

मैंने कहा—"अिन्हें आप ही दगाअिअे।"

मुस्कुराते हुअे मीनाक्षीने कहा—"मुझे डर लगता है।"

मैंने कुछ महताबकी तीलियोको जलाया और पटाकोको जलाना शुरू किया। महताबकी तीलियोसे होनेवाले प्रकाशमे मीनाक्षीका मुख-मण्डल दमकने लगा। अेक-अेक फुलझड़ीकी काँतिमे अुसके मुखमण्डलपर नअी-नअी मुस्कुराहट छूटती जा रही थी। अुस समय मीनाक्षीकी कुदन-सी दतपंक्ति अैसी दमकती थी, मानो तारोंके धुँधले प्रकाशमे बिजली कौध रही हो। अुस सुकुमार व कोमल हृदयके लिअे वह अेक अनिर्वचनीय आनंद था। अुन महताब व पटाखोके बीचमे मैं अपनेको अुस रात अेक हीरो (नायक) जैसा अनुभव कर रहा था। अिसीलिअे मीनाक्षीने बाकी सब सामग्री मेरे सामने रख दी।

मैंने हंसी-मजाकमें कहा—"ये सब पटाके आपके पतिदेव जलाअेंगे। अुन्हें रहने दीजिअे।" मीनाक्षीने आश्चर्यचकित मुद्राके साथ कहा—"ओह, वे तो मुझसे भी कायर हैं।" मैंने कहा—"तो फिर ये पटाके खरीदे ही क्यों गअे।" मीनाक्षीने जवाब दिया—"संभवतः मेरे लिअे ही खरीदे गअे होंगे।"

"तो रखिअे, मैं अिन्हें अुन्हीके सामने जलाअूंगा।" यह कहकर मैंने मीनाक्षीको अुसके कमरेमें भेज दिया। अब मैं आँगनमें अकेला खड़ा शून्यकी ओर देखते हुअे कल्पना-जगतमे विहार करने लगा। मैं सोचने लगा कि अिस समय मेरी धर्मपत्नी अपने मायकेमे दीप सँजोअे महताब और पटाके छोडती होगी। खूब आनंद मनाती होगी वह और मैं यहाँ अकेला....! आज घर-घरमे दीवाली है। मेरे घरमें अँधेरा है। मैं मनमें अिस प्रकार सोच ही रहा था कि मुझे मीनाक्षीकी चिल्लाहट सुनाअी पड़ी। मैं घरके भीतर दौड़ पडा। घरके पिछवाडेमे मीनाक्षी आसमानको सिरपर अुठाअे चिल्ला रही थी। ध्यानसे देखा, तो मालूम हुआ कि अुसका आँचल जल रहा है। मैंने तुरन्त अुसे दोनों हाथोसे मलकर बुझा दिया। अिसी बीच वह बेहोश हो गअी। मुझे स्मरण आया कि वह अक्सर होनेवाली हिस्टीरियाकी फिट है। मैंने अुसके मुँहपर पानी छिड़का और अुसे दोनो हाथोसे अुठाकर बिस्तरपर लिटा दिया। वास्तवमे वह फिट नही थी। साड़ीके जलनेसे घबराकर वह बेहोश हो गअी थी। मैंने अुसे चूल्हेपर धरा हुआ थोडा गरम दूध लाकर दे दिया। अुसने थोड़ी देर बाद आँखे खोली और दूध पिया। मैंने मीनाक्षीसे पूछा कि टेलीफोन करके तुम्हारे पतिको क्यो न सूचित कर दिया जाअे? मीनाक्षीने याचना भरे शब्दोमे कहा—"वे आकर क्या करेगे? आपके जानेसे मैं और भी भयभीत हो जाअूंगी।" संभवतः फिट भी आ जाअे, अिसलिअे मैं अुसकी शुश्रूषाके हेतु वही रह गया।

आँचल तो जला ही था, पर शरीर कहाँ-कहाँ जल गया है, यह मैंने नही देखा था। देखनेपर मालूम हुआ कि कुहनीपर और वक्षस्थलपर छाले पड़ गअे हैं। मैंने तुरन्त नारियलका तेल और चूनेके पानीका मिश्रण-सा बनाया। अुससे कहा कि जलेपर अिसे लगाअिअे। अुसने कहा कि मैं अूपर हाथ नहीं अुठा पा रही हूँ। अिसपर मैंने बगलकी पड़ोसिनको बुलानेकी बात कही। लेकिन मीनाक्षीने यह कहकर टाल दिया कि आधी रातके समय वे कैसे आअेंगी?

अेक डाक्टरकी भाँति घावकी पट्टी खोलनेकी ही तरह मैने अुस महिला-की चोलीकी गाँठ खोल दी। और अुन छालोंपर मैने वही मिश्रण लगा दिया। मेरे हाथोंका स्पर्श जब अुसके अंगोसे हुआ तो मेरे शरीरमे बिजली-सी दौडने लगी। मुझमे अेक नअी चेतना पैदा हुअी। अुसने अपने दोनो हाथोंको अूपर अुठाकर मेरे मुँहका स्पर्श करते हुअे मुझे अपने और भी समीप खीच लिया। अुसके अधर मेरे कपोलोंसे स्पर्श करने लगे। मै झुक गया। अुसके शरीरमे सबसे सुदर वस्तु अुसके चमकनेवाले नेत्र थे। कैसी चालाकी प्रति-बिबित हो रही थी! अकस्मात अुन नयनोंसे मेरे अधर स्पर्श करने लगे। अुसने मुझे और भी निकट खीच लिया। वक्षस्थलपरकी नीली रेशमी साड़ी अपने आप खिसक गअी।

मुझे अैसा लगने लगा कि मानो मीनाक्षी जैसी सुन्दर रमणीका अब तकका सारा सौदर्य अरण्यकी चाँदनीके समान व्यर्थ गया। अुसके अुस सौदर्यपर किसीने अुचित ध्यान नही दिया। दीप-शिखाओंसे जल जानेके कारण चिकित्सा करनेके हेतु मेरे कठोर हाथोंके स्पर्शसे अुसका कोमल शरीर कही और भी अधिक घायल न हो जाअे, यह सोचकर अुन भागोंको मैने अपने नेत्रो व ओठोंसे स्पर्श किया। मै अुसकी गोदमे अेक शिशु-सा बन गया। अिस आलिगनके आनन्दका अनुभव हम कितनी देर तक करते रहे, यह तो ज्ञात नही है। अकस्मात बॅगलेपर मोटर-कारके रुकनेकी आवाज आअी। मणि अय्यरको लेकर यह कार आअी थी। मणि अय्यर कारमेसे अुतरे।

मै अुनके स्वागतके लिअे आगे बढा। मैने आँचलके जलने व फिट आनेका सारा समाचार सुनाया। अुन्होंने मुझे शुक्रिया अदा की। अिस घटनाके चार मास बाद ही दिल्लीसे मेरी तब्दीली हुअी। मेरी श्रीमतीजी पुनः दिल्ली न आकर मुझसे मद्रासमें आकर मिली।

दीपावलीका महापर्व पुन. चार दिनमे आनेवाला है। मणि अय्यरसे पत्र मिला कि अुनके पुत्रका नामकरणोत्सव जल्दी होनेवाला है। मैने तुरन्त मणि-दपत्तिके नाम "शुभ कामनाअे" भेजी।

अप्पूने अिस समाचारको कैसे जान लिया, पता नही, पर अुन्होंने अपने पत्रमे लिखा कि दीपावलीकी "शुभ कामनाअें" तुम्हे या मणि अय्यरको दी जाअें ?

* * *

१६.

आहुति

—श्री केतिनीडि नरसिंह राव

आपका जन्म पश्चिम गोदावरी जिलेके नरसापुर नामक स्थानपर हुआ। आजकल आप अेलूरमें पुलिस-विभागमें नौकरी कर रहे हैं।

श्री नरसिंह राव समय बितानेके विचारसे रचनाअें नहीं करते; वरन् अुनका अुद्देश्य अनेक पीढ़ियोंसे समाजमें जो कुरीतियाँ चली आ रही हैं और समाजको खोखला बनाअे जा रही हैं, अुनका प्रक्षालन करना रहा है। पुरानी रूढ़ियोंका सुधार करनेके हेतु अुपयुक्त कथावस्तुओंको ग्रहण कर आपने असंख्य रचनाअें की हैं। नरसिंह रावकी कहानियाँ अिन्हीं भावनाओंसे प्रतिबिम्बित हैं।

आप १९५० से बराबर कहानियाँ लिखते आ रहे हैं। आन्ध्र देशकी प्राय: सभी प्रमुख पत्रिकाओंमें आपकी असंख्य कहानियाँ अेवं अेकांकी प्रकाशित हो चुके हैं। कुछ अुत्तम रचनाअें अन्य भाषाओंमें भी अनूदित हुअी हैं। आपके साहित्यका अत्यन्त अुज्वल भविष्य है।

* * *

आहुति

पूर्ण चन्द्रमाकी शीतल किरणें युवकोंके हृदयोंमें मधुर स्मृतियाँ जगा रही हैं। कहीं दूरपर अमराअियोंके बीच कोयलकी "कुहूँ. . . कुहूँ" ध्वनि मनको लुभा रही है। आकाशमें मेघ-समूह अिधर-अुधर दौड़ रहे हैं। पवित्र गोदावरी नदीकी धारासे ठंडी हवाअें आ रही हैं। बगलके घरसे रेडियोका 'सीलोन-संगीत' अस्पष्ट रूपसे सुनाअी दे रहा है। कहींसे 'रात-रानी' की सुगंध-भरी हवाअें अुसे पागल बना रही हैं। मूर्तिभूत प्रकृति-की शोभा अुस युवतीको भुला रही है। गलियाँ सुनसान हैं। लोगोंका आना-जाना बंद हो गया है। सारा संसार सो रहा है, परन्तु प्रकृतिके सौन्दर्यका अवलोकन करते रहकर भी हृदयमें अपार पीड़ाको दबाअे महलकी छतपर लेटी हुअी सुशीलाकी आँखें खुली हुअी हैं।

वह सोनेका अुपक्रम कर रही है। अुसने आँखें बन्द भी कीं, परन्तु नींद नहीं आअी। अुसके हृदयमें असंख्य कामनाअें हिलोरें मार रही हैं। अुसके हृदय-सागरमें कभी पूरी न होनेवाली कामनाअें आँधियाँ अुठा रही हैं। अैसी स्थितिमें अुसे निद्रा कैसे आअे?

वह विकल होकर रो पड़ी। अुसने आशा की कि अिस रुदनसे अुसे कुछ सीमा तक तृप्ति और शान्ति अवश्य मिलेगी। परन्तु अविरल गतिसे गिरनेवाली अश्रुधारा भी अुसकी कामनाओंको धो न सकी।

भगवान अुससे अिस प्रकार क्यों बदला ले रहा है ? अुसने अैसा कौन-सा अपराध किया था ? अुसके मधुमय जीवनपर अिस प्रकारका वज्र-प्रहार क्यों हुआ है ? अुसे सुकोमल सौन्दर्य प्रदानकर अुसमें विष क्यों घोल दिया ? खिलनेवाली कलीको ही भगवानने क्यों तोड़ फेंका ? बचपनमें ही वैधव्य ! . . . . अबोध अवस्थामे ही अुसका विवाह और अुसके कुछ दिन बाद पतिकी मृत्यु. . . . . ।

अुस समय अुस बालिकाके लिअे विवाह-संस्कार अेक स्वप्न मात्र था . . . . . । अब . . . असहनीय व्यथा ! अपार दुःख ! !

अेक ओर अुमड़नेवाला यौवन, दूसरी ओर पैरोंमें साँकल ! अेक ओर अुन्मत्त बनानेवाला सौन्दर्य ! दूसरी ओर समाजकी लाल-लाल आँखें ! अेक ओर अुमडनेवाली कामनाअे और दूसरी ओर दबानेवाली निराशा। अेक ओर अपार पीड़ा और दूसरी ओर विषभरे अुपहास।

. . . . समाज ! . . . . . अन्धा समाज ! बचपनमें पतिके मरनेपर अबोध लडकीके विवाहका विरोध करनेवाला नीच समाज ! मानवता-शून्य मूर्खोंके बलपर चलनेवाला यह दुष्ट समाज, जो बचपनमे पतिके मरनेपर स्त्रीको दूसरा विवाह करनेसे रोकता है, वही मृत्युका स्वागत करनेवाले वृद्धके विवाहपर स्वीकृतिकी मुहर लगाता है। समाजमे न्याय कहाँ है, नीति कहाॅ है ?

पूरी न होनेवाली आशाओंके परिणामस्वरूप सारे जीवनका अन्त क्या अिसी प्रकार होगा ? काननमे छिटकी हुअी चाॅदनीकी भाँति अुसका यौवन तथा सौन्दर्य क्या यों ही नष्ट होगा ? अुसकी वयकी सभी लड़कियाँ रंग-बिरंगी साड़ियाॅ पहिने, वेणीमे फूल गूँथे, भालपर तिलक लगाअे सुन्दर लग रही है। परन्तु वह सफेद साड़ी पहिने माॅगके सिन्दूरको खोकर अधूरी कामनाओंकी कडवी घूँटें पीती हुअी सारा जीवन जड़ पदार्थकी भाँति बिता रही है। जहाँ अेक ओर अड़ोस-पड़ोसकी लड़कियाॅ अपनेको ठीक तरहसे सजाअे अपने पतिदेवके साथ सिनेमा देखने या सैर-सपाटा करने जा रही हैं, वहाँ अुसे अन्धकारमें धुअेसे भरी रसोअीमें अपने भाग्यको कोसते हुअे दुःखमय जीवन बिताना होगा।

अबोध अवस्थामें सुशीलाका विवाह किया गया। अुस समय अुसकी अवस्था दस वर्षकी थी। विवाहके दूसरे वर्ष ही अुसके पतिका अचानक देहान्त हो गया था। अुस समय सुशीलाने अुसे अेक स्वप्नमात्र समझा। परन्तु जब वह पन्द्रह वर्षकी हुअी और यौवनके आगमनसे अुसमें जो सौन्दर्य-छटा खिली, तब अुसे मालूम हुआ कि अुसका पति मर गया है; वह विधवा है। वह तिलक लगाने, रंगीन साड़ी पहनने, वेणीको फूलोंसे सजानेका अधिकार खो बैठी है और अुसे जीवनभर अतृप्त कामनाओं, आवेशों अेव आशाओंके लिअे ही मरना होगा। जब अुसे यह मालूम हुआ, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। परन्तु अुसके रुदनको सुननेवाला कौन है? अुसकी अपार व्यथाको समझनेवाला सहृदय कौन है?

[२]

सुशीलाने अतिशय आनंदके साथ अपने पिताजीसे कहा—"पिताजी? भाअी आ रहे है?"

पिताने पूछा—"किसने कहा बेटी?"

पत्र दिखाते हुअे सुशीलाने अुत्तर दिया—"किसीने नही कहा, पत्र आया है।"

"जरा पढ़कर सुनाओ तो, क्या लिखा है?"

"त्यौहारके अवसरपर चार दिनकी छट्टी मिली है। आपसे आवश्यक बाते करनेके निमित्त कल ही घरके लिअे रवाना हो रहा हूँ।"

पत्रको पिताजीके हाथमे देकर सुशीला घरके भीतर चली गअी।

चन्द्रम सुशीलाका भाअी है। शहरमे नौकरी कर रहा है। वह सहृदय अेवं सस्कारप्रिय व्यक्ति है। बहिनकी स्थितिपर अुसे दुःख है। बचपनमें जब माता चल बसी, तो अुसने ही बहिनको लाड़-प्यारसे पाला-पोसा था। बहिनके विवाहके समय वह सांसारिक बातोंसे अनभिज्ञ था। जब अुसने संसारको समझा, तब तक बहिनका विवाह और अुसके पतिकी मृत्यु हो चुकी थी। अब अुसके चेहरेको देखकर चन्द्रमका हृदय पिघल अुठता है।

\+ \+ \+ \+

भोजनके अुपरान्त चन्द्रमने अपने पिताजीसे पूछा—"वहिनके सम्बन्धमें आपने क्या सोचा है ? "

"क्या ? सुशीलाका विवाह. . . . . ?" पिताजीने अविश्वास-भरे नेत्रोंसे चन्द्रमसे प्रश्न किया।

"हाँ. . . . . . !"

"क्या तुम पागल तो नही हुअे हो ? "

"नही पिताजी . . . , अभी वह दशा नही आअी ? "

"नही तो विधवाका पुनर्विवाह ? "

"हूँ ! अुसका पति मर गया है। अुसकी अवस्था कितनी है ? कितने वर्ष पतिके साथ गृहस्थी चलानेके बाद वह मर गया है ? दोनोको दांपत्य-जीवनका आनन्द भोगनेका अवसर ही कहा मिला ?"

"यह ठीक है, किन्तु हिन्दू-नारीका विवाह तो अेक ही बार होता है।"

"विवाहसे अनभिज्ञ अबोध अवस्थामे विवाह करना और अुसके पतिके मरनेपर यौवनावस्थामे विधवा कहकर पुनर्विवाह न करना, यह सब जानबूझकर अुसका गला रेतना है। अुसने अपने पतिके साथ सुख ही कहाँ भोगा है ? यह महान द्रोह है। अुसे आँसू पीते देखते रहना हमारे लिअे कहाँ तक अुचित है ? सोचिअे पिताजी, मातृ-विहीन लड़कीको लाड़-प्यारसे हमने पाला है। अुसे समाजके कठिन नियमोंकी बलि देना ठीक नही है।"

"चन्द्रम, हम अपनी अिच्छाके अनुकूल कुछ भी नही कर सकते। हम अेकाकी नही, सामाजिक प्राणी है। समाजके साथ ही हमें चलना चाहिअे। पीढ़ियोसे चले आ रहे संप्रदायोंका हम विरोध नही कर सकते। नीति, नियम व सनातन आचारोंका हमें पालन करना चाहिअे।"

"ये नीति-नियम और अर्थविहीन आचार-व्यवहार कुछ स्वार्थियोंके कल्पित हैं। अिन रूढ़िवादियोंके कठिन आचार रूपी चक्रोंमें दबकर कितनी बाल विधवाअें अतृप्त कामनाओं और आँसुओंसे अपनी प्यासको बुझाती हुअी, चहारदीवारीके मध्यमें, जड़ तुल्य जीवन बिता रही हैं। हूँ ! समाज ! बचपनमें पतिके मरनेपर युवती होनेके बाद नारी विवाह नहीं कर सकती,

परन्तु मृत्युके मुखमे जानेवाला बूढ़ा फिरसे विवाह करे तो समाज अनुमति देता है। पिताजी! मेरे जीवित रहते मेरी प्यारी बहिन निर्जीव जीवन नही बिता सकती। अुसका विवाह हो और वह भी सुखपूर्वक जीवन बिताअे, यही मैं चाहता हूँ।"

"प्राचीन कालसे चले आनेवाले संप्रदायोंका हम विरोध नही कर सकते। आज तक हमारे परिवारकी ओर किसीने भी अुँगली नहीं अुठाअी। आगे अैसा हो, यह मैं सहन नही कर सकता। अुसके भाग्यमे जो लिखा है, अुसे कौन मिटा सकता है?"

"भाग्य और प्रारब्ध हमारे लिअे कल्पित है। अीश्वरकी दृष्टिमें सभी समान है। मेरी सुशील बहिन हल्दी-कुंकुमसे दूर रहकर महिलाओंमें घृणित वैधव्यका जीवन नही बिता सकेगी। अिसमें आप हठ न कीजिअे, अुसका विवाह होने दीजिअे।"

"अैसा कभी नही हो सकता।"

"पिताजी! मेरी बात सुनिअे। अुसका विवाह कीजिअे।" रुँधे हुअे कंठसे चन्द्रमने विनती की।

"नही, मेरे जीते-जी यह कभी संभव नही होगा।"

"नही-नही, अुसका विवाह होना ही चाहिअे। मेरे जीवित रहते वह विधवा बनकर कभी नही रह सकती। में अुसका विवाह अवश्य ही कराअूँगा।"

"चन्द्रम!" बूढ़ेने ललकारा!

"पिताजी, क्षमा कीजिअे। अिस विषयमे मैं आपका विरोध कर रहा हूँ।" चन्द्रमने विनयपूर्वक अुत्तर दिया।

"यदि तुम्हारी अिच्छा यही है, तो समझो हमारे परिवारका सर्वनाश हो गया है।"

"बहिनके अन्धकारमय जीवनमें मधुर प्रभात लानेके लिअे, सारे परिवारका सर्वनाश ही क्यों न हो जाअे—अुसके लिअे, अुसके आनन्दके लिअे, अुसके मधुर सुन्दर भविष्यके लिअे—मैं अपने सुख, आनन्द अेवं सुन्दर भविष्यका भी त्याग करनेके लिअे तैयार हूँ।"

"यदि अैसा ही होगा तो तुम्हें मैं अपना पुत्र नहीं समझूँगा। यह सब मेरी पसीनेकी कमाअी है। अिसपर तुम्हारा कोअी अधिकार नहीं रहेगा। मैं अपनी सारी भूमि और सम्पत्ति भगवानके नाम लिखकर काशी या रामेश्वरम् चला जाअूँगा।"

"आपकी भूमि और सम्पत्तिके लोभमे पड़कर मैं अपने आदर्शोंकी आहुति नहीं दे सकता। चाहे समाज मेरा कितना ही विरोध क्यों न करे, मैं सुशीलाका विवाह निश्चय ही कराअूँगा। अुसके जीवनमें वसंतोदय, अुसके अंधकारमय जीवनमें हजारों बत्तियोंकी रोशनी अेक साथ हो जाअे, अुसके बाद मेरी स्थिति कुछ भी हो जाअे, मुझे चिन्ता नहीं। परन्तु आप यह बात कभी न भूलें कि अबोध लड़कीका निर्दयतापूर्वक गला रेतकर अपने रक्तसिक्त हाथोंसे नैवेद्य रूपमें समर्पित आपकी सम्पत्तिको भगवान भी प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार नही कर सकेंगे।" यह कहकर चन्द्रम वहाँसे चला गया। अुस वृद्धके कण्ठसे "हूँ" की भयंकर ध्वनि निकली। अुस ध्वनिसे मानो सहस्रों सर्पोंका विष बाहर आ गया हो। वह किसकी बलि लेनेवाला है? किसे निर्दयतापूर्वक जला डालेगा? कौन जाने?

[३]

सुशीलाके हृदयमें वैधव्यका ज्वालामुखी धधक रहा है। अुसे अपना जीवन अैसा लगता है मानो लाखों काल-सर्प केंचुली छोड़ फुफकार रहे हों। किसी भी क्षणमें यदि वह अुनसे बचनेका यत्न करेगी तो अुनसे डसे जानेकी संभावना है। तब अुसकी क्या दशा होगी? अैसी स्थितिमें अुसे अपनी जीवन-यात्राको समाप्त कर देना ही अुचित है।

अग्नि-पर्वतोंके आक्रमणोंसे वह बच नहीं सकेगी। लाखों काल-सर्पोंका वह अेक साथ अंत नहीं कर सकेगी। तो भी अुसे बचनेका मार्ग. . . मिल सकता है। वह है अपनी छाया बनकर . . . सदा-सर्वदा असके सुख-दु:खोंको अपना सुख-दु:ख मानकर अुसके लिअे मर-मिटनेको कमर कसे हुअे व्यक्तिकी आड़ लेकर। परन्तु अुनको ये अुपद्रव छोड़ सकेंगे? अपने स्वार्थके लिअे दूसरे व्यक्तिका अन्त क्यों करे? वही अुसके लिअे आहुति बन जाअे. . . .तो?

सुशीलाका सिर चकरा रहा है। अुसके मस्तिष्कमें अनेक प्रकारके विचार अुठ रहे हैं। आज तक वह समाजसे छिपकर अव्यक्त रूपमें रोती रही। राखमे छिपी लकड़ीकी भाँति अुसका हृदय भीतर-ही-भीतर जलकर भस्म हो गया है।

अुसे लेकर भाअी और पिताजीके बीच यह वाद-विवाद और प्रतिज्ञाअें क्यों? बचपनमें ही पतिके मरनेसे पुर्नविवाह क्यो नहीं किया जा सकता है? पिताजी क्यों नही मानते?

मेरे जीवनका तो सर्वनाश हो गया है। मै अपने प्रारब्धका अनुभव कर रही हूँ।....... बीचमे भाअीने यह तूफान क्यों खड़ा कर दिया? क्या यह सब भाअीका दोष है? सहोदर अपनी बहिनको संघ-दुराचारोंके लिअे आहुति होते कैसे देख सकेगा? यह भाअीका अपराध नही है। यह पिताजीका दोष है क्या?... नही तो और क्या है?

अिन सबका कारण मै हूँ। अितने वाद-विवादोंका कारण भी मै ही हूँ। मेरे लिअे सारे परिवारका सर्वनाश होता जा रहा है। मेरे लिअे भाअीके जीवनके प्रति अन्याय हो रहा है। मेरे आनन्दके लिअे, भाअीको प्राप्त होनेवाली सारी सम्पत्ति भगवानको समर्पित हो रही है। मेरे सुखके लिअे मैं और भाअी दोनों अपने पिताजीसे दूर होते जा रहे हैं। परिवारके सर्वनाशका कारणभूत—मै विवाह करके भी क्या आनन्द प्राप्त कर सकूंगी?

यदि मै ही परिवार तथा कुटिल संसारसे दूर हो जाअूं तो? अिसका रास्ता.... आत्महत्या—कैसा सरल वाक्य है! अिसमे कैसी भयंकरता छिपी है! अिस वाक्यमें कैसी निराशा, और क्रूरता छिपी है! अिसके बिना—रास्ता......? जीवनसे पराजित लोगोंका अत्युत्तम मार्ग आत्महत्या ही है!

[४]

अेक दिन सुशीलाके पिता पुराणका पाठ कर रहे थे। अुसी समय डाकिअेने अेक पत्र लाकर दिया। यह सब सुशीला देखती रही। अुसके पिताजीने जोरसे पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया:—

" पूज्य पिताजी !

सविनय नमस्कार !

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है, आप और बहिन दोनों सुखी होंगे। मैंने अपनी बहिनका विवाह कार्यालयके अपने साथी कार्यकर्ता रामरावजीके साथ निश्चित किया है। रामराव बहुत सज्जन, आदर्शवादी अेवं सच्चरित्र हैं। अुनके लिअे हमारी सुशीला योग्य पत्नी सिद्ध होगी।

आप ही हम दोनोंके माता-पिता हैं। बहिनका सुख ही हमारा सुख है। मैं दो दिनके भीतर ही यहाँसे रवाना होनेवाला हूँ। शीघ्र ही अेक शुभ मुहूर्त देखकर अुसे मांगल्य प्रदान करनेकी प्रार्थना करता हूँ।"

आपका विनम्र पुत्र,

चन्द्रम

पत्रको पढ़कर वृद्धकी आँखें लाल हो गअीं। अुनकी रौद्र मूर्ति देखकर द्वारकी आड़में खड़ी सुशीला काँप अुठी। चन्द्रमका कैसा साहस है! सुशीलाके विवाहका निश्चय करनेवाला यह कौन है? अुसके विवाहमें मैं हाथ बटाअूँ? बड़ा समाज-सुधारक निकला है! मेरी सम्पत्तिसे अुसे अेक कौड़ी भी नहीं मिल सकेगी।

सुशीला अपने पिताके क्रोधको देखकर काँप अुठी और फूट-फूटकर रोने लगी। अुसके सुन्दर नीले नेत्रोंसे निकले हुअे आँसुओंकी धारा अुसके गुलाब जैसे कोमल कपोलोंपरसे होकर बहने लगी। अुसके नीले केश अुसके कमल जैसे मुख-मंडलपर फैले हुअे अैसे दिखाअी दे रहे थे मानो शोकमें तप्त देवीने मूर्त रूप धारण कर लिया हो। अुसके हृदयमें अुठनेवाले भयंकर तूफानोंके संक्षोभसे अुसका शरीर हिल अुठा। अुसकी अंतरात्मा मानो अुससे कहने लगी—"हे अभागिनी, तेरे ललाटमें सुख नहीं लिखा है। तेरे भाग्यमें आनन्द ही कहाँ लिखा है? तेरे कारण सारे परिवारका नाश हो रहा है। भले ही तेरा विवाह भी हो जाअे, परन्तु तेरे परिवारके अुजड़ जानेसे तुझे सुख ही कहाँ प्राप्त होगा? यदि तू परिवारका भला चाहती है, तो तेरा मरना ही अुचित है।" वह पागल होकर हँसने लगी। अुसकी हँसीका रहस्य वही जाने।

दो दिन बीत गअे। तीसरे दिन सबेरे सुशीलके पिताजीने देखा कि घरका सारा वातावरण सुनसान है। सारा सामान बिखरा पड़ा है। घरमें झाड़ू तक नहीं लगी है।

वृद्धने पुकारा--"बेटी, सुशीला!" अिस बार भी अुसे कोअी अुत्तर नहीं मिला। कमरेके पास पहुँचकर देखा, दरवाजेकी कुंडी लगी हुअी है। अुसने सोचा कि शायद सो रही है। जगानेके निमित्त जोरसे दरवाजा खटखटाया। कोअी अुत्तर नहीं मिला। वृद्ध घबरा अुठा और अुसने दरवाजेपर आघात किया। दरवाजेके दोनों किवाड़ खुल गअे। वृद्धका कलेजा काँप अुठा। अुसकी आँखें डबडबा आअीं।

सामने वृद्धने अपनी लड़कीको जड़ पदार्थकी भाँति फाँसीपर लटका हुआ देखा। "बेटी! बेटी!!"--पुकारते हुअे वृद्ध अेक पहाड़की भाँति जमीनपर गिर पड़ा।

अुसी समय शहरसे लौटा चन्द्रम अिस दृश्यको देखकर स्तंभित रह गया। अुसने भी फाँसीपर लटकी हुअी अपनी बहिनकी लाशको देखा और देखा सिर पीटकर रोते हुअे पिताको। अुस भयंकर दृश्यको देखकर चन्द्रमका हृदय पिघल अुठा। नसें तन गअीं, शरीर काँपने लगा।

"कैसा साहस किया सुशीलाने?" यह कहकर वह जोरसे बच्चेकी तरह रो पड़ा।

और "पिताजी! यही आपकी कुल प्रतिष्ठा है?" यह कहकर-- बहिनकी निर्जीव लाशके पास जाकर चन्द्रम अुसके दोनों पैर अपनी आँखोंपर रखकर जोरसे रो अुठा।

* * *

१७.

अतृप्त कामना

—श्री 'हितश्री'

अुदीयमान युवक कलाकारोंमें आपका अूँचा स्थान है। आप कालेजमें प्राध्यापक हैं। 'हितश्री' आपका अुपनाम है। आन्ध्रके जातीय जीवनका समग्र परिशीलनकर अुसकी खूबियोंको अपनी कहानियोंमें लानेका अच्छा प्रयत्न कर रहे हैं। अनेक कहानी-प्रतियोगिताओंमें आपको पुरस्कार मिले हैं।.

आप कम लिखते हैं, पर सुन्दर लिखते हैं।

* * *

अतृप्त कामना

चहार दीवारीका फाटक पार करके बंगलेकी सीढ़ियोंपर चढ़ती हुअी अुमाने मन-ही-मन रमाके सौभाग्यका कम-से-कम सौ बार अभिनन्दन किया। पधारी हुअी महिलाको देखकर विलायती कुत्ता दुम दबाकर घरके अन्दर भागने लगा और भागते समय पीछेकी ओर देखकर "भौं-भौं" करने लगा। धरतीपर बैठा हुआ, अन्यमनस्क होकर आकाशकी तरफ देखनेवाला बूढ़ा नौकर रामय्या चौंककर अुमाकी ओर दृष्टि दौड़ाते हुअे कुत्तेको डाँटनेके अुद्देश्यसे "मोती" कहकर जोरसें चिल्लाया। पच्चीस वर्षीय सुन्दर महिलाने सिंहद्वारसे पर्दा हटाकर बाहरकी ओर झाँककर देखा, और प्रश्न किया--"अुमा, तुम आ गअीं ?"

अुमाने हँसते हुअे कहा--"तुमने तो बहुत ही अच्छा कुत्ता पाल रखा है ?"

रमाने पूछा--"क्यों ?"

अुमा--"कुछ नहीं, वह बहुत सुन्दर है !"

रमा--"हाल ही में खरीदा है। अिसके खरीदनेके बाद तुम्हारा यहाँ आना, शायद पहली बार ही हुआ है ?"

अुमा--"हाँ, तो अिसे रामय्याने खरीदा है न ?"

रमा--"तो और कौन खरीद सकता था ?"

रामय्याने शंका-भरी दृष्टिसे रमाकी ओर देखा।

रमा—"अैसा कहनेका अभिप्राय ?"

अुमाने मुस्कराकर कहा—"रामय्याका ही चुनाव है न? अिसीलिअे तो वह घरके भीतर साहसपूर्वक दौड़ गया।"

यह सुन रामय्याको क्रोध हो आया। अुमाके कुछ कहने और रामय्याके क्रुद्ध होनेका यह सौवाँ अवसर है।

रामय्याने कहा—"क्या आपको देखकर वह दौड़ रहा है?"

अुमाने अुत्तर दिया—"नहीं, मेरा समाचार देने वह अपनी माँ (मालकिन) के पास जा रहा है।"

रामय्याने दृढ़तापूर्वक कहा—"आप चाहे विश्वास करें या न करें, शत-प्रति-शत बात सच है।"

अुमा—"ठीक तो है रामय्या! तुमसे मुझे झगडा क्यों मोल लेना है? तुम्हारा चुनाव तो अच्छा है। परन्तु मुझे अेक सन्देह है।" प्रसंगको बदलनेके अभिप्रायसे रमाने कहा—"जाने भी तो दो। भीतर आकर बैठ जाओ।" अुन बातोंको अनसुनी करते हुअे अुमाने प्रश्न किया—"घरमें किसीके न रहनेपर यदि कोअी चोर आ जाता है, तो यह टामी मालकिनको बुलाने नही दौड़ेगा न?"

रामय्या—"आप विचित्र बाते करती है?"

अुमा—"मान लो कि मै चोर नही हूँ, यह बात कुत्तेको कैसे मालूम होगी?"

रामय्या—"आपकी वेष-भूषासे मालूम नही होगा क्या?" हँसीको रोकते हुअे अुमाने कहा—"मालूम हो जाअेगा क्या?"

रामय्या—"चकाचौंध करनेवाली अिस हीरकमालाको देखकर हमारे राजा कुत्तेने समझ लिया कि घरमे कौन आ गअी है?" अुमा जोरसे हँस पड़ी। रमाने भी अुसकी मालाकी ओर देखकर हँसी-मे-हँसी मिला दी।

अुमा—"तब तो तुम्हारा कुत्ता धोखा खा गया। यह तो नकली हीरकमाला है। चोर और बाबू लोग सभी अिसे खरीद सकते है।" यह कहकर अुमा रमाके साथ भीतर चली गअी।

अुमाकी ओर रामय्या चकित दृष्टिसे देखकर मन-ही-मन बड़बड़ाने लगा—"कितना सुन्दर बोलना जानती है?" यह कहता हुआ धरतीपर बैठकर वह किन्हीं चिताओंमे निमग्न हो गया। अुमाकी हीरकमाला नकली है, यह रामय्याके लिअे आश्चर्यकी बात थी, फिर भी वह शीघ्र अिसे भूल गया, परन्तु रमा नहीं भूल सकी। अुसने अनेक मुँहोसे नकली हीरकोंके बारेमे सुना है, परन्तु आजतक अुसे यह नही मालूम था कि नकली हीरकमाला असलीके जैसा आदर पा सकती है। रमाके लिअे यह तमाशा ही मालूम हुआ और वह अुमाकी मालाकी ओर विस्मय तथा कुतूहलभरी दृष्टिसे देखती रही।

अुमाके भीतर चले जानेपर रमाने रामय्यासे कहा—"देखा रामय्या! अुमाकी माला नकली है। बहुत विचित्र है न?"

रामय्याने अुत्तर दिया—"विचित्र क्या है? आजकल सभी विचित्र ही है।"

रमा—"दोनोंका अन्तर मालूम होनेपर ही अुसका वास्तविक मूल्य है।"

"क्यों नही मालूम? आप जैसी महिलाओंके पहननेपर वे असली हीरकमाला है और गरीबोंके पहननेसे वे नकली हैं।" रामय्याने मानो कोअी चालाकीकी बात कही हो। अुसे हँसी आअी और वह हँस पड़ा। रमा थोड़ी देर तक चुप रही, फिर कहने लगी—"यदि पैसेवाली भी अिमिटेशन नेकलेस पहनने लगें तब?"

अब मानो रामय्या फँस गया हो। मुँह बनाकर अुसने अभिनय-पूर्वक कहा—"पैसेवाली क्यों पहनेगी? यदि कोअी कंजूस पहना करें तो क्या करें?"

"मेरी जैसी स्त्रियाँ पहनें तो?"

"आप जैसी स्त्रियाँ अुनकी ओर दृष्टिपात तक नही करेंगी।"

रमाने कहा--"तुम्हारे बाबूजीसे परिहास करेंगे।"

अिस बार रामय्याने अुसके मुखकी भावनाओंका अध्ययन करते हुअे हँसकर कहा--"अिस बुढ़वाको जैसे नचा रही हो, वैसे क्या बाबूजीको नचा सकोगी?" रामय्या अपने-आपमें हँस रहा था। रमा थोडी देरतक अुसकी ओर देखकर हँसती हुअी भीतर चली गअी।

बिजिनेस मैग्नेट, रामकृष्णकी सुपरिचित कार दूकानके ·· ने रुकते ही, सेठ राजारामने आगे बढ़कर रामकृष्ण और रमा देवीका स्वागत किया। रूमालसे मुँह पोंछते हुअे रामकृष्णने कहा--"हीरकमाला दिखलाअिअे?" आँखोंको चकाचौंध करनेवाली हीरकमालाअे तथा अँगूठियाँ शो केसोंमे दिखाअी दे रही थीं। रमाने अपनी माला जैसी माला दिखानेकी अिच्छा प्रकट की। सेठने टोका कि यह नकली हीरकमाला है। रमाने रामकृष्णके चेहरेकी भावनाओंको भाँप लिया। अपनी भूलको सुधारते हुअे कहा--"यह नमूना अच्छा है। अिसी प्रकारकी हीरकमाला चाहिअे।" सेठजीने अुसी नमूनेकी हीरकमाला ला दी, तो रामकृष्णने अुसे स्वीकार किया। रमाको भी वह पसन्द आअी। सेठजीने अुसका दाम दस सहस्र रुपये बताया। रमाने असली और नकली मालाओंका अन्तर जाननेकी अिच्छा प्रकट की। सेठ लेन्स रखकर दोनोंका अन्तर दिखाने जा रहे थे, किन्तु रामकृष्णने बताया कि "आपकी बातपर हमे विश्वास है।" रमाने कहा--"दोनों खरीदें तो...? तो.....?" रामकृष्ण आश्चर्य-चकित हुअे। रमाकी ओर देखते हुअे अुन्होंने कहा--"वह क्यों? वह तो नकली है।"

रमाको और कुछ कहनेका साहस नही हुआ। हँसकर चुप रह गअी। रामकृष्णने लम्बी साँस ली, मानो अुनकी प्रतिष्ठा बच गअी।

रमाने मुस्कुराते हुअे कहा--"हीरकमालाके खरीदनेपर अेक नकली हीरकमाला भी बिना मूल्यके देनी होगी, सेठजी!"

"अह ह......आप जैसे लोग ही अैसा पूछें तो......"

"हि.....हि.....हि....." रामकृष्णने जोरसे हँस दिया।

सेठजीने कहा—"देनेपर आप क्या करेंगी?"

रामकृष्णकी ओर देखते हुअे रमाने कहा—"नौकरानियोको दे सकते है न?"

"नौ॰ नियोको देनेकी आवश्यकता ही क्या है?" कहते हुअे सेटजीने जोरसे [illegible]।

[illegible] -हाँ मिलाते हुअे समर्थन किया—"अच्छा कहा, सेठजी [illegible]

बिल [illegible] अुपरान्त कारमे पार्श्वमे बैठी हुअी रमाकी ओर देखते हुअे रामकृष्णने क[illegible]—"मुझे डर था, कही तुम नकली हीरकमालाको भी न खरीद लो।"

"क्या आ[illegible] समझा कि मै अवश्य अुसे खरीद लूँगी?"

रामकृ[illegible] [illegible]ते हुअे कहा—"छि.-छिः, कदापि नही।"

\+ \+ \+

[illegible] बजे चौधियानेवाली बिजलीके प्रकाशमें अुमा हीरकमालाको परख [illegible] और रमा अुसके सामनेवाली मेजपर बैठकर नकली मालाकी ओर अे[illegible] टक[illegible]टसे देख रही है। अुमाने जाँच पूरी करके मालाको मेजपर रख दिया। रमाने पूछा—"कैसी है?"

अुमा—"पूछती ही क्या हो? बहुत सुन्दर है।"

रमा—"तुम्हारी नकली हीरकमालामें और अिसमें स्थूल रूपसे कोअी अन्तर नही है?"

अुमा—"स्थूल रूपसे क्या? अच्छे पारखी भी अिसके भेदको पहचान नहीं पाअेंगे। साधारण जनोंकी बात ही क्या?"

अुमा अपनी नकली हीरकमालाको रमाकी असली हीरकमालाके पास मेजपर रखकर जाँच करनेमें तल्लीन हो गअी।

रमा—"मै भी अिसी तरहकी माला खरीदूँ तो क्या ही अच्छा हो?"

अुमा—"तुमको खरीदनेकी आवश्यकता ही क्या है? अिस प्रकारकी नकली मालाओंको मेरी जैसी स्त्रियोंको खरीदना है। तुम तो जमीदारकी पत्नी हो न? तुम्हारे खरीदनेसे लोग हँसेंगे।"

रमा—"जब अिन दोनोंके सूक्ष्म भेदकी कोअी [illegible] ही नहीं, तब दोनों समान हैं न?"

अुमा—"हम अिसलिअे पहनती है कि [illegible] अिसे हीरे अेवं जवाहिरातकी माला समझें।"

रमाने अुमाकी बातोंमें अेक प्रकारकी अतृप्ति [illegible]। और पूछा—"मालूम होता है, तुम्हारा मन हीरे और जवाहिरा[illegible]की माला चाहता है। है न?"

अुमा—"मनका चाहना क्या है? अुसके लि[illegible] [illegible]अी रोक तो है नही, परन्तु 'पैसेमें परमातमा है' और 'धनमूल[illegible]' लोकोक्ति ही है। धनके बिना कामनाओके होनेमात्रसे क्या होग[illegible]

रमा—"धनके रहनेपर क्या सभी कामनाअें पूरी [illegible]

"धनसे सम्बन्धित सभी होंगी ही।"—अुमाने अु[illegible] [illegible]—"पर कुछ लोग संपत्तिके रहते हुअे भी तृप्ति नहीं पाते। सदा अुनकी कामनाअें अतृप्त ही रह जाती हैं। कारण क्या है?"

रमाका प्रश्न अुमाके लिअे आश्चर्य पैदा करने लगा। तुरन्त अुसने पूछा—"किसके बारेमें कहती हो?"

"राज्यमके बारेमें। वह है न गजटेड अफसरकी पत्नी, अुसे भूमि-सम्पदा सब कुछ है। कल-परसों अुसने नकली जवाहिरातकी माला खरीदी है।"

"अिसमें तुम्हें आश्चर्य करनेकी कौन-सी बात है ? अुसे या तो अुसकी कंजूसी कहें अथवा विचित्र मनस्तत्व ।"

रमाने सकुचाते हुअे कहा—"चारों ओरका समाज दर्पण जैसा है। राज्यम बिलकुल नही देखती कि लोग अुसके बारेमें क्या सोचेंगे ? वह केवल धनका संग्रह करना जानती है।"

अुमा प्रसंग बदलनेके अुद्देश्यसे कह ही रही थी कि "जाने भी तो दो . . ." किन्तु अुसी क्षण बिजलीका प्रकाश अन्धकारमें तैरने लगा। काँपती हुअी अुमासे रमाने कहा—"बिजली फेल हो गअी है।"

अैसे ही दो मिनट बीत गअे।

अुमाने हँसते हुअे कहा—"चोरोंको दिनमें डर लगता है तो नकली हीरकमालाअें रातसे डरती हैं।" रमाने हाँ-में-हाँ मिलाअी। अिसी क्षण बाहर किसीके खाँसनेकी आवाज सुनाअी दी। अुमाने कहा—"वही तुम्हारा बूढ़ा नौकर लौटा मालूम होता है ?" रमाने अुत्तर दिया—"प्रति दिन शामको मोतीको बाहर ले जानेके लिअे मैंने अुससे कह रखा है।"

अिसके पूर्व कि रमाका अुत्तर पूर्ण हो, मोती "कुँछ्-कुँछ्" करता हुआ अुस अन्धकारमें अपनी मालकिनको पहचाननेके लिअे अुमाकी कुर्सीपर कूद पड़ा। चौककर अुमाने अुस पिल्लेको मेजपर फेंक दिया। अिस झोंकेसे मोती मेजपर रखी हुअी दोनों मालाओं सहित रमाकी गोदमें जा पडा। रमाने मोतीकी पीठपर हाथ फेरते हुअे अुसे मेजपर रख दिया। रमाकी गोदमेंसे अपनी अुज्वल कान्तिको फैलाते हुअे अन्धकारमे चोरको पकडनेके लिअे जलाअे जानेवाले टार्चकी तरह हीरकमाला प्रकाशमान है। बगलमें ही अपने भेदके प्रकट होनेसे सकुचानेवाले चोरकी भाँति नकली हीरकमाला टिमटिमा रही है। रमाके हृदयमे अनिर्वचनीय अभिमान भरा था कि वह अपनी भूलको मानकर असहाय अपराधिनीकी तरह चारों ओर देखनेवालीको अपनी अुदारताके कारण मानो क्षमा-दान कर रही हो। अुसी समय बत्तियाँ कमरेको प्रकाशित करने लगी। अुमाने खड़ी होकर कहा—"अब मैं जाअूँगी।" रमाने अुसके

हाथमें माला दी। मालाको देते समय रमाको अुमाके हाथोंका स्पर्श हुआ। अुसने आश्चर्यके साथ पूछा––"शरीर तवेकी तरह जल रहा है, क्या बुखार आ गया है?"

"अुहूँ, कुछ नही।" अुमा सकुचाती हुअी बोली।

रमा––"काँपती क्यो हो? डाक्टरको बुलाअूँ?"

"रामय्या! ड्राअिवरको जल्दी कार लानेको कहो। अुमा जाना चाहती है।" रमाने आतुरतासे कहा।

माला पहनकर अुमा जानेको तैयार हो गअी। अुसी क्षण फिर बत्तियाँ बुझ गअी। अपने गलेमे चकाचौध करनेवाली कान्तिपूर्ण मालाको देख आश्चर्यके साथ अुमा वापस मुड़ना ही चाहती थी कि अचानक बत्तियाँ जल अुठी।

रमाने अिसपर ध्यान नही दिया।

अुमाने संकोचपूर्ण भावसे कहा––"रमा! हमारी मालाअें ठीक आ गअी है न?"

"पगली, क्यों नहीं आअी होंगी?"

अुमाने फिर जोर देते हुअे कहा––"बदल तो नहीं गअीं?"

"बदलेगी ही क्यों? यदि बदल भी गअी हों, तो अिसमें कौन लाखों रुपये लगे है?"

अुमाने बनावटी स्वरसे कहा––"ओह! कैसी अुदासीनता है? मेरे पास कभी बदलेंगी नहीं, यह समझकर ही तुम अितने साहसके साथ कह रही हो?"

रमाने शीघ्रता करते हुअे कहा—"जाने भी दो। ड्राअिवर आ रहा है, चलो!"

आगे चलनेवाली अुमाने पीछे घूमकर स्विच दबाया। बत्ती बुझ गअी। वह हँसती रही, अुसकी हँसीके साथ फिर बत्ती जल अठी। अुसने कहा—"मैंने भूल की। हीरकमालाको लेनेकी बहुत बड़ी मूर्खता की।......." और कुछ बकने जा रही थी कि रमाने बात काटकर कहा—"तुम्हें बद्धिमती ही किसने समझा है?" मानो अुमाके मुँहपर चपत पड़ी। और वह रमाकी ओर अेकटक देखती ही रही।

* * *